Jaldbaazi Ke Nuqsanat (Hindi)

जल्द बाज़ी के नुक़्सानात

- जल्द बाज़ी की हक़ीक़त
- शैतान और इन्सान की जंग
- वोह काम जिन में जल्द बाज़ी की जाती है
- बाबा दिल देखता है
- एक उस्ताज़ की इन्फ़िरादी कोशिश
- मैं दा'वते इस्लामी से क्यूं मु-तअस्सिर हुवा ?
- काम करने से पहले सोच लीजिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

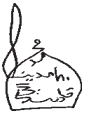

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(जल्द बाज़ी के नुक़्सानात)

येह किताब (**जल्द बाज़ी के नुक़्सानात**)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

Mobile: 09374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

''اَلْعَجَلَةُ مِنَ الشَّيْطٰن'' या'नी जल्द बाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से है''

जल्द बाज़ी के नुक़्सानात

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

नाम किताब : जल्द बाज़ी के नुक़्सानात
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)
नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना** अह़मदआबाद

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : **15** जुल हि़ज्जतुल ह़राम **1432** हि. ह़वाला : **173**

الحمد للّٰہ رب العٰلمین والصلوٰۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلٰی الہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"जल्द बाज़ी के नुक़्सानात"

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लति़यों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

12-11-2011

E-mail : ilmia@dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

"**तह़म्मुल व बुर्द बारी**" के बारह हु़रूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "**12 निय्यतें**"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : **نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ** ० मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो म-दनी फूल : «1» बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
«2» जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

{1} हर बार ह़म्द व **{2}** सलात और **{3}** तअ़व्वुज़ व **{4}** तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। **{5}** ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और **{6}** क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा **{7}** कुरआनी आयात और **{8}** अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा **{9}** जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और **{10}** जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढूंगा। **{11}** दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। **{12}** किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على إحسانه و بفضل رسوله صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ **सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो**

ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर
मस्जिद के पास दुरूद पढ़िये	10	रसूले अकरम صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जैसी नमाज़	28
जल्द बाज़ शिकारी	10	मैं इस त़रह़ नमाज़ पढ़ता हूं	28
जल्द बाज़ी की ह़क़ीक़त	12	नमाज़े आ'ला ह़ज़रत	29
जल्द बाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से है	12	इत्मीनान से नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत	30
इन्सान पर जल्द बाज़ी के वक़्त ह़म्ला करो	13	तक्बीरे ऊला पाने में जल्द बाज़ी	31
अ़-मली क़दम उठाने से पहले ग़ौरो फ़िक्र	13	दौड़ते हुए न आओ	31
शैत़ान और इन्सान की जंग	14	आ'ज़ाए वुज़ू का पानी मस्जिद में टपकाना	32
काम के दो मरह़ले	16	लिह़ाफ़ पर वुज़ू कर लिया	32
जल्द बाज़ों की अक़्साम	16	इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते हुए जल्द बाज़ी	33
मोमिन ठहर ठहर कर काम करने वाला होता है	17	पेशानी के बाल शैत़ान के हाथ में	33
अपना ह़िस्सा गवां बैठेंगे	17	गधे जैसा सर	33
जल्द बाज़ ख़त़ा खाता है	18	इ़ब्रत नाक ह़िकायत	34
जल्द बाज़ी के नुक़्सानात	18	मुक़्तदी अपने इमाम की पैरवी करे	34
फ़ोह़ूश फ़िल्में देखने वाले की तौबा	19	तिलावते क़ुरआन में जल्द बाज़ी	35
क्या हम जल्द बाज़ हैं ?	21	क़ुरआने पाक ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये	36
वोह 53 काम जिन में जल्द बाज़ी की जाती है	21	ठहर ठहर कर पढ़ना अफ़्ज़ल है	37
वुज़ू करने में जल्द बाज़ी	23	ग़ौरो फ़िक्र करना ज़ियादा मह़बूब है	37
वुज़ू पूरा करो	23	तीन दिन से कम में ख़त्मे क़ुरआन करना	37
बिला वुज़ू ही पढ़ियेगा	24	रोज़ा इफ़्त़ार करने में जल्द बाज़ी	38
नमाज़ अदा करने में जल्द बाज़ी	25	तरावीह़ में जल्द बाज़ी	39
बुरे ख़ातिमे की वईद	26	सदरुश्शरीअ़ह की कुढ़न	41
कव्वे की त़रह़ ठोंग न मारो	26	इमाम को लुक़्मा देने में जल्द बाज़ी	41
दो बार नमाज़ पढ़वाई	27	ह़ाफ़िज़ साह़िब को परेशान करना	42

उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर
हिफ़्ज़ जतलाने की निय्यत	43	पुर असरार बूढ़ा	64
ग़लत लुक़्मा देने से नमाज़ टूट जाती है	43	फ़क़ीर दुआ करेगा	65
क़ुरबानी करने में जल्द बाज़ी	43	तकिये के नीचे 500 रुपै	67
क़ुरबानी के दो म-दनी फूल	44	दिल उछल कर हल्क़ में आ गया	69
जानवर की खाल उतारने में जल्द बाज़ी	45	भीड़ में जल्द बाज़ी	71
ह़ज में जल्द बाज़ी	46	मुसल्मान को तक्लीफ़ देना कैसा ?	72
क़बूलिय्यते दुआ में जल्द बाज़ी	47	भीड़ हो तो रमल न करे	73
क़बूलिय्यते दुआ में ताख़ीर का एक सबब	48	तेज़ दौड़ने में ख़ूबी नहीं	73
हिकायत	48	भगदड़ में भागने में जल्द बाज़ी	74
बद दुआ में जल्द बाज़ी	49	शो'बा अपनाने में जल्द बाज़ी	75
बद दुआ जल्द क़बूल न होना हमारे लिये रह़मत है	50	वालिद साहिब की इन्फ़िरादी कोशिश	75
जल्दी से बद दुआ कर देता	51	एक उस्ताज़ की इन्फ़िरादी कोशिश	77
दुरूदे पाक लिखने पढ़ने में जल्द बाज़ी	52	किराए का मकान लेने में जल्द बाज़ी	78
"صَلعَم" लिखना महरूमों का काम है	53	घर में मुलाज़िम रखने में जल्द बाज़ी	79
"صَلعَم" के मूजिद का हाथ काटा गया	53	किसी को गुनहगार क़रार देने में जल्द बाज़ी	80
दुरूदे पाक के अल्फ़ाज़ चबाने से भी बचिये	54	सुबूत ज़रूरी है	80
ठहर ठहर कर उ़म्दगी से पढ़ो	54	पहले सोच लीजिये	81
वज़ीफ़े के नतीजे की त़लब में जल्द बाज़ी	55	फ़ैसला करने में जल्द बाज़ी	82
दुन्या की त़लब में जल्द बाज़ी	56	ख़रीद व फ़रोख़्त में जल्द बाज़ी	83
रिश्ता त़ै करने में जल्द बाज़ी	58	झगड़ा मोल लेने में जल्द बाज़ी	83
इद्दत वाली को पैग़ामे निकाह़ देने में जल्द बाज़ी	59	ज़ालिम की मदद	83
इलाज करवाने में जल्द बाज़ी	60	शर-ई मस्अले का जवाब देने में जल्द बाज़ी	84
मु-तअस्सिर होने में जल्द बाज़ी	61	छोटी सी शीशी	84
बाबा दिल देखता है	62	इज़ाले की हिकायत	86

उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर
ज़बान को क़ैद कर लो	87	बिल वग़ैरा जम्अ़ करवाने में जल्द बाज़ी	106
बच्चों के झगड़े में जल्द बाज़ी	87	ग़मनाक ख़बर सुनाने में जल्द बाज़ी	107
लज़्ज़ते गुनाह के हुसूल में जल्द बाज़ी	88	समझाने में जल्द बाज़ी	108
ना पसन्दीदा लोग	88	शिक्वा करने में जल्द बाज़ी	109
गुस्सा नाफ़िज़ करने में जल्द बाज़ी	90	मैं रिज़ाए इलाही पर राज़ी हूं	109
कौन अच्छा है ?	91	इस पर मेरी रहमत है	109
तहरीक से रिश्ता तोड़ने में जल्द बाज़ी	91	मौत की त़लब में जल्द बाज़ी (ख़ुदकुशी)	111
गिर गिर कर संभल गया	92	आग में अ़ज़ाब	112
बातचीत करने में जल्द बाज़ी	94	मुत़ा-लआ़ करने में जल्द बाज़ी	112
जाहिल कौन ?	94	दीनी मुत़ा-लआ़ करने के 18 म-दनी फूल	112
ठहर ठहर कर कलाम फ़रमाते	95	मुलाक़ात में जल्द बाज़ी	116
खाना खाने में जल्द बाज़ी	96	ख़बर देने में जल्द बाज़ी	117
गर्म खाना मन्अ़ है	96	राय क़ाइम कर लेने में जल्द बाज़ी	117
खाना कितना ठन्डा किया जाए !	97	गुदड़ी में ला'ल	117
गर्म खाने के नुक़्सानात	97	फ़ैसला करने में जल्द बाज़ी	120
फ़ास्ट फूड खाने वाले जल्द बाज़ होते हैं	97	तह़रीर में जल्द बाज़ी	120
बद गुमानी करने में जल्द बाज़ी	98	इम्तिह़ान में जल्द बाज़ी	121
गुमानों से बचो	100	आप का मरीज़ 30 सेकन्ड पहले मर चुका है	122
नेक मुसल्मान की बात का बुरा मत़लब लेना	101	पीर बनाने में जल्द बाज़ी	122
शाही दरबार में सिफ़ारिश	101	चुंगल में जा फंसा	123
गाड़ी चलाने में जल्द बाज़ी	102	ख़ुद को बा कमाल समझने वाला जल्द बाज़	127
सड़क पार करने में जल्द बाज़ी	103	जल्द बाज़ी से कैसे बचें ?	128
गाड़ी पर सुवार होने या उतरने में जल्द बाज़ी	104	काम करने से पहले सोच लीजिये	128
मैं दा'वते इस्लामी से क्यूं मु-तअस्सिर हुवा ?	105	किसी काम का फ़ैसला कैसे करे ?	128

उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर
जल्द बाज़ी के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये	129	गुनाहों से जल्द तौबा कर लीजिये	146
बुर्द-बार की ता'रीफ़ फ़रमाई	130	नेक बनने में जल्दी कीजिये	148
काम्याबी तुम्हारा मुक़द्दर बनेगी	131	शराबी की तौबा	149
सिंगर (गुलूकार) दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?	131	राहे ख़ुदा में ख़र्च करने में देर न कीजिये	151
कौन से काम जल्दी करने चाहिएं ?	135	निय्यत में फ़र्क़ आ जाता	152
आख़िरत के काम में जल्दी करनी चाहिये	136	औलाद जवान हो जाए तो जल्द शादी कर दीजिये	152
6 कामों में जल्दी ज़रूरी है	136	मेहमान को जल्द खाना खिला दीजिये	154
किन कामों में देर नहीं करनी चाहिये ?	137	मुझे सालन की ख़ुश्बू पसन्द है	154
नमाज़ के लिये उठने में देर न कीजिये	137	किसी की इस्लाह़ करने में देर न कीजिये	155
शैत़ान नाक पर गिरेह लगा देता है	138	कान नोच डाला	155
नमाज़ की अदाएगी में ताख़ीर न कीजिये	138	नमाज़े जनाज़ा अदा करने में देर न कीजिये	155
जमाअ़ते ऊला तर्क न कीजिये	139	जल्दी दफ़्न कर दो	156
क़ज़ा नमाज़ें जल्दी अदा कर लीजिये	141	ह़क़त-लफ़्ज़ी की मुआ़फ़ी मांगने में जल्दी कीजिये	157
अदाए क़र्ज़ में जल्दी कीजिये	142	सवाबे जारिया कमाने में जल्दी कीजिये	159
हिम्मते मर्दां मददे ख़ुदा	142	950 ऊंट और 50 घोड़े	160
सलाम में पहल कीजिये	143	बदतर से अ़ज़ीज़ तर बन गया	161
फ़र्ज़ ह़ज के लिये जाने में देर न कीजिये	144	माख़ज़ व मराजीअ़	165
गुस्ले जनाबत करने में जल्दी कीजिये	145	शो'बए इस्लाही कुतुब की किताबें	168
जनाबत की ह़ालत में सोने के अह़काम	145		

अ़क़्ल मन्द इन्सान दूसरों की ग़-लतियों से सबक़ सीख लेता है मगर बे वुक़ूफ़ अपनी ग़-लतियों से भी सबक़ नहीं सीखता ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

मस्जिद के पास से गुज़रते वक़्त भी दुरूद पढ़िये

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जब किसी **मस्जिद** के पास से गुज़रो तो **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो। (فَضْلُ الصَّلَاةِ عَلَى النَّبِیِّ لِلقاضی الجَھْضَمِی ص ٧٠رقم ٨٠)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जल्द बाज़ शिकारी

एक शख़्स को शिकार (Hunting) का बहुत शौक़ था, एक मर्तबा तरकश में तीर (Arrows) ले कर परन्दों के शिकार को निकला, इस दौरान एक परन्दा वहां से उड़ता हुवा गुज़रा, जिस का **साया** ज़मीन पर पड़ रहा था, उस शिकारी ने जल्द बाज़ी में साए को ही शिकार समझा और ताक ताक कर उस पर तीर बरसाने शुरूअ़ किये यहां तक कि सारे तीर ख़त्म हो गए मगर **परन्दा** हाथ न आया। उस ने अपने एक दोस्त से अपनी नाकामी (Failure) की दास्तान बयान की और कहा कि मैं ने ठीक निशाने पर तीर चलाए मगर एक भी तीर परन्दे को नहीं लगा ! उस के दाना दोस्त ने उसे समझाया कि नादान ! तुम ने जल्द बाज़ी में जिस को निशाना बनाया वोह परन्दा नहीं उस का साया था, अस्ल शिकार तो ऊपर फ़ज़ा में था।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काम्याबी की तमन्ना किसे नहीं होती मगर येह हर एक को नहीं मिलती जैसा कि मज़्कूरा हिकायत में जल्द बाज़ शिकारी के साथ हुवा। ना कामियों के बहुत से अस्बाब (Reasons) होते हैं जिन में से एक बड़ा सबब जल्द बाज़ी (Hurry) भी है। बीज को पौदा, पौदे को दरख़्त और दरख़्त

को फलदार बनने में थोड़ा वक़्त तो लगता है, इसी त़रह़ शाम होने पर सुब्ह़ देखने के लिये ख़्वाही न ख़्वाही रात गुज़रने का इन्तिज़ार करना पड़ता है और कोई तालाब (Pool) यक दम नहीं भरता बल्कि क़त़रा क़त़रा जम्अ़ हो कर तालाब बनता है मगर हमारी अक्सरिय्यत इस ह़क़ीक़त को फ़रामोश कर के बिला ग़ौरो फ़िक्र हर काम को जल्दी जल्दी करने की कोशिश में मस्रूफ़ नज़र आती है फिर जब जल्द बाज़ी के नतीजे में काम बिगड़ जाता है तो इस का ज़िम्मेदार दूसरों को ठहराया जाता है ह़ालां कि सोचे समझे बिग़ैर काम शुरूअ़ करना और बिगड़ने पर इल्ज़ाम दूसरों को देना ह़माक़त है। अगर हम ना कामियों से अपना दामन बचाना और काम्याबी की मन्ज़िल को पाना चाहते हैं तो जल्द बाज़ी से जान छुड़ाना होगी और इस के लिये पहले हमें जल्द बाज़ी को पहचानना होगा, फिर येह जानना होगा कि इस के नुक़्सानात क्या हैं ? हम किन किन कामों में जल्द बाज़ी का शिकार हो जाते हैं और किस क़िस्म का नुक़्सान उठाते हैं ? और किन कामों में देर नहीं करनी चाहिये ? येह तफ़्सीलात जानने के लिये किताब का मुत़ा-लआ़ जारी रखिये जिस का नाम **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **''जल्द बाज़ी के नुक़्सानात''** रखा है। **अल्लाहु** रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ हमें जल्द बाज़ी की आफ़तों से बचाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

15 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम 1432 सि.हि., ब मुत़ाबिक़ 12 नवम्बर 2011 ई.

जल्द बाज़ी की ह़क़ीक़त

सोचे समझे बिग़ैर कोई काम करना जल्द बाज़ी कहलाता है, इसे उ़ज्लत भी कहते हैं, अगर इन्सान अपने कामों को सोच बिचार और ग़ौरो फ़िक्र के बा'द शुरूअ़ करे तो इसे तवक़्क़ुफ़ (या'नी ठहराओ) कहते हैं और काम को ठहर ठहर कर आराम से करना ताकि काम बेहतर त़रीक़े से अन्जाम को पहुंचे, इसे तह़म्मुल व बुर्दबारी (اَلْاَنَاۃُ) कहते हैं। (منہاج العابدین ص ۷۵ ملتقطاً)

जल्द बाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से है

इन्सान में साबित क़-दमी का फ़ुक़्दान और इस का जल्द बाज़ी की त़रफ़ मैलान शैत़ान का अहम हथियार है, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلْاَنَاۃُ مِنَ اللّٰہِ وَالْعُجْلَۃُ مِنَ الشَّیْطٰن या'नी गौ़रो फ़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से और जल्द बाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से है।''

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی التأنی والعجلۃ، الحدیث: ۲۰۱۹، ج ۳، ص ۴۰۷)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी दुन्यावी या दीनी कामों को इत्मीनान से करना **अल्लाह** तआ़ला के इल्हाम से है और उन में जल्द बाज़ी से काम लेना शैत़ानी वस्वसा है।

(मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 6, स. 625)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इन्सान पर जल्द बाज़ी के वक़्त ह़म्ला करो

जब **ह़ज़रते** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की विलादत हुई तो शैत़ान के तमाम शागिद उस के पास जम्अ़ हुए और ख़बर दी : आज तमाम बुतों के सर झुके हुए हैं ! शैत़ान ने कहा : मा'लूम होता है कि कोई बड़ा वाक़िआ़ हुवा है, तुम यहीं ठहरो ! मैं मा'लूम करता हूं । चुनान्चे उस ने मश्रिक़ व मग़रिब का चक्कर लगाया मगर कुछ भी पता न चला, यहां तक कि वोह **ह़ज़रते** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की जाए विलादत पर पहुंचा और येह देख कर ह़ैरान रह गया कि फ़िरिश्ते **ह़ज़रते** ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को झुरमट में लिये हुए हैं । शैत़ान वापस अपने शागिर्दों के पास पहुंचा और कहने लगा : गुज़श्ता रात एक नबी की विलादत हुई है, मैं हर बच्चे की विलादत के वक़्त मौजूद होता हूं मगर मुझे उन की पैदाइश का बिल्कुल इ़ल्म नहीं हो सका लिहाज़ा इस रात के बा'द बुतों की इ़बादत से ना उम्मीद हो जाओ इस लिये अब इन्सान पर जल्द बाज़ी और ला परवाही के वक़्त ह़म्ला करो (या'नी इस त़रह़ ही इसे बुत परस्ती पर तय्यार किया जा सकता है)

(احیاءعلوم الدین، کتاب شرح عجائب القلب، ج ۳ ص ۴۱)

अ़-मली क़दम उठाने से पहले ग़ौरो फ़िक्र कर लीजिये

शैत़ान जल्द बाज़ इन्सान को ऐसे त़रीक़े से बुराई पर माइल करता है कि इन्सान को मह़सूस तक नहीं होता, शैख़ुल इस्लाम शहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : ''जल्द बाज़ी होती तो शैत़ान की त़रफ़ से है मगर वोह

खुद जल्द बाज़ नहीं होता बल्कि इन्सान को इस त़रह़ आहिस्ता आहिस्ता बुराई में मुब्तला करता है कि उसे ख़बर भी नहीं होती, लेकिन जो शख़्स कोई अ़-मली क़दम उठाने से पहले ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कर लेता है तो उसे इस काम में बसीरत ह़ासिल हो जाती है, लिहाज़ा जब तक किसी काम में बसीरत ह़ासिल न हो तो किसी भी अ़मल में जल्द बाज़ी नहीं करनी चाहिये सिवाए उस काम के जिस का फ़ौरन करना वाजिब हो और उस में ग़ौरो फ़िक्र की कोई गुन्जाइश ही न हो।" (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج ۱ ص ۸۱)

शैत़ान और इन्सान की जंग

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی तफ़्सीरे कबीर में लिखते हैं : इन्सान का सारा बदन गोया एक मुकम्मल रियासत है, उस का सीना क़ल्ए़ की मानिन्द है और दिल शाही मह़ल के मुशाबेह है, दिल का अन्दरूनी ह़िस्सा तख़्ते बादशाहत की त़रह़ है, इन्सान की रूह़ बादशाह, अ़क़्ल उस की वज़ीर, शह्वत उस हुकूमती अहलकार की त़रह़ है जो जानवरों को शहर की त़रफ़ हांकता है, गुस्सा उस पोलीस वाले की त़रह़ है जो हमेशा मारने और सबक़ सिखाने में मश्ग़ूल रहता है, ह़वास उस के जासूस और बक़िय्या आ'ज़ा खुद्दाम की ह़ैसिय्यत रखते हैं। जब शैत़ान उस सल्त़नत, क़ल्ए़ और उस मह़ल को ख़त्म करने के लिये इन्सान से जंग लड़ता है तो वोह (या'नी शैत़ान) अपने लश्कर का सिपह सालार जब कि ख़्वाहिशात, ह़िर्स व लालच और तमाम बुरे अख़्लाक़ उस के सिपाही की ह़ैसिय्यत से मैदान में आते हैं। इस जंग के आग़ाज़ में इन्सानी रूह़ अपने वज़ीर अ़क़्ल को आगे बढ़ाती है और शैत़ान उस के मुक़ाब्ले के लिये ख़्वाहिशात को लाता है। अ़क़्ल इन्सान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाती है और

ख़्वाहिश शैत़ान की त़रफ़। फिर इन्सानी रूह़ फ़त़ानत या'नी समझ बुझ को मैदान में लाती है जो अ़क़्ल की मदद करती है और शैत़ान फ़त़ानत के मुक़ाब्ले में शह्वत को लाता है। फ़त़ानत दुन्या के उ़यूब इन्सान पर ज़ाहिर करती है जब कि शह्वत उसे दुन्या की लज़्ज़तों की त़रफ़ माइल करती है। फिर रूह़ फ़त़ानत की मदद के लिये ग़ौरो फ़िक्र को मैदान में उतारती है जो इन्सान को ज़ाहिरी व पोशीदा उ़यूब से बचाती है और शैत़ान ग़ौरो फ़िक्र के मुक़ब्ले के लिये ग़फ़्लत को लाता है, फिर रूह़ बुर्द-बारी व साबित क़-दमी को आगे बढ़ाती है क्यूं कि जल्द बाज़ी में इन्सान अच्छाई को बुराई और बुराई को अच्छाई समझता है जब कि बुर्द-बारी व साबित क़-दमी इन्सान को दुन्या की बुरी चीज़ों से बाज़ रखती है, शैत़ान उस के मुक़ाब्ले में उ़ज्लत (या'नी जल्द बाज़ी) को लाता है, पस इसी त़रह़ से दोनों लश्करों में जंग होती रहती है। (लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि शैत़ान के लश्करियों से ख़बरदार रहे ताकि शैत़ान से शिकस्त खाने से महफ़ूज़ रहे)

(تفسیر کبیر پ۱۶، طٰہٰ، تحت الآیۃ: ۲۵، ۳۵، ج۸، ص۴۰، ملتقطاً)

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब
इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये अ़ह्द करते हैं कि

शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग जारी रहेगी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

काम के दो मरहले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी काम के दो मरहले (Steps) होते हैं : (1) उस काम को करने का फ़ैसला करना और (2) उस काम को पायए तक्मील तक पहुंचाना, जल्द बाज़ी का तअ़ल्लुक़ इन दोनों से होता है क्यूं कि जिस त़रह़ काम को करने से पहले ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र न करने की सूरत में नुक़्सान (loss) का अन्देशा है इसी त़रह़ काम की तक्मील के दौरान जल्द बाज़ी से नुक़्सान का ख़त़रा है, इस लिये समझदारी येह है कि दोनों मरहलों में जल्द बाज़ी से बचा जाए क्यूं कि कांटेदार झाड़ी में कपड़ा उलझ जाए तो निकालने में जल्द बाज़ी करने पर चीथड़े तो हाथ आ सकते हैं कपड़ा नहीं ।

जल्द बाज़ों की अक़्साम

बुन्यादी त़ौर पर जल्द बाज़ों की तीन क़िस्में (Categories) हैं : **एक** वोह जो हर काम में जल्द बाज़ी का मुज़ा–हरा करते हैं किसी काम में ग़ौरो फ़िक्र की ज़हूमत गवारा नहीं करते कि हमें येह काम करना भी चाहिये या नहीं ? फिर अगर वोह करने का काम भी हो तो उसे इतनी जल्द बाज़ी से करते हैं कि उस के ख़ात़िर ख़्वाह नताइज नहीं मिलते **दूसरे** वोह जो अक्सर काम जल्द बाज़ी में करते हैं मगर कुछ कामों से पहले ग़ौरो फ़िक्र कर लेते हैं फिर उन्हें इत्मीनान (Satisfaction) से अन्जाम देते हैं और **तीसरे** जो कुछ काम जल्द बाज़ी में जब कि अक्सर काम ग़ौरो फ़िक्र के बा'द इत्मीनान से अन्जाम देते हैं। इन में से पहली क़िस्म के इस्लामी भाई जल्द बाज़ी का सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाते हैं जब कि दूसरी क़िस्म वाले उन से कम और तीसरी वाले सब से

कम नुक़्सान उठाते हैं । ज़रा सोचिये कि अगर तीसरी क़िस्म वाले इस्लामी भाई अपने सारे काम मुनासिब ग़ौरो फ़िक्र के बा'द शुरूअ़ करें और इत्मीनान से उन कामों को मुकम्मल करें तो उन्हें किसी और वजह से नुक़्सान हो तो हो मगर जल्द बाज़ी की वजह से नुक़्सान नहीं उठाना पड़ेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ, अ़-रबी मक़ूला है : اِنْ لَّمْ تَسْتَعْجِلْ تَصِلْ या'नी अगर तुम जल्द बाज़ी नहीं करोगे तो अपनी मन्ज़िले मक़्सूद को पहुंच जाओगे ।

(منہاج العابدین ص ۷۴)

मोमिन ठहर ठहर कर काम करने वाला होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं मोमिन सोच समझ कर इत्मीनान व सन्जी-दगी से काम करने वाला होता है, रात को लकड़ियां जम्अ़ करने वाले की त़रह़ नहीं होता कि जल्दी में जो हाथ आया उठा लिया ।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب ...الخ، فضیلۃ الرفق، ج ۳، ص ۲۳۰)

अपना ह़िस्सा गवां बैठेंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुल क़रनैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक फ़िरिश्ते से मिले तो कहा : "मुझे कोई ऐसी बात बताओ जिस से मेरे ईमान और यक़ीन में इज़ाफ़ा हो ।" फ़िरिश्ते ने जवाब दिया : जल्द बाज़ी से बचते रहिये क्यूं कि जब आप जल्द बाज़ी से काम लेंगे तो अपना ह़िस्सा गवां बैठेंगे ।" (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج ۱ ص ۱۰۷)

जल्द बाज़ ख़ता खाता है

कातिबे वह्य हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक ख़त में लिखा : भलाई के कामों में ग़ौरो फ़िक्र करना ज़ियादा हिदायत का सबब होता है और हिदायत याफ़्ता वोह है जो जल्द बाज़ी से बचता है और ना मुराद वोह है जो वक़ार से महरूम रहता है, मुस्तक़िल मिज़ाज आदमी ही अच्छे फ़ैसले तक पहुंचता है जब कि जल्दी मचाने वाला ख़ता खाता है या उस से ख़ता सरज़द होने का इम्कान होता है और जिस शख़्स को नरमी नफ़्अ़ न दे उसे सख़्ती और बे वुक़ूफ़ी से नुक़्सान होता है और जो आदमी तजरिबात से नफ़्अ़ न उठाए वोह बुलन्द मक़ाम हासिल नहीं कर सकता। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب...الخ، فضیلۃ الرفق، ج ۳، ص ۲۳۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जल्द बाज़ी के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जल्द बाज़ी को اُمُّ النَّدَامَۃِ या'नी नदामत की मां (Mother of regret) कहा गया है क्यूं कि जल्द बाज़ आदमी सामने वाले की बात मुकम्मल होने से पहले बोल पड़ता है, सुवाल को अच्छी त़रह़ समझने से पहले ही उस का जवाब दे देता है और ग़ौरो फ़िक्र करने से क़ब्ल किसी काम के करने का इरादा कर लेता है और किसी को परखने से पहले ही उस की ता'रीफ़ कर बैठता है और अन्जामे कार नदामत उठाता है। मक़ूला है : یَدُ الرِّفقِ تَجْنِی ثَمْرَۃَ السَّلَامَۃِ وَیَدُ الْعُجْلَۃِ تَغْرِسُ شَجْرَۃَ النَّدَامَۃِ '' या'नी बुर्द-बारी का हाथ सलामती का फल पैदा करता है और जल्द

बाज़ी का हाथ नदामत का दरख़्त उगाता है।'' चुनान्चे जो इस्लामी भाई जल्द बाज़ हो, बुर्द-बार और मु-तह़म्मिल मिज़ाज न हो तो वोह किसी काम में तवक़्क़ुफ़, तह़म्मुल, बुर्द-बारी, ज़रूरी ग़ौरो फ़िक्र से काम नहीं लेगा बल्कि हर काम की अन्जाम देही में जल्द बाज़ी का इरतिकाब करेगा और लग़्ज़िश खाएगा और नुक़्सान उठाएगा। अगर नुक़्सान सिर्फ़ दुन्यावी हो तो किसी ह़द तक क़ाबिले बरदाश्त हो सकता है लेकिन उख़्रवी नुक़्सान सहने की हिम्मत हम ना तुवानों में कहा ! क्यूं कि दुन्या का नुक़्सान दुन्या ही में रह जाएगा जब कि उख़्रवी नुक़्सान जहन्नम के भड़क्ते हुए शो'लों में जला सकता है।

फ़ोह़ूश फ़िल्में देखने वाले की तौबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जल्द बाज़ी के नुक़्सानात से बचने का जज़्बा पाने के लिये सारी दुन्या में **नेकी की दा'वत** आ़म करने का दर्द रखने वाली ''म-दनी तह़रीक'' या'नी तब्लीग़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मुश्कबार ''म-दनी बहार'' आप के गोश गुज़ार की जाती है **: मदीनतुल औलिया** (मुलतान शरीफ़) में मुक़ीम इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है **:** मैं ने F.A के बा'द ता'लीम को ख़ैरबाद कह कर एक दुकान पर काम करना शुरूअ़ कर दिया। **बद क़िस्मती से मुझे उस दुकान पर ऐसे लोगों की सोह़बत मुयस्सर आई कि जो गाने बाजे सुनने के आ़दी और फ़िल्मों डिरामों के रसिया थे।** मश्हूर मसल

صُحْبَتِ طَالِحْ تُرَا طَالِحْ كُنَدْ (तरजमा : बुरों की सोह़बत बुरा बना देती है) के मिस्दाक़ मुझ पर भी उन की बुराइयों का असर चढ़ता रहा और बिल आख़िर ह़या सोज़ फ़ोह़्श फ़िल्में देखना मेरा मह़बूब मश्ग़ला बन गया। इस त़रह़ मैं दुकान से फ़ारिग़ होते ही ऐसे होटलों का रुख़ करता जहां येह फ़िल्में दिखाई जाती हैं। एक दिन ह़स्बे मा'मूल दुकान में काम से फ़ारिग़ हो कर फ़िल्म देखने के लिये जा रहा था कि ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात सब्ज़ इ़मामा व सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक बा रीश मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी से हो गई। उन्हों ने निहायत गर्म-जोशी से मुसा-फ़ह़ा किया और दौराने गुफ़्त-गू मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की ब-र-कतें बताईं और मुझे इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की दा'वत पेश की। में उन के दिल मोह लेने वाले अन्दाज़े गुफ़्त-गू से पहले ही मु-तअस्सिर हो चुका था चुनान्चे मुझ से इन्कार न हो सका और मैं ने **ए'तिकाफ़** की निय्यत कर ली फिर वक़्ते मुक़र्ररा पर दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई **सुन्नतों** भरे ए'तिकाफ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने के लिये मस्जिद में पहुंच गया। **म-दनी मह़ोल** में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के क्या कहने ! वोह दर्सो बयान की बहारें, वोह स-ह़री व इफ़्तारी में रिक़्क़त अंगेज़ मुनाजात के पुरकैफ़ मनाज़िर कि जिन की ब-र-कत से मेरे दिल की सियाही रफ़्ता रफ़्ता धुलती चली गई और मैं अपने साबिक़ा गुनाहों से ताइब हो कर दा'वते इस्लामी के म-दनी मह़ोल से वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं दा'वते इस्लामी के "जामिअ़तुल मदीना (फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची)" में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स)

करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं।

सवंर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه

तुम अपनाए रख्खो सदा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या हम जल्द बाज़ हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यवी व उख़्वी नुक़्सान से बचने के लिये हमें अपना मुह़ा-सबा करना चाहिये कि कहीं हम भी तो जल्द बाज़ों में शामिल नहीं ? इस सुवाल का जवाब ह़ासिल करने के लिये पहले उन चन्द कामों की फ़ेहरिस्त (list) मुला-ह़ज़ा कीजिये जिन में उ़मूमन जल्द बाज़ी की जाती है फिर उन की मुख़्तसर वज़ाह़त पढ़िये कि इन कामों में जल्द बाज़ी करने वाले किस क़िस्म का नुक़्सान उठाते हैं ?

वोह 53 काम जिन में जल्द बाज़ी की जाती है

❁ वुज़ू करने में जल्द बाज़ी ❁ नमाज़ अदा करने में जल्द बाज़ी ❁ तक्बीरे ऊला पाने में जल्द बाज़ी ❁ इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते हुए जल्द बाज़ी ❁ तिलावते क़ुरआन में जल्द बाज़ी ❁ रोज़ा इफ़्तार करने में जल्द बाज़ी ❁ तरावीह़ में जल्द बाज़ी ❁ इमाम को लुक़्मा देने में जल्द बाज़ी ❁ क़ुरबानी करने में जल्द बाज़ी ❁ ज़ब्ह़ के बा'द जानवर की खाल उतारने में जल्द बाज़ी ❁ अरकाने ह़ज अदा करने में जल्द बाज़ी ❁ क़बूलिय्यते दुआ में जल्द बाज़ी ❁ बद दुआ में जल्द बाज़ी ❁ दुरूदे पाक लिखने पढ़ने में जल्द बाज़ी

۞ वज़ीफ़े के नतीजे की त़लब में जल्द बाज़ी ۞ दुन्या त़लब करने में जल्द बाज़ी ۞ रिश्ता त़ै करने में जल्द बाज़ी ۞ इ़लाज करवाने में जल्द बाज़ी ۞ मु-तअस्सिर होने में जल्द बाज़ी ۞ भीड़ में जल्द बाज़ी ۞ भगदड़ मचने की सूरत में भागने में जल्द बाज़ी ۞ शो'बा अपनाने में जल्द बाज़ी ۞ किराए का मकान लेने में जल्द बाज़ी ۞ घर में मुलाज़िम रखने में जल्द बाज़ी ۞ किसी को गुनाहगार क़रार देने में जल्द बाज़ी ۞ फ़रीक़ैन के दरमियान फ़ैसला करने में जल्द बाज़ी ۞ ख़रीदारी में जल्द बाज़ी ۞ झगड़ा मोल लेने में जल्द बाज़ी ۞ शर-ई मस्अले का जवाब देने में जल्द बाज़ी ۞ बच्चों के झगड़े में नतीजा क़ाइम करने में जल्द बाज़ी ۞ लज़्ज़ते गुनाह के हुसूल में जल्द बाज़ी ۞ गुस्सा नाफ़िज़ करने में जल्द बाज़ी ۞ तह़रीक से रिश्ता तोड़ने में जल्द बाज़ी ۞ बातचीत करने में जल्द बाज़ी ۞ खाना खाने में जल्द बाज़ी ۞ बद गुमानी करने में जल्द बाज़ी ۞ गाड़ी चलाने में जल्द बाज़ी ۞ रोड पार करने में जल्द बाज़ी ۞ गाड़ी पर सुवार होने या उतरने में जल्द बाज़ी ۞ बिल वग़ैरा जम्अ़ करवाने में जल्द बाज़ी ۞ ग़मनाक ख़बर सुनाने में जल्द बाज़ी ۞ समझाने में जल्द बाज़ी ۞ शिक्वा करने में जल्द बाज़ी ۞ मौत की त़लब में जल्द बाज़ी (ख़ुदकुशी) ۞ राय क़ाइम करने में जल्द बाज़ी ۞ मुता-लआ़ करने में जल्द बाज़ी ۞ मुलाक़ात में जल्द बाज़ी ۞ ख़बर देने में जल्द बाज़ी ۞ किसी के बारे में राय क़ाइम कर लेने में जल्द बाज़ी ۞ फ़ैसला करने में जल्द बाज़ी ۞ तह़रीर में जल्द बाज़ी ۞ इम्तिह़ान में जल्द बाज़ी ۞ पीर बनाने में

जल्द बाज़ी । (याद रहे यह ता'दाद ह़त्मी (Final) नहीं है, बल्कि इन के इ़लावा भी बहुत से कामों में जल्द बाज़ी की जाती है)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

{1} वुज़ू करने में जल्द बाज़ी

मश्हूर है कि **''वुज़ू जवानों का सा और नमाज़ बूढ़ों की''** अगर इस का मत़लब येह है कि इतनी जल्दी जल्दी वुज़ू किया जाए कि फ़राइज़े वुज़ू का भी ख़याल न रखा जाए तो संभल जाइये कि इस त़रह़ वुज़ू करने से अगर मुकम्मल चेहरे या कोहनियों समेत दोनों हाथों या टख़्नों समेत पाउं का थोड़ा सा ह़िस्सा भी धुलने से रह गया या सर के चौथाई ह़िस्से का मस्ह़ न किया तो **वुज़ू** ही न होगा और ज़ाहिर है कि जब वुज़ू नहीं होगा तो **नमाज़** भी नहीं होगी । इस लिये अगर आप अपनी नमाज़ बचाना चाहते हैं तो वुज़ू में **जल्द बाज़ी** न कीजिये और फ़राइज़ के साथ साथ सुनन व मुस्तह़ब्बात का भी ख़याल रखिये ।

वुज़ू पूरा करो

ह़ज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन अ़म्र** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ महूवे सफ़र थे, जब हम रास्ते में मौजूद पानी तक पहुंचे तो वोह लोग जो हम से पहले वहां पहुंच गए थे और जल्दी जल्दी में वुज़ू कर चुके थे उन की ऐड़ियां जिन्हें पानी न लगा था, वोह चमक रही थीं, तब सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

इन ऐड़ियों के लिये आग का "**वैल**" है वुज़ू पूरा करो।

(صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، الحدیث: ۲۴۱، ص ۱۴۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी हम नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ क़ाफ़िले के पिछले हिस्से में थे और वोह ह़ज़रात अगले हिस्से में, वोह हम से पहले पानी पर पहुंच गए और जल्दी में वुज़ू किया। मा'लूम हुवा कि वुज़ू भी नमाज़ की त़रह़ इत्मीनान से करना चाहिये, "**वैल**" के मा'ना अफ़्सोस भी हैं और दोज़ख़ के एक त़ब्क़े का नाम भी है यहां दूसरे मा'ना मुराद हैं या'नी अगर आ'ज़ाए वुज़ू में से कोई उ़ज़्व नाख़ुन बराबर सूखा रह गया तो वोह शख़्स "**वैल**" में जाने का मुस्तह़िक़ है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 285)

बिला वुज़ू ही पढ़िये़गा

आ'ला ह़ज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : एक मर्तबा गाउं जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा, एक साह़िब मेरे साथ थे, फ़ज्र की नमाज़ के लिये उन्हों ने वुज़ू किया, भवों से चेहरे पर पानी डाला। जब उन से कहा गया तो फ़रमाया : जल्दी की वजह से (ऐसा किया) कि (कहीं) वक़्त (Time) न (ख़त्म हो) जाए। मैं ने कहा कि **फिर तो बिला वुज़ू ही पढ़िये़गा !** मुझे ख़याल रहा, ज़ोहर के वक़्त देखा उन्हों ने उस वक़्त भी ऐसा ही किया, मैं ने कहा : "अब तो वक़्त न जाता था !" आज कल लोगों की आ़म

तौर से यहीं आदत है । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 290)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{2} नमाज़ अदा करने में जल्द बाज़ी

अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना मुसल्मानों की बहुत कम ता'दाद नमाज़ पढ़ती है और जो पढ़ते हैं उन में से भी बा'ज़ नादान जल्द बाज़ी की वजह से अपनी नमाज़ें बरबाद कर बैठते हैं । ऐसों को नमाज़ का चोर (Theif of prayers) क़रार दिया गया है, चुनान्चे शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''सब से बदतर **चोर** वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करता है ।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स अपनी नमाज़ में किस त़रह़ चोरी कर सकता है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''वोह इस के रुकूअ़ सुजूद पूरे नहीं करता ।'' या इर्शाद फ़रमाया : ''वोह रुकूअ़ सुजूद में अपनी पीठ सीधी नहीं करता ।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۲۲۷۰۵، ج۸، ص۳۸۶)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी मायानाज़ किताब **''नमाज़ के अह़काम''** में सफ़ह़ा 179 पर नक़्ल फ़रमाते हैं कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : ''मा'लूम हुवा कि माल के चोर से **नमाज़ का चोर** बदतर है क्यूं कि माल का चोर अगर सज़ा भी पाता है तो कुछ न कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर **नमाज़ का चोर** सज़ा पूरी पाएगा इस के

लिये नफ़्अ़ की कोई सूरत नहीं । माल का चोर ''बन्दे का ह़क़'' मारता है जब कि **नमाज़ का चोर ''अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़'', येह ह़ालत उन की है जो नमाज़ को नाक़िस पढ़ते हैं, इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं ।''

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 78)

बुरे ख़ातिमे की वईद

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स को देखा जो नमाज़ पढ़ते हुए रुकूअ़ और सुजूद पूरे अदा नहीं करता था तो उस से फ़रमाया : ''तुम ने जो नमाज़ पढ़ी अगर उसी नमाज़ की ह़ालत में इन्तिक़ाल कर जाओ तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के त़रीक़े पर तुम्हारी मौत वाक़ेअ़ नहीं होगी ।''(صحیح البخاری، کتاب الاذان، ج۱، ص ۲۸۴، حدیث ۸۰۸) नसाई शरीफ़ की रिवायत में येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : तुम कब से इस त़रह़ नमाज़ पढ़ रहे हो ? उस ने कहा : **चालीस** साल से । तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस से इर्शाद फ़रमाया : ''तुम ने **चालीस** साल से बिल्कुल नमाज़ ही नहीं पढ़ी और अगर इस ह़ालत में तुम्हें मौत आ गई तो दीने मुह़म्मदी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नहीं मरोगे ।'' (سنن النسائی، کتاب السھو، باب تطفیف الصلاۃ، ص ۲۲۵ حدیث ۱۳۰۹)

कव्वे की त़रह़ ठोंग न मारो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन शिब्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कव्वे की सी ठोंग मारने और दरिन्दे की त़रह़ हाथ बिछाने से मन्अ़ फ़रमाया ।

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلاۃ، الحدیث: ۸۶۲، ج۱، ص ۳۲۸)

या'नी साजिद (सज्दा करने वाला) सज्दा ऐसी जल्दी जल्दी न करे जैसे कव्वा ज़मीन पर चोंच मार कर फ़ौरन उठा लेता है और सज्दे में कोहनियां ज़मीन से न लगाए जैसे कुत्ता, भेड़िया वग़ैरा बैठते वक़्त लगा लेते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 87)

दो बार नमाज़ पढ़वाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स मस्जिद में आया, राह़ते क़ल्बे नाशाद, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद के एक कोने में जल्वा गर थे, उस शख़्स ने नमाज़ पढ़ी और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया, उस से नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَعَلَیْکَ السَّلَام लौट जाओ नमाज़ पढ़ो तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी। वोह लौट गया नमाज़ पढ़ी फिर आया सलाम किया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَعَلَیْکَ السَّلَام लौट जाओ नमाज़ पढ़ो तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी। उस ने तीसरी बार या उस के भी बा'द अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे सिखा दीजिये, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम नमाज़ की त़रफ़ उठो तो वुज़ू पूरा करो फिर का'बे को मुंह करो, फिर तक्बीर कहो, फिर जिस क़दर क़ुरआन आसान हो पढ़ लो फिर रुकूअ़ करो ह़त्ता कि रुकूअ़ में मुत्मइन हो जाओ फिर उठो ह़त्ता कि सीधे खड़े हो जाओ फिर सज्दा करो ह़त्ता कि सज्दे में मुत्मइन हो जाओ फिर उठो ह़त्ता कि इत्मीनान से बैठ जाओ फिर सज्दा करो ह़त्ता कि सज्दे में मुत्मइन हो जाओ फिर उठो ह़त्ता कि इत्मीनान से बैठ जाओ फिर अपनी सारी नमाज़ में येही करो। (صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، الحدیث: ۶۲۵۱، ج۴، ص۱۷۲)

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जैसी नमाज़

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز सुन्नते ख़ैरुल अनाम عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पर अ़मल की भरपूर कोशिश किया करते थे। जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ गवर्नरे मदीना थे तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिमे ख़ास और जलीलुल क़द्र सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इराक़ से मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا وَّ تَکۡرِیۡمًا आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز के पीछे नमाज़ पढ़ी। उन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز की नमाज़ बहुत पसन्द आई चुनान्चे नमाज़ पढ़ने के बा'द फ़रमाया : ''مَا رَاَیْتُ اَحَدًا اَشْبَہَ بِصَلَاۃِ النَّبِیِّ مِنْ ھٰذَا الْغُلَامِ'' या'नी मैं ने इस नौ जवान से बढ़ कर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशाबेह नमाज़ पढ़ने वाला कोई नहीं देखा।'' (سیرتِ عمر بن العزیز لابن الجوزی ص ۴۳)

मैं इस त़रह़ नमाज़ पढ़ता हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم से उन की नमाज़ का ह़ाल दरयाफ़्त किया गया, तो आप ने फ़रमाया : ''जब नमाज़ का वक़्त होता है, तो अच्छी त़रह़ वुज़ू करता हूं, फिर उस मक़ाम पर आता हूं, जहां नमाज़ अदा करनी है, वहां बैठ कर तमाम आ'ज़ा को जम्अ़ करता हूं या'नी उन्हें ह़ालते इत़्मीनान में लाता हूं। फिर मैं नमाज़ के लिये खड़ा होता हूं, तो **का'बतुल्लाह**'' को अपने सामने रखता हूं, पुल सिरात़ को क़दमों तले, जन्नत को सीधी

जानिब, जहन्नम को बाईं जानिब और म–लकुल मौत عَلَیْہِ السَّلام को अपने पीछे तसव्वुर करता हूं। फिर उस नमाज़ को अपनी **आख़िरी नमाज़** समझ कर ख़ौफ़ व उम्मीद के साथ खड़ा होता हूं, बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कह कर तरतील के साथ क़िराअत करता हूं, फिर आ़जिज़ी के साथ रुकूअ़ और ख़ुशूअ़ के साथ सुजूद अदा करता हूं। फिर अपनी उल्टी सुरीन पर बैठ कर सीधा पैर खड़ा कर लेता हूं और सारी नमाज़ में इख़्लास का ख़ूब ख़याल रखता हूं। फिर (भी) मैं नहीं जानता कि येह नमाज़ बारगाहे इलाही में मक़्बूल होती है या नहीं ?"

(احیاء العلوم، کتاب اسرار الصلوۃ ومہماتھا، ج۱،ص۲۰۶)

नमाज़े आ'ला ह़ज़रत

ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद ह़ुसैन चिश्ती निज़ामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن जिस क़दर एह़तियात से नमाज़ पढ़ते थे, आज कल येह बात नज़र नहीं आती। हमेशा मेरी दो रक्अ़त उन की एक रक्अ़त में होती थी और दूसरे लोग मेरी चार रक्अ़त में कम से कम छे रकअत बल्कि आठ रक्अ़त पढ़ लिया करते थे। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1 स. 154)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की इन सब पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

इत्मीनान से नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी नमाज़ इत्मीनान और सुकून से पढ़नी चाहिये ता कि हमारी नमाज़ क़बूलिय्यत की मे'राज तक पहुंच सके, चुनान्चे **हज़रते** सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **नबिय्ये रह़मत,** शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स अच्छी त़रह़ वुज़ू करे, फिर **नमाज़** के लिये खड़ा हो, इस के रुकूअ़, **सुजूद** और क़िराअत को मुकम्मल करे तो **नमाज़** कहती है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ह़िफ़ाज़त करे जिस त़रह़ तूने मेरी ह़िफ़ाज़त की। फिर उस **नमाज़** को आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाता है और उस के लिये चमक और **नूर** होता है। पस उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं ह़त्ता कि उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किया जाता है और वोह **नमाज़** उस नमाज़ी की शफ़ाअ़त करती है। और अगर वोह उस का रुकूअ़, **सुजूद** और क़िराअत मुकम्मल न करे तो नमाज़ कहती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे ज़ाएअ़ कर दे जिस त़रह़ तूने मुझे ज़ाएअ़ किया। फिर उस **नमाज़** को इस त़रह़ आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाता है कि उस पर तारीकी छाई होती है और उस पर आस्मान के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर उस को पुराने कपड़े की त़रह़ लपेट कर उस नमाज़ी के मुंह पर मारा जाता है।"

(شعب الایمان، ج ۳، ص ۱۴۲، الحدیث ۳۱۴۰)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त — हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही
मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर — हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 48)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{3} तक्बीरे ऊला पाने में जल्द बाज़ी

यक़ीनन तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना बहुत बड़ी सआ़दत है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है : जिस शख़्स ने रिज़ाए इलाही के लिये चालीस दिन तक **तक्बीरे ऊला** के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा की, उस के लिये दो क़िस्म की नजातें लिखी गईं, एक नजात जहन्नम से और दूसरी मुना-फ़क़त से। (ترمذی،الحدیث:۲۴۱، ج۱،ص۲۷۴) लेकिन बा'ज़ इस्लामी भाई तक्बीरे ऊला पाने की जल्दी में दौड़ लगा देते हैं जिस की वजह से ज़मीन पर **धमक** पैदा होती है जो कि आदाबे मस्जिद के ख़िलाफ़ है।

दौड़ते हुए न आओ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **ह़ुज़ूरे** पुरनूर, **शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि जब नमाज़ की तक्बीर कही जाए तो दौड़ते न आओ बल्कि चलते हुए इत्मीनान के साथ आओ जो पा लो वोह पढ़ लो जो रह जाए पूरी कर लो।

(صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، الحدیث:۶۰۲،ص۳۰۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जमाअ़त के लिये घबरा कर दौड़ते न आओ कि इस में गिर जाने चोट खाने का अन्देशा है, इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि जमाअ़त में शामिल होने के लिये सुकून से आना मुस्तह़ब है, दौड़ना मुस्तह़ब के ख़िलाफ़ है ह़राम नहीं, दूसरे येह कि आख़िरी जुज़्व मिल

जाने से जमाअ़त मिल जाती है लिहाज़ा जो नमाज़े जुमुआ़ की **अत्तहिय्यात** में मिल जाए वोह जुमुआ़ पढ़े, तीसरे येह कि जिस रक्अ़त में मुक़्तदी मिले वोह ता'दाद के लिहाज़ से रक्अ़ते अव्वल है और क़िराअत के लिहाज़ से रक्अ़ते आख़िरी। (मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं) जब से वोह नमाज़ के इरादे से घर से चला उसे नमाज़ का सवाब मिल रहा है फिर तेज़ी क्यूं करता है ! क्यूं गिरता और चोट खाता है ! इत्मीनान से आए जो पाए उस को अदा करे ख़याल रहे कि अगर तक्बीरे ऊला या रुकूअ़ पाने के लिये क़दरे तेज़ी से आए मगर न इतनी कि चोट लगने गिरने का अन्देशा हो तो मुज़ा-यक़ा नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 425, मुल्तक़त़न)

आ'ज़ाए वुज़ू का पानी मस्जिद में टपकाना ना जाइज़ है

बा'ज़ इस्लामी भाई वुज़ू करने के बा'द जमाअ़त पाने के लिये जल्द बाज़ी में पानी टपकाते हुए मस्जिद में पहुंच जाते हैं, याद रखिये आ'ज़ाए वुज़ू से मस्जिद में पानी टपकाना ना जाइज़ है, चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अक्सर देखा गया है कि फ़सील (या'नी ह़ौज़ की दीवार) पर वुज़ू किया और वैसे ही हाथ झटक्ते फ़र्शे मस्जिद में पहुंच गए, येह ना जाइज़ है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 236)

लिह़ाफ़ पर वुज़ू कर लिया

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : मैं ने एक बार बिग़ैर बरतन के ख़ास मस्जिद में वुज़ू जाइज़ त़ौर पर किया, वोह यूं कि पानी मूस्लाधार पड़ रहा था और मैं **मो'तकिफ़,** जाड़ो के दिन

थे, मैं ने तौशक (या'नी रूईदार बिस्तर) बिछा कर और इस पर लिहाफ़ डाल कर वुज़ू कर लिया। इस सूरत में एक छींट भी मस्जिद के फ़र्श पर न पड़ी, पानी जितना वुज़ू का था तौशक व लिहाफ़ ने जज़्ब कर लिया (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 236)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{4} इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते हुए जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ते हुए जल्द बाज़ी का मुज़ा-हरा करते हैं और रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा में इमाम से आगे निकलने की कोशिश करते हैं, याद रखिये : इमाम से पहले मुक़्तदी का रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा में चला जाना या उस से पहले सर उठाना मक्रूहे तह़रीमी[1] है। (ردالمحتار ج۲ ص ۵۱۳)

पेशानी के बाल शैत़ान के हाथ में

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो इमाम से पहले सर उठाता और झुकाता है उस की पेशानी के बाल शैत़ान के हाथ में हैं।'' (موطاامام مالک ج۱ ص ۱۰۲ حدیث ۲۱۲)

गधे जैसा सर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि

---

1 : मक्रूहे तह़रीमी ''वाजिब'' का मुक़ाबिल (या'नी उलट) है इस के करने से इ़बादत नाक़िस हो जाती है और करने वाला गुनहगार होता है अगर्चे इस का गुनाह ह़राम से कम है और चन्द बार इस का इरतिकाब (या'नी अ़मल में लाना) कबीरा (गुनाह) है। (बहारे शरीअ़त जि. 1, ह़िस्सा 2, स. 283)

अल्लाह के महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "क्या जो शख़्स इमाम से पहले सर उठाता है इस से डरता नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला उस का सर गधे का सा कर दे।" (صحیح مسلم ص ۲۲۸ حدیث ۴۲۸)

इ़ब्रत नाक हि़कायत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़दीस लेने के लिये एक बड़े मश्हूर शख़्स के पास दिमश्क़ गए। वोह पर्दा डाल कर पढ़ाते थे, मुद्दतों तक उन के पास बहुत कुछ पढ़ा मगर उन का मुंह न देखा, जब ज़मानए दराज़ गुज़र गया और उन मुह़द्दिस साहि़ब ने देखा कि इन (या'नी इमाम न-ववी) को इ़ल्मे ह़दीस की बहुत ख़्वाहिश है तो एक रोज़ पर्दा हटा दिया ! देखते क्या हैं कि उन का गधे जैसा मुंह है !! उन्हों ने फ़रमाया : साहि़ब ज़ादे ! दौराने जमाअ़त इमाम पर सब्क़त करने से डरो कि येह ह़दीस जब मुझ को पहुंची मैं ने इसे **मुस्तब्अ़द** (या'नी बा'ज़ रावियों की अ़-दमे सिह़्ह़त के बाइ़स दूर अज़ क़ियास) जाना और मैं ने इमाम पर क़स्दन सब्क़त की तो मेरा मुंह ऐसा हो गया जैसा तुम देख रहे हो। (बहारे शरीअ़त जि. 1, हि़स्सा 3, स. 560

(بحوالہ مرقاۃ المفاتیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، تحت الحدیث: ۱۱۴۱، ج ۳، ص ۲۲۱)

मुक़्तदी अपने इमाम की पैरवी करे

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़ह़ा 517 पर लिखते हैं : जो चीज़ें फ़र्ज़ हैं उन में इमाम

की मुता-ब-अ़त (या'नी पैरवी) मुक़्तदी पर फ़र्ज़ है या'नी उन में से कोई फ़े'ल इमाम से पेश्तर अदा कर चुका और इमाम के साथ या इमाम के अदा करने के बा'द अदा न किया, तो नमाज़ न होगी म-सलन इमाम से पहले रुकूअ़ या सज्दा कर लिया और इमाम रुकूअ़ या सज्दे में अभी आया भी न था कि इस ने सर उठा लिया तो अगर इमाम के साथ या बा'द को अदा कर लिया हो गई, वरना नहीं ।

(درمختار وردالمحتار ج ۲ ص ۱۷۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब इमाम साहि़ब के सलाम फैरने से पहले आप नमाज़ से फ़ारिग़ नहीं हो सकते तो उन से पहले रुकूअ़ व सुजूद में जाने या उन से पहले सर उठाने से क्या ह़ासिल ? इस में तो सरासर नुक़्सान (Loss) है जैसा कि मज़्कूरा रिवायात व ह़िकायात से मा'लूम हुवा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

{5} तिलावते क़ुरआन में जल्द बाज़ी

तिलावते क़ुरआन करना यक़ीनन बहुत बड़ी सआ़दत है, क़ुरआने पाक का एक **ह़र्फ़** पढ़ने पर **10 नेकियों** का सवाब मिलता है, चुनान्चे **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़्मतुलल्लि आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है **:** ''जो शख़्स **किताबुल्लाह** का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बरा बर होगी । मैं येह नहीं कहता الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि **अलिफ़** एक ह़र्फ़, **लाम** एक ह़र्फ़ और **मीम** एक ह़र्फ़ है ।''

(سنن الترمذی ج ۴ ص ۴۱۷ حدیث ۲۹۱۹)

बा'ज़ इस्लामी भाई निहायत तेज़ रफ़्तार से क़ुरआने पाक पढ़ते हैं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा तिलावत की सआ़दत ह़ासिल कर लें मगर दौराने तिलावत क़वाइ़दे तज्वीद की रिआ़यत नहीं करते ह़ालांकि **क़ुरआने करीम के ह़ुरूफ़ की दुरुस्त मख़ारिज से अदाएगी और ग़लत़ पढ़ने से बचना फ़र्ज़े ऐ़न है,** चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''बिला शुबा इतनी **तज्वीद** जिस से **तस्ह़ीह़े** ह़ुरूफ़ हो (या'नी क़वाइ़दे तज्वीद के मुत़ाबिक़ ह़ुरूफ़ को दुरूस्त मख़ारिज से अदा कर सके), और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे **फ़र्ज़े ऐ़न** है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 343)

क़ुरआने पाक ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये

पाराह 29 **सू-रतुल मुज़्ज़म्मिल** की चौथी आयत में इर्शादे रब्बानी है : **وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۝ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और क़ुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा **1098** पर है : मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कमालैन अ़ला ह़ाशिया जलालैन के ह़वाले से ''**تَرْتِيل**'' की वज़ाह़त करते हुए नक़्ल करते हैं : ''या'नी क़ुरआने मजीद इस त़रह़ आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो कि सुनने वाला इस की आयात व अल्फ़ाज़ गिन सके।'' (الکمالین، سورۃ المزمل، تحت الآیۃ: ۴، ص ۴۷۶) मदारिकुत्तन्ज़ील में है : क़ुरआन को आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो, इस का मा'ना येह है कि इत्मीनान के साथ ह़ुरूफ़ जुदा जुदा, वक़्फ़

की हिफ़ाज़त और तमाम ह़-रकात की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखना है ''تَرْتِیْلًا'' इस मस्अले में ताकीद पैदा कर रहा है कि येह बात तिलावत करने वाले के लिये निहायत ही ज़रूरी है।

(تفسیر مدارک التنزیل للنسفی، سورۃ المزمل، تحت الآیۃ: ۴، ص ۱۲۹۲)

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 276,278,279 मुल्तक़त़न)

ठहर ठहर कर पढ़ना अफ़्ज़ल है

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने किसी को जल्दी जल्दी क़ुरआने मजीद की तिलावत करते सुना तो फ़रमाया : येह शख़्स न क़ुरआन पढ़ता है न ख़ामोश है, अगर अ़-जमी हो कि क़ुरआने करीम के मा'नी नहीं जानता तो भी क़ुरआन शरीफ़ की अ़-ज़मत के लिये आहिस्ता और ठहर कर पढ़ना अफ़्ज़ल है। (کیمیائے سعادت ج ۱ ص ۲۲۱)

ग़ौरो फ़िक्र करना जल्दी पढ़ने से ज़ियादा महबूब है

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं ''اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ या اَلْقَارِعَۃُ मैं आहिस्ता पढ़ूं और ग़ौरो तअम्मुल करूं तो येह मुझे सूरए ब-क़रह और सूरए आले इमरान जल्दी पढ़ने से ज़ियादा महबूब है।'' (کیمیائے سعادت ج ۱ ص ۲۲۱)

तीन दिन से कम में ख़त्मे क़ुरआन करने वाला समझेगा नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सुल्त़ाने इन्सो जान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो तीन दिन से कम में क़ुरआने करीम ख़त्म करे वोह समझेगा नहीं।

(سنن ابی داود، کتاب شہر رمضان، باب تحزیب القرآن، الحدیث: ۱۳۹۴، ج ۲، ص ۷۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जो शख़्स हमेशा तीन दिन से कम में ख़त्मे क़ुरआन किया करे, वोह जल्दी तिलावत की वजह से न तो अल्फ़ाज़े क़ुरआन सह़ीह़ त़ौर पर समझ सकेगा, और न उस के ज़ाहिरी मा'ने में ग़ौर कर सकेगा, ख़याल रहे कि येह हुक्म आ़म मुसल्मानों के लिये है कि वोह अगर बहुत जल्दी तिलावत करें, तो ज़बान लिपट जाती है हुरूफ़ सह़ीह़ अदा नहीं होते ख़वास का हुक्म और है, ख़ुद हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तहज्जुद की एक एक रक्अ़त में पांच पांच छ छ पारे पढ़ लेते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक रात में ख़त्मे क़ुरआन किया है, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام चन्द मिनट में ज़बूर ख़त्म कर लेते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ घोड़ा कसने से पहले ख़त्मे क़ुरआन कर लेते थे। (मुफ़्ती साह़िब मज़ीद लिखते हैं :) येह हुक्म अ़वाम मुसल्मानों के लिये है जो इस क़दर जल्द क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने में दुरुस्त न पढ़ सकें। ख़त्मे क़ुरआन में आ़म बुज़ुर्गों के त़रीक़े मुख़्तलिफ़ रहे हैं, बा'ज़ एक माह में एक ख़त्म करते थे बा'ज़ एक हफ़्ते में एक ख़त्म।

(मिरआतुल मनाजीह़, शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 270)

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही
गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{6} रोज़ा इफ़्त़ार करने में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई रोज़ा इफ़्त़ार करने की जल्दी में ग़ुरूबे आफ़्ताब

के वक़्त का ख़याल नहीं रखते और सारा दिन भूका प्यासा रहने के बा'द अपना रोज़ा (Fast) ज़ाएअ़ कर बैठते हैं, सोचने की बात है कि बारह से चौदह घन्टे तक कुछ न खाने वाला अगर चन्द मिनट और न खाता तो उस का रोज़ा मुकम्मल हो जाता, लिहाज़ा ऐसों को चाहिये कि ग़ुरूबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाने के बा'द ही रोज़ा इफ़्तार किया करें। इस सिल्सिले में अपने अपने अ़लाक़ों के ह़िसाब से नमाज़ों के अवक़ात का जद्वल (Schedule) दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से ह़ासिल किया जा सकता है।

नमाज़ो रोज़ा व ह़ज्जो ज़कात की तौफ़ीक़
अ़ता हो उम्मते मह़बूब को सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{7} तरावीह़ में जल्द बाज़ी

तरावीह़ पढ़ाने वाले अक्सर हुफ़्फ़ाज़ जल्द बाज़ी का शिकार हो जाते हैं, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' के सफ़ह़ा 1097 पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : अफ़्सोस ! आज कल दीनी मुआ़-मलात में सुस्ती का दौर दौरा है, उ़मूमन तरावीह़ में क़ुरआने मजीद एक बार भी सह़ीह़ मा'नों में ख़त्म नहीं होता। क़ुरआने पाक तरतील के साथ या'नी ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये, मगर ह़ाल येह है कि अगर कोई ऐसा करे तो लोग उस के साथ तरावीह़ पढ़ने के लिये तय्यार ही नहीं होते। अब वही ह़ाफ़िज़ पसन्द किया जाता है जो तरावीह़ से जल्द फ़ारिग़ कर दे। याद रखिये ! तरावीह़

के इ़लावा भी तिलावत में ह़र्फ़ चबा जाना ह़राम है। अगर जल्दी जल्दी पढ़ने में ह़ाफ़िज़ साह़िब पूरे क़ुरआन मजीद में से एक ह़र्फ़ भी चबा गए तो ख़त्मे क़ुरआन की सुन्नत अदा न होगी । लिहाज़ा किसी आयत में कोई ह़र्फ़ ''चब'' गया या अपने ''**मख़्रज**'' से न निकला तो लोगों से शरमाए बिग़ैर पलट पड़िये और दुरुस्त पढ़ कर फिर आगे बढ़िये। एक अफ़्सोस नाक अम्र येह भी है कि हुफ़्फ़ाज़ की एक ता'दाद ऐसी होती है जिसे तरतील के साथ पढ़ना ही नहीं आता ! तेज़ी से न पढ़ें तो बेचारे भूल जाते हैं ! ऐसों की ख़िदमत में हमदर्दाना म-दनी मश्वरा है : लोगों से न शरमाएं ख़ुदा की क़स्म ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी बहुत भारी पड़ेगी लिहाज़ा बिला ताख़ीर **तज्वीद** के साथ पढ़ने वाले किसी क़ारी साह़िब की मदद से अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा अपना ह़िफ़्ज़ दुरुस्त फ़रमा लें । मद व लीन[1] का ख़याल रख़ना लाज़िमी है **नीज़ मद, ग़ुन्ना, इज़्हार, इख़्फ़ा** वग़ैरा की भी रिआ़यत फ़रमाएं। साह़िबे बहारे शरीअ़त ह़ज़रते **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, ''**फ़र्ज़ों** में ठहर ठहर कर क़िराअत करे और तरावीह़ में **मु-तवस्सित़** (या'नी दरमियाना) अन्दाज़ पर और **रात के नवाफ़िल** में जल्द पढ़ने की इजाज़त है मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम ''मद'' का जो द-रजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना ह़राम है। इस लिये कि तरतील से

1: **वाव, या** और **अलिफ़** साकिन और क़ब्ल की ह़-रकत मुवाफ़िक़ (या'नी **वाव** के पहले पेश और **या** के पहले ज़ेर और **अलिफ़** के पहले ज़बर) हो तो उस को मद और **वाव** और **या** साकिन मा क़ब्ल मफ़्तूह़ को लीन कहते हैं। (निसाबुत्तज्वीद, स. 9)

(या'नी ख़ूब ठहर ठहर कर) क़ुरआन पढ़ने का हुक्म है।"

(الدُّرُّ الْمُخْتَار وَرَدُّ الْمُحْتَار ج۲ ص۲۶۲) (बहारे शरीअ़त जि. 1 स. 547)

सदरुश्शरीअ़ह की कुढ़न

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपनी कुढ़न का इज़्हार इन अल्फ़ाज़ में करते हैं : अफ़्सोस सद अफ़्सोस कि इस ज़माने में ह़ुफ़्फ़ाज़ की ह़ालत निहायत ना गुफ़्ता बिह है, अक्सर तो ऐसा पढ़ते हैं कि يَعْلَمُوْنَ تَعْلَمُوْنَ के सिवा कुछ पता नहीं चलता अल्फ़ाज़ व ह़ुरूफ़ खा जाया करते हैं जो अच्छा पढ़ने वाले कहे जाते हैं उन्हें देखिये तो ह़ुरूफ़ सह़ीह़ नहीं अदा करते हम्ज़ा अलिफ़, ऐन और ط، ت، ص، س، ث और ظ، ز، ذ वग़ैरा ह़ुरूफ़ में तफ़रीक़ (या'नी फ़र्क़) नहीं करते जिस से क़त्अ़न नमाज़ ही नहीं होती फ़क़ीर को इन्हीं मुसीबतों की वजह से तीन साल ख़त्मे क़ुरआन मजीद सुनना न मिला। मौला عَزَّوَجَلَّ मुसल्मान भाइयों को तौफ़ीक़ दे कि مَا اَنْزَلَ اللهُ (या'नी जैसा अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाया वैसा) पढ़ने की कोशिश करें। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 692)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{8} इमाम को लुक़्मा देने में जल्द बाज़ी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 47 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल" के सफ़ह़ 14 पर है : नमाज़ में अपने इमाम को लुक़्मा

देना (या'नी बताना या इस्लाह़ करना) बा'ज़ सूरतों में फ़र्ज़ है, बा'ज़ सूरतों में वाजिब और बा'ज़ सूरतों में जाइज़ है। यूं ही बा'ज़ सूरतों में ह़राम है, बा'ज़ सूरतों में मक्रूह। बसा अवक़ात लुक़्मे का तअ़ल्लुक़ इमाम की क़िराअत के साथ होता है तो बसा अवक़ात इन्तिक़ालाते इमाम के साथ। (नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल, स. 14)

लिहाज़ा लुक़्मा देने वाले को मा'लूम होना चाहिये कि कब लुक़्मा देना है और कब नहीं ? मगर देखा येह गया है कि तरावीह़ में ह़ाफ़िज़ साह़िब ज़रा सा भूले तो झट से पीछे खड़ा सामेअ़ या कोई और जल्द बाज़ी में लुक़्मा दे देता है, ह़ालां कि फ़ौरन ही लुक़्मा देना मक्रूह है बल्कि थोड़ा तवक़्क़ुफ़ चाहिये कि शायद इमाम ख़ुद निकाल ले मगर जब कि उस की आ़दत उसे मा'लूम हो कि रुकता है तो बा'ज़ ऐसे ह़ुरूफ़ निकलते हैं जिन से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है तो फ़ौरन बताए।

(बहारे शरीअ़त जि. 1, ह़िस्सा 3 स. 607 بحوالہ ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ...الخ، ج۲،ص ۴۶۲)

ह़ाफ़िज़ साह़िब को परेशान करने की निय्यत ह़राम है

बा'ज़ मसाजिद में तरावीह़ पढ़ाने वाले के पीछे कई कई ह़ाफ़िज़ खड़े लुक़्मे दे रहे होते हैं, उन्हें अपनी निय्यत के बारे में मोह़तात़ रहना चाहिये अगर उन की निय्यत ह़ाफ़िज़ साह़िब को परेशान करने की हुई तो ऐसा करना ह़राम होगा, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं : "क़ारी (पढ़ने वाले) को परेशान करने की निय्यत ह़राम है **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

इर्शाद फ़रमाते हैं : بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا وَيَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا तरजमा : लोगों को ख़ुश ख़बरियां सुनाओ नफ़रत न दिलाओ, आसानी पैदा करो तंगी न करो। और बेशक आज बहुत से हुफ़्फ़ाज़ का येह शेवा है, येह बताना नहीं बल्कि ह़क़ीक़तन यहूद के इस फ़े'ल में दाख़िल है (जिस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में हुवा, फ़रमाया गया :)'' لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ (پ ۲۴، سورۃ حم السجدۃ: ۲۶) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह क़ुरआन न सुनो और इस में बेहूदा ग़ुल करो।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 287)

ह़िफ़्ज़ जतलाने की निय्यत

अगर किसी की निय्यत इमाम को परेशान करने की तो न हो मगर अपना ह़िफ़्ज़ जतलाना मक़्सूद हो तो येह भी ह़राम है। जैसा कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में इर्शाद फ़रमाते हैं : अपना ह़िफ़्ज़ जताने के लिये ज़रा ज़रा शुबे पर रोकना रिया है और रिया ह़राम है ख़ुसूसन नमाज़ में। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 287)

ग़लत़ लुक़्मा देने से नमाज़ टूट जाती है

जहां लुक़्मा नहीं देना था वहां एक ही दफ़्अ़ लुक़्मा देने से नमाज़ टूट जाएगी नमाज़ टूटने के लिये लुक़्मे की तक्रार शर्त़ नहीं फ़तावा आ़लमगीरी में है : बे महल एक दफ़्अ़ लुक़्मा देने से ही नमाज़ टूट जाती है।[1] (الفتاوی الھندیۃ، ج۱، ص۱۱۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{9} क़ुरबानी करने में जल्द बाज़ी

सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से

1 : नमाज़ में लुक़्मे के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब ''नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल'' का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

मरवी है कि नबिय्ये अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से पहले जो काम आज हम करेंगे वोह येह है कि नमाज़ पढ़ें फिर उस के बा'द क़ुरबानी करेंगे जिस ने ऐसा किया उस ने हमारी सुन्नत (या'नी त़रीक़े) को पा लिया और जिस ने पहले ज़ब्ह़ कर लिया वोह गोश्त है जो उस ने पहले से अपने घर वालों के लिये तय्यार कर लिया क़ुरबानी से उसे कुछ तअ़ल्लुक़ नहीं। ह़ज़रते अबू बुर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ खड़े हुए और येह पहले ही ज़ब्ह़ कर चुके थे (इस ख़याल से कि पड़ोस के लोग ग़रीब थे इन्हों ने चाहा कि उन को गोश्त मिल जाए) और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास बकरी का छ माह का एक बच्चा है, फ़रमाया : तुम उसे ज़ब्ह़ कर लो और तुम्हारे सिवा किसी के लिये छ माह का बच्चा किफ़ायत नहीं करेगा।

(بخاری، کتاب الأضاحی، باب سنۃ الأضحیۃ، الحدیث ۵۵۴۵، ج ۳، ص ۵۷۱)

क़ुरबानी के दो म-दनी फूल

(1) शहर में क़ुरबानी की जाए तो शर्त़ येह है कि नमाज़ हो चुके लिहाज़ा नमाज़े ईद से पहले शहर में क़ुरबानी नहीं हो सकती और देहात में चूंकि नमाज़े ईद नहीं है यहां तुलूए़ फ़ज्र के बा'द से ही क़ुरबानी हो सकती है और देहात में बेहतर येह है कि बा'दे तुलूए़ आफ़्ताब क़ुरबानी की जाए और शहर में बेहतर येह कि ईद का ख़ुत़्बा हो चुकने के बा'द क़ुरबानी की जाए। या'नी नमाज़ हो चुकी है और अभी ख़ुत़्बा नहीं हुवा है इस सूरत में क़ुरबानी हो जाएगी मगर ऐसा

करना मक्रूह है। (2) अगर शहर में मु-तअ़द्दद जगह ईद की नमाज़ होती हो तो पहली जगह नमाज़ हो चुकने के बा'द क़ुरबानी जाइज़ है या'नी येह ज़रूर नहीं कि ईदगाह में नमाज़ हो जाए जब ही क़ुरबानी की जाए बल्कि किसी मस्जिद में हो गई और ईदगाह में न हुई जब भी हो सकती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 337)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{10} ज़ब्ह़ के बा'द जानवर की खाल उतारने में जल्द बाज़ी

अक्सर गोश्त फ़रोश (क़स्साब, Butcher) इस्लामी भाई बिल ख़ुसूस ईदे क़ुरबान के दिनों में बहुत जल्दी में होते हैं चुनान्चे वोह जानवर के ठन्डा होने का इन्तिज़ार किये बिग़ैर उस की खाल उतारना शुरूअ़ कर देते हैं, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ऐसों को समझाते हुए लिखते हैं : जब तक जानवर मुकम्मल तौ़र पर ठन्डा न हो जाए न उस के पाउं काटें न खाल उतारें बहर ह़ाल ज़ब्ह़ कर लेने के बा'द जब तक रूह़ न निकल जाए छुरी बिल्कुल मस न करें, बा'ज़ लोग गाय को जल्द ''ठन्डी'' करने के लिये ज़ब्ह़ के बा'द गरदन की खाल उधेड़ कर छुरी घोंप कर दिल की रगें काटते हैं, इसी त़रह़ बकरे को ज़ब्ह़ करने के फ़ौरन बा'द गरदन चटख़ा देते हैं, बे ज़बानों पर इस त़रह़ के मज़ालिम न किये जाएं। जिस से बन पड़े उस के लिये ज़रूरी है कि जानवर को बिला वजह ईज़ा पहुंचाने वाले को रोके। बहारे शरीअ़त, जिल्द 3, ह़िस्सा 16, स. 660 पर है ''जानवर पर ज़ुल्म करना ज़िम्मी काफ़िर पर (अब दुन्या में सब काफ़िर ह़रबी हैं) ज़ुल्म करने

से ज़ियादा बुरा है और ज़िम्मी पर जुल्म करना मुस्लिम पर जुल्म करने से भी बुरा है क्यूं कि जानवर का कोई मुईन व मददगार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा नहीं इस ग़रीब को इस जुल्म से कौन बचाए !''

(अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 13)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{11} ह़ज में जल्द बाज़ी

जिसे जल्द बाज़ी की आ़दत पड़ जाती है फिर क्या मुआ़-मलात क्या इबादात ! वोह सब में जल्दी करने की कोशिश करता है, ह़ज के मवाक़ेअ़ पर जल्द बाज़ी के कई मनाज़िर (Scenes) दिखाई देते हैं म-सलन वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा या'नी नवीं ज़िल ह़िज्जा के आफ़्ताब ढलने से दसवीं की सुब्ह़े सादिक़ से पेश्तर तक किसी वक़्त अ़-रफ़ात में ठहरना फ़र्ज़ है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 6 ,स. 1047) लेकिन कई नादान हुदूदे अ़-रफ़ात से बाहर ही डेरा जमाए हुए होते हैं और एक लम्ह़े के लिये भी हुदूदे अ़-रफ़ात में नहीं आते, यूं उन का वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा का फ़र्ज़ रह जाता है और सफ़र की मशक़्क़त व सुऊ़बत उठाने के बा वुजूद उन का ह़ज अदा नहीं होता, इसी त़रह़ बा'ज़ लोग सूरज ग़ुरूब होने से पहले ही मुज़्दलिफ़ा की त़रफ़ रवाना हो जाते हैं ह़ालां कि ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले मैदाने अ़-रफ़ात से निकलना तर्के वाजिब और गुनाह है, इसी त़रह़ मैदाने अ़-रफ़ात से वापसी पर **मुज़्दलिफ़ा** में रात गुज़ारना सुन्नते मुअक्कदा है मगर इस का वुक़ूफ़ **वाजिब** है **वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा** का वक़्त सुब्ह़े सादिक़ से ले कर तुलूए़ आफ़्ताब तक है, इस के दरमियान अगर **एक लम्ह़ा** भी यहां गुज़ार लिया तो वुक़ूफ़ हो गया, ज़ाहिर है कि जिस ने फ़ज्र के

वक़्त में यहां नमाज़े फ़ज्र अदा की उस का वुकूफ़ सहीह़ हो गया, जो कोई सुब्हे सादिक़ से पहले ही मुज़्दलिफ़ा से चला गया उस का वाजिब तर्क हो गया, लिहाज़ा उस पर दम वाजिब है। हां ! औ़रत, बीमार या ज़ईफ़ या कमज़ोर कि जिन्हें भीड़ के सबब ईज़ा पहुंचने का अन्देशा हो अगर ऐसे लोग मजबूरन चले गए तो कुछ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 6, स. 135) लेकिन ऐसे मौक़अ़ पर भी शैत़ान जल्द बाज़ी में मुब्तला कर देता है चुनान्चे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ ने ख़ुद देखा है कि लोग जल्द बाज़ी में सुब्हे सादिक़ से बहुत पहले ही नमाज़े फ़ज्र शुरूअ़ कर देते हैं ताकि जल्दी जल्दी मिना में पहुंचें। मोह़तरम ह़ाजियो ! आप ऐसा न करें। आख़िर ऐसी भी क्या जल्दी है ? **याद रखिये !** अगर आप ने वक़्ते फ़ज्र शुरूअ़ होने से पहले फ़ज्र की नमाज़ पढ़ ली तो वोह सिरे से होगी ही नहीं। (रफ़ीक़ुल ह़-रमैन, स. 26)

दिखा हर बरस तू ह़रम की फ़ज़ाएं — तू मक्का मदीना दिखा या इलाही
शरफ़ हर बरस ह़ज का पाऊं ख़ुदाया — चले त़यबा फिर क़ाफ़िला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{12} क़बूलिय्यते दुआ़ में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई दुआ़ की क़बूलिय्यत में बेचैनी और जल्द बाज़ी का मुज़ा-हरा करते हैं ह़ालां कि दुआ़ के आदाब (Manners) में से येह भी है कि दुआ़ की क़बूलिय्यत में जल्दी न करे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि

बह्रो बर के बादशाह, दो आ़लम के शहन्शाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, आमिना के महरो माह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''बन्दे की दुआ़ क़बूल होती है जब तक कि गुनाह या क़त्एु रेह्मी की दुआ़ न मांगे जब तक कि जल्द बाज़ी से काम न ले।'' अ़र्ज़ किया गया : **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जल्द बाज़ी क्या है ? फ़रमाया : येह कि बन्दा कहे मैं ने दुआ़ मांगी और मांगी मगर मुझे मा'लूम नहीं कि क़बूल हो, लिहाज़ा वोह थक कर बैठ रहे और दुआ़ मांगना छोड़ दे।

(صحیح مسلم، کتاب الرقاق، باب بیان انہ یستجاب للداعی.....الخ، ص ۱۴۶۳، حدیث ۲۷۳۵)

क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर का एक सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बसा अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ़ की ताख़ीर में काफ़ी **मस्लह़तें भी** होती हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं। हुज़ूर, सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कोई प्यारा दुआ़ करता है तो **अल्लाह** तआ़ला जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) से इर्शाद फ़रमाता है : ''ठहरो ! अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ पसन्द है।'' और जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ दुआ़ करता है तो फ़रमाता : है : ''ऐ जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ! इस का काम जल्दी कर दो, ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ ना पसन्द है।''

(کنز العمال، ج ۲، ص ۳۹، حدیث ۳۲۶۱)

ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना यह्या बिन सईद बिन क़त्तान (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان) ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़्वाब में देखा, अ़र्ज़ की :

इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं अक्सर दुआ़ करता हूं और तू क़बूल नहीं फ़रमाता ? हुक्म हुवा :? "ऐ यह्या ! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूं। इस वासिते तेरी दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर करता हूं।"

(अह्सनुल विआ़अ, स. 35)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो ह़दीसे पाक और हिकायत गुज़री उस में येह बताया गया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपने नेक बन्दों की गिर्या व ज़ारी पसन्द है तो यूं भी बसा अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर होती है। अब इस मस्लह़त को हम कैसे समझ सकते हैं ! बहर ह़ाल जल्दी नहीं मचानी चाहिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{13} बद दुआ़ में जल्द बाज़ी

यक़ीनन दुआ़ मोमिन का हथियार (Weapon) है लेकिन बा'ज़ इस्लामी भाई गुस्से में आ कर जल्द बाज़ी में उसे अपने या अपने घर वालों या दीगर मुसल्मानों के ख़िलाफ़ इस्ति'माल कर डालते हैं फिर पछताते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 15 सूरए बनी इस्राईल की आयत 11 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ يَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿۱۱﴾

(پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और आदमी बुराई की दुआ़ करता है जैसे भलाई मांगता है और आदमी बड़ा जल्द बाज़ है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی इस आयत के तह़त लिखते हैं : (या'नी) अपने लिये और अपने घर वालों के लिये और अपने माल

के लिये और अपनी औलाद के लिये और गुस्से में आ कर इन सब को कोस्ता रहे और इन के लिये बद दुआ़एं करता है। अगर **अल्लाह** तआ़ला उस की येह बद दुआ़ क़बूल कर ले तो वोह शख़्स या उस के अह्ल व माल हलाक हो जाएं लेकिन **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से इस को क़बूल नहीं फ़रमाता। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

बद दुआ़ जल्द क़बूल न होना हमारे लिये रह़मत है

पारह 11 सूरए यूनुस की आयत 11 में इर्शाद होता है :

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۱﴾

(پارہ ۱۱، یونس: ۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर **अल्लाह** लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वोह भलाई की जल्दी करते हैं तो उन का वा'दा पूरा हो चुका होता तो हम छोड़ते उन्हें जो हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते कि अपनी सरकशी में भटका करें।

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिदुना मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी अगर **अल्लाह** तआ़ला लोगों की बद दुआ़एं जैसे कि वोह ग़ज़ब के वक़्त अपने लिये और अपने अह्ल व औलाद व माल के लिये करते हैं और कहते हैं हम हलाक हो जाएं, ख़ुदा हमें ग़ारत करे, बरबाद करे और ऐसे कलिमे ही अपनी औलाद व अक़ारिब के लिये कह गुज़रते हैं जिसे हिन्दी में कोस्ना कहते हैं, अगर वोह दुआ़ ऐसी जल्दी क़बूल कर ली जाती जैसी जल्दी वोह दुआ़ए

ख़ैर के क़बूल होने में चाहते हैं तो उन लोगों का ख़ातिमा हो चुका होता और वोह कब के हलाक हो गए होते लेकिन **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला अपने करम से दुआ़ए ख़ैर क़बूल फ़रमाने में जल्दी करता है, दुआ़ए बद के क़बूल में नहीं, येह उस की रह़मत है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

जल्दी से बद दुआ़ कर देता

कोई शख़्स एक शैख़े वक़्त की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और बहुत ज़ियादा ख़िदमत गुज़ारी के बा'द येह दर-ख़्वास्त पेश की, कि आप मुझे इस्मे आ'ज़म सिखा दीजिये। शैख़ ने पूछा : क्या तुम्हारे अन्दर इस की अह्लिय्यत है ? अ़र्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : अच्छा ! तुम शहर के फाटक पर जाओ और जो मन्ज़र देखो आ कर मुझे इस की ख़बर दो। येह शख़्स शहर के दरवाज़े पर जा कर बैठ गया तो देखा कि एक लकड़-हारा अपने गधे पर लकड़ियां लाद कर चला आ रहा था तो एक सिपाही ने बिला क़ुसूर उस को मार कर उस की लकड़ियों को छीन लिया और वोह लकड़-हारा ख़ामोश हो कर चला गया। उस शख़्स ने आंखों देखा ह़ाल शैख़ को सुना दिया। शैख़ ने पूछा : अगर तुम इस्मे आ'ज़म जानते होते तो इस मौक़अ़ पर तुम क्या करते ? उस ने कहा : मैं उस ज़ालिम सिपाही के ह़क़ में ऐसी बद दुआ़ करता कि वोह हलाक हो जाता। शैख़ ने कहा : तुम में इस्मे आ'ज़म सीखने की सलाह़िय्यत नहीं है, तुम्हें क्या मा'लूम ! मुझे इस्मे आ'ज़म सिखाने वाले वोही बुज़ुर्ग हैं जो तुम्हें लकड़-हारे के रूप में दिखाई दिये, याद रखो ! इस्मे आ'ज़म की सलाह़िय्यत वोही शख़्स रखता है जो इतना साबिर और मख़्लूक़े ख़ुदा पर इस क़दर रह़ीम व शफ़ीक़ हो। (روح البیان، ج۱ص۳۳۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

{14} दुरूदे पाक लिखने पढ़ने में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई कलाम या तह़रीर के दौरान नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे अक़्दस ज़बान से लेते या काग़ज़ वग़ैरा पर लिखते हुए जल्द बाज़ी में मुकम्मल दुरूदे पाक की जगह ''صلعم'' वग़ैरा बोल या लिख देते हैं ऐसा करना मक्रूह और शदीद मह़रूमी का बाइस है, **याद रखिये !** ''صلعم'' एक मुह़मल कलिमा है, इस के कोई मा'ना नहीं बनते। (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 50, मुलख़्ख़सन) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे पाक के साथ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बजाए (صلعم) लिखने वाले की इस्लाह़ करते हुए फ़रमाते हैं : ''येह जहालत आज कल बहुत जल्द बाज़ों में राइज है। कोई ''صلعم'' लिखता है कोई ''عـــم'' कोई ''ص'' और येह सब बेहूदा व मक्रूह व सख़्त ना पसन्द व मूजिबे महरूमी शदीद है इस से बहुत सख़्त एह़तिराज़ चाहिये अगर तह़रीर में हज़ार जगह नामे पाक हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم आए हर जगह पूरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم लिखा जाए हरगिज़ हरगिज़ कहीं ''صلعم'' वग़ैरा न हो उ-लमा ने इस से सख़्त मुमा-न-अत फ़रमाई है यहां तक कि बा'ज़ किताबों में तो बहुत अशद हुक्म लिख दिया है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 221,222)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आज कल कैसा नाज़ुक दौर है। फ़ुज़ूल मज़ामीन में तो हज़ारहा सफ़ह़ात सियाह कर दिये जाते हैं लेकिन जब मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का प्यारा इस्मे गिरामी आता है तो ''صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم'' की मुख़्तसर इबारत लिखने में सुस्ती कर जाते हैं। आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن इस पर तम्बीह

(Warn) करते हुए लिखते हैं : ''एक ज़र्रा सियाही या एक उंगल काग़ज़ या एक सेकन्ड वक़्त बचाने के लिये कैसी कैसी अ़ज़ीम ब-रकात से दूर पड़ते और महरूमी व बे नसीबी का डांडा (सिरा) पकड़ते हैं।'' (फ़तावा अफ़्रीक़ा,स. 50)

''صَلعَم'' लिखना महरूमों का काम है

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन शहाबुद्दीन बिन ह़जर हैतमी मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي ''फ़तावा ह़दीसिया'' में लिखते हैं : रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्मे गिरामी के बा'द صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم लिखा जाए कि यूं ही तमाम सलफ़ सालिह़ीन का त़रीक़ा चला आ रहा है। लिखते वक़्त इस को इख़्तिसार कर के ''صلعم'' न लिखा जाए कि येह महरूम लोगों का काम है।''

(فتاوی حدیثیہ، مطلب فی بیان کیفیۃ وضع الکتب ص ۳۰۶)

''صَلعَم'' के मूजिद का हाथ काटा गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : ''पहला शख़्स जिस ने दुरूद शरीफ़ का इख़्तिसार (Shortcut) ईजाद किया उस का हाथ काट दिया गया।'' (تدریب الراوی للسیوطی النوع خامس والعشرون ص ۲۸۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नामे मुबारक के साथ भी عَزَّوَجَلَّ या جَلَّ جَلَالُه पूरा लिखें। आधे जीम (ج) पर इक्तिफ़ा न करें।

(حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار ج ۱ ص ۶ مفہوما)

दुरूदे पाक के अल्फ़ाज़ चबाने से भी बचिये

बा'ज़ इस्लामी भाई दौराने बयान या गुफ़्त-गू करते हुए दुरूदे पाक पढ़ते तो मुकम्मल हैं लेकिन जल्द बाज़ी की वजह से दुरूदे पाक के अल्फ़ाज़ चब कर अदा होते हैं, उस त़रह़ नहीं करना चाहिये लिहाज़ा जब भी दौराने गुफ़्त-गू या बयान दुरूदे पाक पर पहुंचने लगें फ़ौरन ज़ेह्न बना लें कि "अब रफ़्तार आहिस्ता कर के दुरुस्त त़रीक़े से दुरूदे पाक अदा करना है।" इस त़रह़ पहले ही ज़ेह्नी त़ौर पर तय्यार रहने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द सह़ीह़ अदाएगी पर क़ुदरत ह़ासिल हो जाएगी।

ठहर ठहर कर उ़म्दगी से पढ़ो

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल मुवाहिब शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : एक दफ़्अ़ मैं ने तेज़ी से हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा ताकि अपना विर्द जो एक हज़ार था मुकम्मल कर लूं, तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे (ख़्वाब में) इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि जल्दी करना शैत़ान की त़रफ़ से है ? फिर फ़रमाया : इत़्मीनान से ठहर ठहर कर उ़म्दगी के साथ येह पढ़ो : "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ" मगर जब वक़्त तंग हो तो जल्दी पढ़ने में ह़रज नहीं। (الطبقات الکبری للشعرانی حصہ ۲ ص ۱۰۱ تا ۱۰۲)

है कभी दुरूदो सलाम तो, कभी ना'त लब पे सजी रही
ग़मे हिज्र में कभी रो पड़ा, कभी ह़ाज़िरी की ख़ुशी रही

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{15} वज़ीफ़े के नतीजे की त़लब में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई जब कोई वज़ीफ़ा शुरूअ़ करते हैं तो उन की ख़्वाहिश होती है कि एक ही दिन में इस की ब-र-कतें (Blessings) ज़ाहिर होना शुरूअ़ हो जाएं और यूं वज़ीफ़े के नतीजे की त़लब में जल्द बाज़ी की वजह से इस्तिक़ामत (Consistency) रुख़्सत हो जाती है और फ़वाइद से मह़रूम रहना पड़ता है, याद रखिये कि अवरादो वज़ाइफ़ की तासीर के लिये कम अज़ कम 3 शराइत़ (Conditions) का पाया जाना ज़रूरी है चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 के सफ़ह़ा 558 पर फ़रमाते हैं : वज़ाइफ़ो आ'माल के असर करने में तीन शराइत़ (Conditions) ज़रूरी हैं :

(1) **ह़ुस्ने ए'तिक़ाद,** दिल में दग़-दग़ा (या'नी ख़दशा) न हो कि देखिये असर होता है या नहीं ? बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम पर पूरा भरोसा हो कि ज़रूर इजाबत (या'नी क़बूल) फ़रमाएगा। ह़दीस में है : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اُدْعُوا اللّٰهَ وَاَنْتُمْ مُوْقِنُوْنَ بِالْاِجَابَةِ या'नी **अल्लाह** तआ़ला से इस ह़ाल पर दुआ़ करो कि तुम्हें इज़ाबत (या'नी क़बूलिय्यत) का यक़ीन हो।

(سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج۵ ص۲۹۲ حدیث۳۴۹۰)

(2) **सब्रो तह़म्मुल,** दिन गुज़रें तो घबराएं नहीं कि इतने दिन पढ़ते गुज़रे अभी कुछ असर ज़ाहिर न हुवा ! यूं इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत) बन्द कर दी जाती है बल्कि लिपटा रहे और लौ लगाए रहे कि अब **अल्लाह व रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم) अपना फ़ज़्ल करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَیُؤْتِیْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿۵۹﴾
(پ ۱۰، التوبة: ۵۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और क्या अच्छा होता अगर वोह उस पर राज़ी होते जो **अल्लाह व रसूल** ने उन को दिया और कहते हमें **अल्लाह** काफ़ी है, अब देता है हमें **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से और **अल्लाह** का **रसूल, अल्लाह** ही की त़रफ़ रग़बत है।

ह़दीस में है : **يُسْتَجَابُ لِاَحَدِكُمْ مَالَمْ يَعْجِلْ فَيَقُوْلُ قَدْ دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِيْ** या'नी तुम्हारी दुआएं क़बूल होती हैं जब तक जल्दी न करो कि मैं ने दुआ की और अब तक क़बूल न हुई।

(صحیح مسلم ص ۱۴۶۳ حدیث ۲۷۳۵)

(3) मेरे (या'नी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के) यहां की जुम्ला इजाज़त व वज़ाइफ़ो आ'माल व ता'वीज़ात में शर्त़ है कि नमाज़े पन्जगाना बा जमाअ़त मस्जिद में अदा करने की कामिल पाबन्दी रहे। وبالله التوفيق

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{16} दुन्या की त़लब में जल्द बाज़ी

बहुत से इस्लामी भाइयों की ख़्वाहिश होती है कि वोह जल्द अज़ जल्द अपनी मन पसन्द (Favourite) दुन्यावी चीज़ ह़ासिल कर लें, ह़ालां कि हर तमन्ना पूरी होने की ख़्वाहिश नादानी है, पारह 15 सूरए बनी इस्राईल की आयत : 18 में इर्शाद होता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾

(پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो येह जल्दी वाली चाहे हम उसे इस में जल्द दे दें जो चाहें जिसे चाहें फिर उस के लिये जहन्नम कर दें कि उस में जाए मज़म्मत किया हुवा धक्के खाता।

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिदुना मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : येह ज़रूरी नहीं कि त़ालिबे दुन्या की हर ख़्वाहिश पूरी की जाए और इसे दिया ही जाए और जो वोह मांगे वोही दिया जाए ऐसा नहीं है बल्कि उन में से जिसे चाहते हैं देते हैं और जो चाहते हैं देते हैं, कभी ऐसा होता है कि मह़रूम कर देते हैं, और कभी ऐसा होता है कि वोह बहुत चाहता है और थोड़ा देते हैं, कभी ऐसा कि ऐ़श चाहता है तक्लीफ़ देते हैं, इन ह़ालतों में काफ़िर दुन्या व आख़िरत दोनों के टोटे (या'नी नुक़्सान) में रहा और अगर दुन्या में उस को इस की पूरी मुराद दे दी गई तो आख़िरत की बद नसीबी व शक़ावत जब भी है ब ख़िलाफ़ मोमिन के जो आख़िरत का त़लब गार है अगर वोह दुन्या में फ़क़्र से भी बसर कर गया तो आख़िरत की दाइमी ने'मत इस के लिये है और अगर दुन्या में भी फ़ज़्ले इलाही से इस को ऐ़श मिला तो दोनों जहान में काम्याब, ग़रज़ मोमिन हर ह़ाल में काम्याब है और काफ़िर अगर दुन्या में आराम पा भी ले तो भी क्या ? (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर
कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{17} रिश्ता तै़ करने में जल्द बाज़ी

शादी (Marriage) कहां करनी है ? येह इन्सान की ज़िन्दगी का एक अहम फ़ैसला (Decision) होता है जिस के अ–सरात आयन्दा नस्लों (Generations) पर भी पड़ते हैं, बा'ज़ इस्लामी भाई या उन के वालिदैन इस अहम फ़ैसले को भी जल्द बाज़ी की भेंट चढ़ा देते हैं और ज़ाहिरी चमक दमक और दौलत की चका चौंद से मु–तअस्सिर हो कर वक़्ती जज़्बात की रौ में बह कर रिश्ते के लिये हां कर देते हैं लेकिन बा'द में पोल खुलते हैं तो पछतावा उन का मुक़द्दर होता है । निकाह़ कहां करना चाहिये ? इस के बारे में शरीअ़त में वाज़ेह़ रहनुमाई (Guidance) मौजूद है, चुनान्चे मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें एक म–दनी फूल येह अ़त़ा फ़रमाया है कि ''किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये चार चीज़ों को मद्दे नज़र रखा जाता है : (1) उस का माल (2) ह़सब नसब (3) हुस्नो जमाल और (4) दीन ।'' फिर फ़रमाया : '' فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّيْنِ '' या'नी तुम दीनदार औ़रत के हुसूल की कोशिश करो ।'' (بخاری، کتاب النکاح، الحدیث:۵۰۹۰، ج۳،ص۴۲۹) इसी त़रह़ बेटी का रिश्ता तै़ करने के ह़वाले से ह़ज़रते सय्यि–दतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाती हैं : ''निकाह़ करना औ़रत को कनीज़ बनाना है, लिहाज़ा ग़ौर कर लेना चाहिये कि वोह अपनी बेटी को कहां बियाह रहा है ।'' (السنن الکبریٰ، کتاب النکاح، الحدیث:۱۳۴۸۱، ج۷، ص۱۳۲) ह़ज़रते अ़ल्लामा शा'बी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से रिवायत है : ''जिस ने अपनी बेटी का निकाह़ किसी फ़ासिक़ से किया उस ने क़त़ए़ रेह़्मी की ।''

(شعب الایمان للبیہقی، الحدیث ۸۷۰۷، ج ۶، ص ۴۱۲) इस लिये मुनासिब ग़ौरो फ़िक्र के बा'द ही रिश्ता तै़ करना चाहिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

{18} इद्दत वाली को पैग़ामे निकाह़ देने में जल्द बाज़ी

जो औ़रत इद्दत में हो उस के पास सरा-ह़तन निकाह़ का पैग़ाम देना ह़राम है अगर्चे निकाह़े फ़ासिद की इद्दत में हो और मौत कि इद्दत हो तो इशारतन कह सकते हैं और त़लाक़े रज्ई या बाइन या फ़स्ख़ (या'नी निकाह़ ख़त्म होने) की इद्दत में इशारतन भी नहीं कह सकते और वत़ी बिश्शुब्हा या निकाह़े फ़ासिद की इद्दत में इशारतन कह सकते हैं। इशारतन कहने की सूरत येह है कि कहे मैं निकाह़ करना चाहता हूं मगर येह न कहे कि तुझ से, वरना सराह़त हो जाएगी या कहे मैं ऐसी औ़रत से निकाह़ करना चाहता हूं जिस में येह येह वस्फ़ हों और वोह औसाफ़ बयान करे जो उस औ़रत में हैं या (येह कहे कि) मुझे तुझ जैसी कहा मिलेगी।[1] (बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा 8, स. 244)

इद्दत : निकाह़ ज़ाइल होने या शुब्हे निकाह़ या ख़ावन्द की वफ़ात के बा'द औ़रत का निकाह़ से मम्नूअ़ होना और एक ज़माना तक इन्तिज़ार करना इद्दत है। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा 8, स. 234 मुल्तक़त़न) **वत़ी बिश्शुब्हा :** शुबा के साथ वत़ी करना, या'नी औ़रत ह़लाल न हो मगर उसे ह़लाल समझ कर वत़ी करना म-सलन अपनी औ़रत को तीन त़लाक़ें देने के बा'द उस के साथ इद्दत में वत़ी कर ले येह समझ कर कि इद्दत के अन्दर वत़ी ह़लाल है, येह वत़ी बिश्शुब्हा है। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा 8, स. 237) **निकाह़े फ़ासिद :** ऐसा निकाह़ जिस में निकाह़े सह़ीह़ की शर्तों में से कोई एक शर्त़ न पाई जाए म-सलन बिग़ैर गवाहों के निकाह़ करना। (ردالمحتار، ج ۵، ص ۴۳) **त़लाक़े रज्ई :** वोह त़लाक़ जिस में औ़रत इद्दत के गुज़ारने पर निकाह़ से बाहर हो। **त़लाक़े बाइन :** वोह त़लाक़ जिस की वजह से औ़रत मर्द के निकाह़ से फ़ौरन निकल जाती है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा 8, स. 110)

{19} इलाज करवाने में जल्द बाज़ी

आज के दौर में कौन है जो बीमार नहीं होता ? मगर बीमार होने वाला हर दूसरा शख़्स चाहता है कि में एक दम सिह़्ह़तयाब (Healthy) हो जाऊं, इस के लिये आज एक डॉक्टर (Doctor) से तो कल दूसरे डॉक्टर से आज एक अस्पताल (Hospital) तो कल दूसरे अस्पताल में इलाज कराते दिखाई देता है ह़ालां कि हर मरज़ (Disease) की अपनी अपनी नोइय्यत होती है, जिस त़रह़ कोई मरीज़ सिर्फ़ एक गोली (Tablet) के इस्ति'माल से सिह़्ह़तयाब हो जाता है तो किसी को कोर्स की सूरत में दवाई (Medicine) इस्ति'माल करना पड़ती है और शिफ़ायाब होने में कई हफ़्ते या महीने बल्कि पूरा साल लग जाता है। मगर इस जल्द बाज़ी की वजह से उ़मूमन केस (Case) बिगड़ जाता है क्यूं कि हर डॉक्टर नए सिरे से उस का इलाज करता है फिर जब वोह उस के मरज़ को क़ाबू करने की पोज़ीशन (Position) में होता है येह जल्द बाज़ मरीज़ किसी और डॉक्टर के दरवाज़े पर दस्तक दे देता है, यूं अपनी जल्द बाज़ी की वजह से अपनी सिह़्ह़तयाबी में ताख़ीर का सबब बनता है। येही ह़ाल रूह़ानी इलाज (Spiritual treatment) करवाने वालों का है कि जब डॉक्टरी इलाज से बद दिल हो जाते हैं तो इधर का रुख़ करते हैं और चाहते हैं कि आनन फ़ानन एक ही दम में वोह तन्दुरुस्त हो जाएं ह़ालां कि रूह़ानी इलाज में भी मुम्किन है कोई मरीज़ सिर्फ़ दम कर देने से ही शिफ़ायाब हो जाए और किसी मरीज़ को चन्द दिन, हफ़्तों या कई माह बा'द सिह़्ह़त ह़ासिल हो, **बहर ह़ाल हमें रूह़ानी इलाज तर्क नहीं**

करना चाहिये । काश ! डॉक्टरों की तज्वीज़ कर्दा दवाओं की तासीर पर यक़ीन के साथ शरीअ़त के पाबन्द आ़मिलीन के पेश कर्दा अवराद व ता'वीज़ात भी कामिल यक़ीन के साथ इस्ति'माल करने का सिल्सिला रहता तो शिफ़ा का हुसूल आसान हो जाता । मगर येह भी ध्यान रहे कि बिग़ैर सोचे समझे हर आ़मिल से राबिते़ में भी शदीद ख़त़रात हैं । यक़ीनन हर आ़मिल ग़लत़ नहीं होता मगर सह़ीह़ आ़मिल की पहचान हर एक के बस की बात नहीं । रूह़ानी इ़लाज के लिये आप दा'वते इस्लामी की मजलिसे मक्तूबाते ता'वीज़ात के बस्ते से अपने अपने शहर में राबित़ा (Contact) कर सकते हैं या इस पते पर ब ज़रीअ़ए डाक राबित़ा कीजिये : मजलिसे मक्तूबाते ता'वीज़ात आ़लमी म–दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना मह़ल्ला सौदागरान यूनीवर्सिटी रोड बाबुल मदीना कराची, ब ज़रीअ़ए ई मेइल भी ता'वीज़ात मंगवाए जा सकते हैं । ई मेइल एड्रेस येह है : attar@dawateislamil.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{20} मु–तअस्सिर होने में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई जब किसी रंग बिरंगे जुब्बे में मल्बूस, गरदन में मोटे मोटे दानों वाली कई तस्बीह़ात व मालाएं और उंग्लियों में मु–तअ़द्दद अंगूठी छल्ले पहने हुए शख़्स को देखते हैं जिस की जुल्फ़ें सांप की मिस्ल कन्धे से नीचे झूल रही हों, हाथ में मोटा सा डन्डा पकड़े, हाथ पाउं में कड़े डाले हुए हो, आंखें बन्द और सर झुका कर वक़्फ़े वक़्फ़े से ''ह़क़ हू, ह़क़ हू'' के ना'रे बुलन्द कर रहा हो तो उस के सरापे के बाइ़स बहुत जल्द उस से मु–तअस्सिर हो जाते हैं और उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली समझ बैठते हैं । फिर उस के

कहने पर अ़मल करने में भी जल्द बाज़ी करते हैं और नुक़्सान उठाते हैं, ह़ालां कि वोह शख़्स शो'बदा बाज़ होता है, शो'बदा बाज़ी की **5** इ़ब्रत अंगेज़ सच्ची ह़िकायात मुला-ह़ज़ा हों :

﴾1﴿ बाबा दिल देखता है

एक इस्लामी भाई ने बताया कि तक़्रीबन 1998 सि.ई. की बात है कि मैं जूतों की दुकान (Shoes Shop) में नोकरी करता था। एक दिन सुब्ह़ के वक़्त एक शख़्स दुकान में आया जिस ने गले में माला डाली हुई थी और सर पर रुमाल ओढ़ा हुवा था, लिबास भी साफ़ सुथरा था, हाथों में कई अंगूठियां थीं। वोह आ कर सेठ के सामने वाली कुरसी पर बैठ गया। इस से पहले कि हम उस से कुछ मा'लूम करते, सेठ ने ख़ुद ही उस से पूछा : बाबा क्या चाहिये ? मगर उस शख़्स ने कोई जवाब न दिया बल्कि सेठ को घूरने लगा, सेठ के बार बार पूछने के बा वुजूद वोह ख़ामोश ही रहा। सेठ ने एक बार फिर पूछा : बाबा क्या लेना है ? अब वोह बाबा धीमे और पुर असरार लहजे में बोला : बाबा तेरी क़मीस लेगा, बोल ! देगा ? सेठ घबरा सा गया और बोला : बाबा मेरी क़मीस पुरानी है, नई क़मीस मंगवा देता हूं। मगर वोह बोला "नहीं ! बाबा तेरी ही क़मीस लेगा, बोल ! देगा ?" आख़िर सेठ ने परेशान हो कर क़मीस उतारना ही चाही तो वोह फ़ौरन बोला : रहने दे ! बाबा दिल देखता है। फिर कुछ देर ख़ामोश रह कर बोला : बाबा ! तेरे जूते लेगा, बोल ! देगा ? सेठ बोला : बाबा ! मेरे जूते बहुत पुराने हैं नए जूते दे देता हूं, वोह बोला : "नहीं ! बाबा तेरे ही जूते लेगा, बोल ! देगा ?" सेठ अपने जूते देने लगा, तो वोह एक दम बोला : नहीं ! बाबा दिल देखता है, अपने जूते

अपने पास रख, बाबा दिल देखता है ! फिर कुछ देर टिकटिकी बांधे घूर घूर कर सेठ को देखता रहा, सेठ ने घबरा कर पूछा : बाबा क्या चाहिये ? बोला : ''जो मांगूंगा देगा ?'' सेठ बोला : बाबा आप बोलो क्या लेना है ? वोह कुछ देर ख़ामोश रहा फिर बोला : अगर मैं येह बोलूं कि अपनी जेब के सारे पैसे दे दे तो क्या तू बाबा को दे देगा ? अब सेठ चौंका, मगर शायद उस शख़्स ने कोई अ़मल किया हुवा था, चुनान्चे सेठ ने जेब में हाथ डाला और जेब की तमाम रक़म निकाल कर उस के सामने रख दी। उस बाबा नुमा शख़्स ने नोट हाथ में लिये और कुछ देर उलट पलट कर देखता रहा फिर बोला : बाबा दिल देखता है ! ले अपने पैसे वापस ले, बाबा पैसों का क्या करेगा ? बाबा दिल देखता है, येह कहते हुए तमाम नोट वापस कर दिये और ख़ामोश टिकटिकी बांधे सेठ को घूरने लगा और कुछ देर बा'द मुस्कुरा कर बोला : अगर बाबा तुझ से तेरी तिजोरी की सारी रक़म मांगे तो क्या बाबा को दे देगा ? बोल ! बाबा दिल देखता है, बोल ! दे देगा ? चूंकि अब तक वोह बाबा नुमा पुर असरार शख़्स तमाम चीज़ें मांगने के बा'द ''बाबा दिल देखता है'' कह कर वापस कर चुका था, लिहाज़ा सेठ ने ताख़ीर किये बिग़ैर तिजोरी ख़ाली करना शुरूअ़ कर दी। उस शख़्स ने अपना रुमाल सामने बिछा दिया और रक़म उस में रखने लगा। फिर उस को बांध कर गांठ लगा दी और मुस्कुरा कर बोला : बाबा अगर येह सारी रक़म ले जाए तो तुझे बुरा तो नहीं लगेगा ? सेठ बोला : बाबा ! मैं ने पैसे आप को दे दिये हैं, अब आप जो चाहे करें। वोह फिर बोला : नहीं ! तू येह सोच रहा है कि कहीं येह रक़म ले न जाए, बाबा दिल देखता है, बाबा दिल देखता है, बाबा दिल देखता है, कहते

कहते वोह पुर असरार अन्दाज़ में पोटली हाथ में लिये उठा और दुकान से नीचे उतर गया। हम सब सक्ते के आ़लम में कुछ देर तो एक दूसरे के चेहरे देखते रहे फिर एक दम सेठ चीख़ा : अरे ! वोह शख़्स मुझे लूट कर चला गया, उसे पकड़ो। मगर बाहर जा कर देखा तो वोह पुर असरार शख़्स ग़ाइब हो चुका था, बहुत तलाश किया लेकिन वोह शख़्स न मिला, यूं सेठ हज़ारों की रक़म गंवा बैठा।

﴾2﴿ पुर असरार बूढ़ा

एक इस्लामी भाई ने बताया कि ग़ालिबन 1991 सि.ई. की बात है मैं नया नया दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हुवा था और गवर्नमेन्ट स्कूल में बतौ़रे उस्ताद (Teacher) मुला-ज़मत थी। एक दिन मैं अपने द-रजे (क्लास, Class) में बच्चों को पढ़ा रहा था कि अचानक एक पुर असरार बूढ़ा जिस की दाढ़ी के बाल आपस में उलझे हुए थे, सर नंगा था, बोसीदा कपड़ों में मल्बूस चेहरे पर चश्मा लगाए कमरे में दाख़िल हुवा और क़रीब आ कर कहने लगा : बेटा ! मदीने जाएगा, बेटा ! मदीने जाएगा। म-दनी माहोल की ब-र-कत से चल मदीना की ख़्वाहिश तो पैदा हो चुकी थी। लिहाज़ा येह सुन कर मैं उस की जानिब मु-तवज्जेह हुवा। पुर असरार बूढ़े ने क़रीब आ कर गुफ़्त-गू करते करते सामने रखी कॉपी में से ख़ाली काग़ज़ का एक टुकड़ा फाड़ कर लपेटा और मेरे हाथ में दे दिया। मैं ने उसे खोला तो उस में ता'वीज़ की त़रह़ गहरे सुर्ख़ रंग की तह़रीर मौजूद थी, जिस में "मदीने जाएगा" वग़ैरा लिखा हुवा था। मैं चूंकि इस त़रह़ की नज़र बन्दी के वाक़िआ़त सुन चुका था, लिहाज़ा मोह़तात़ हो कर कहने लगा : बाबा ! बस दुआ़ करें। वोह बड़े पुर असरार अन्दाज़

में क़रीब आ कर बोला : बेटा ! बाबा को पैसे नहीं देगा ? बाबा दुआ़ करेगा। मेरी जेब में उस वक़्त **2** रुपै थे, जो मैं ने उसे दे दिये, वोह बोला : बस ! इतने कम, येह कहते कहते उस ने नोट हाथ में लिया और ऊपर की जानिब ले जा कर मेरा हाथ पकड़ा और मेरी हथेली फैला कर ऊपर अपने हाथ से नोट को दबाया तो ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर उस नोट में से पानी टपक्ना शुरूअ़ हो गया, ह़त्ता कि मेरी हथेली पानी से भर गई। मैं ने घबरा कर पानी नीचे गिरा दिया। वोह मुझ से मायूस हो कर मुझे घूरता हुवा हेड मास्टर के कमरे में जा पहुंचा, उस के सामने भी शो'बदे बाज़ी करता रहा। म-सलन कंकर उठा कर हेड मास्टर के मुंह में रखा तो वोह शकर बन गई। उस ने कुछ पैसे हेड मास्टर से और कुछ दीगर असातिज़ा (टीचर्ज़) से धोके के ज़रीए़ ह़ासिल किये और देखते ही देखते स्कूल से बाहर निकला और ग़ाइब हो गया।

﴾3﴿ फ़क़ीर दुआ़ करेगा

एक इस्लामी भाई ने बताया कि मैं एक पेन्टर हूं। कमो बेश **10:00** बजे सुब्ह़ मैं अपनी दुकान में एक बोर्ड (Board) पर लिखाई में मस्रूफ़ था कि पीछे से सलाम की आवाज़ आई मैं ने जवाब देते हुए मुड़ कर देखा तो सामने एक शख़्स खड़ा था जिस के सर पर सफ़ेद टोपी थी, चेहरे पर शेव बढ़ी हुई थी, काले रंग का लम्बा कुरता पहना हुवा था। मैं समझा कोई फ़क़ीर है, लिहाज़ा ! मैं ने उसे कुछ पैसे दे कर फ़ारिग़ करना चाहा तो अ़जीब अन्दाज़ में मुस्कुराया और कहने लगा : मैं पैसे लेने वाला फ़क़ीर नहीं, मैं तो क़लन्दर साईं का फ़क़ीर हूं, क़लन्दर साईं के पास जा रहा था, तुझे देखा तो मिलने चला

आया, बोल ! क्या मांगता है ? बाबा देने आया है । मैं बोला बाबा दुआ़ करो, येह सुन कर उस ने सामने रखा छोटा सा लकड़ी का टुकड़ा उठाया और मुंह में चबा कर कुछ देर बा'द बाहर निकाला तो वोह इलायची की सूरत इख़्तियार कर चुका था । मैं बड़ा मु-तअस्सिर हुवा और समझा येह कोई "**अल्लाह** वाला" है जो आज मेरे नसीब जगाने आया है । उस ने मुझे वोह इलायची खाने के लिये दी तो मैं ने मुंह में रख ली और कहा ! आप बैठिये मैं चाय मंगवाता हूं, मगर उस ने कहा : फ़क़ीर चाय नहीं पीता, बोल ! तू क्या मांगता है ? मुझे तू परेशान लगता है, दुश्मनों ने बांध रखा है, फ़क़ीर आज देने आया है, मांग क्या मांगता है ? मैं ने फिर दुआ़ के लिये अ़र्ज़ की तो कहने लगा : फ़क़ीर क़लन्दर साईं के दरबार पर जाएगा, नियाज़ करेगा, तेरे लिये दुआ़ करेगा तू नियाज़ के लिये पैसे देगा ? पैसे मांगने पर मैं चौंका मगर येह सोच कर ख़ामोश रहा कि हो सकता है येह कोई **अल्लाह** वाला हो और मुझे आज़मा रहा हो । लिहाज़ा मैं ने **100** रुपै निकाल कर दिये तो बोला, इतने कम पैसे ! साईं क़लन्दर का मुआ़-मला है, फ़क़ीर दुआ़ करेगा, फ़क़ीर देने आया है, बोल ! क्या मांगता है ? क़लन्दर साईं की नियाज़ के लिये और पैसे दे ताकि फ़क़ीर ख़ुश हो कर दुआ़ करे, फ़क़ीर को ख़ुश नहीं करेगा ? मैं ने **100** रुपै और निकाल कर दे दिये, मगर उस ने शायद मेरी जेब में मज़ीद रक़म देख ली थी, लिहाज़ा उस का इस्रार जारी रहा मुझ पर अब अ़जीब घबराहट सी त़ारी हो गई थी, लिहाज़ा मैं ने **100** रुपै मज़ीद दिये और हिम्मत कर के ज़रा सख़्त लहजे में कहा : बस बाबा ! मैं इस से ज़ियादा नहीं दे सकता, आप जाओ मेरे लिये दुआ़ करना, इस पर वोह येह कहते हुए दुकान से नीचे उतर गया

''फ़क़ीर देने आया है, बोल क्या मांगता है ? फ़क़ीर दुआ करेगा, फ़क़ीर दुआ करेगा, क़लन्दर साईं का मुआ-मला है, बोल क्या मांगता है ? फ़क़ीर दुआ करेगा।'' मुझे बा'द में बड़ा अफ़्सोस हुवा कि वोह मुझे बे वुक़ूफ़ बना कर 300 रुपै ले गया।

﴾4﴿ तकिये के नीचे 500 का नोट

एक इस्लामी भाई ने बताया कि ग़ालिबन 1975 सि.ई. की बात है मेरे दादाजान की उ़म्र कमो बेश **70** साल थी। वोह पंज वक़्ता नमाज़ी थे और चेहरे पर दाढ़ी भी थी। एक रोज़ वोह दो पहर के वक़्त किसी सुनसान गली से गुज़र रहे थे कि अचानक पीछे से दो अफ़्राद की तेज़ गुफ़्त-गू सुनाई दी। उन्हों ने पीछे मुड़ कर देखा तो एक शख़्स दिखाई दिया जिस ने सर पर रुमाल ओढ़ रखा था, चेहरे पर दाढ़ी थी, लिबास भी साफ़ सुथरा था, वोह तेज़ रफ़्तारी से चल रहा था और पीछे एक शख़्स आ़जिज़ी के साथ कुछ अ़र्ज़ कर रहा था। जब येह लोग मेरे दादा के क़रीब पहुंचे तो अ़र्ज़ करने वाला शख़्स दादा से मुख़ातब हो कर कहने लगा : हुज़ूर ! इन से मेरी सिफ़ारिश कर दें, मैं ग़रीब आदमी हूं, इन्हों ने मुझे एक ''विर्द'' पढ़ने के लिये दिया था और कहा था कि किसी को बताना मत सुब्ह़ रोज़ाना तेरे तकिये के नीचे से **500** रुपै निकला करेंगे, यूं ''रोज़ाना पांच सो रुपै मिलने लगे'' मैं ख़ुशह़ाल हो गया, बस मुझ से येह ग़-लती हो गई कि येह बात मैं ने किसी को बता दी और वोह पैसे मिलना बन्द हो गए, आप इन से मेरी सिफ़ारिश कर दें। मेरे दादा ने रुमाल वाले शख़्स को कहा : बेचारा ग़रीब आदमी है, ग़-लती हो गई इस को

मुआ़फ़ कर दें, इस पर वोह उस शख़्स से बोला कि इन बुज़ुर्ग के कहने पर मुआ़फ़ कर रहा हूं, जा ! अब रोज़ाना दोबारा **500** रुपै मिलना शुरूअ़ हो जाएगा, मगर किसी से कहना मत। वोह शख़्स ख़ुशी ख़ुशी वहां से रवाना हो गया। अब गली में वोह शख़्स और मेरे दादा रह गए। वोह शख़्स मेरे दादा से कहने लगा : चाचा आप कुछ परेशान लग रहे हैं, मैं आप की क्या मदद कर सकता हूं ? दादा हुज़ूर जो मुआ़शी त़ौर पर इन्तिहाई परेशान थे, रो पड़े और उसे अपना ख़ैर ख़्वाह समझ कर अपनी परेशानी बताने लगे। उस ने मेरे दादा को तसल्ली देते हुए कहा : चाचा आप हिम्मत रखें सब ठीक हो जाएगा, आप के पास कुछ रक़म हो तो लाओ मैं उस पर दम कर दूं, उस से ऐसी ब-र-कत होगी कि तुम्हारी सारी परेशानियां दूर हो जाएंगी। दादा बेचारे क्या देते, उन की जेब में चन्द सिक्के थे वोही निकाल कर दिये कि इस पर दम कर दो। मगर वोह बोला : नोट नहीं हैं तो चलो आप के हाथ में जो घड़ी है वोही लाओ मैं इस पर दम कर देता हूं। दादा ने घड़ी हाथ से उतार कर उस को थमा दी। उस ने जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाला और उस में घड़ी डाली और दम कर के लिफ़ाफ़ा दादा के हाथ में दे दिया और कहा : इसे ले जा कर घर में रख दो और सुब्ह़ खोल कर देखना आप ह़ैरत ज़दा रह जाओगे, मगर सुब्ह़ तक बिल्कुल ख़ामोश रहना, एक लफ़्ज़ भी नहीं बोलना। फिर लिफ़ाफ़ा खोल कर देखना तो, इन्तिहाई ह़ैरत अंगेज़ मन्ज़र देखने को मिलेगा। बेचारे दादा हुज़ूर घर में आ कर बिल्कुल ख़ामोश हो गए। अब घर वाले बात करें तो वोह कोई जवाब ही न दें। सब घर वाले परेशान थे कि इन्हें क्या हो गया। ख़ैर जैसे तैसे रात गुज़ारी और सुब्ह़ दादा

ने जैसे ही लिफ़ाफ़ा खोल कर देखा तो उस शख़्स के कहने के बिल्कुल मुताबिक़ वाक़ेई दादा हैरत ज़दा रह गए क्यूं कि उस लिफ़ाफ़े में घड़ी की जगह दो पथ्थर रखे हुए थे। तब उन्हों ने सब घर वालों को अपनी ख़ामोशी की वजह बताई और अपने लुटने की दास्तान सुनाई।

﴾5﴿ दिल उछल कर हल्क़ में आ गया

मीरपूर ख़ास (सिन्ध) के मुक़ीम एक शख़्स ने बताया कि मैं एक दिन रेल्वे स्टेशन (Railway station) के क़रीब से गुज़र रहा था कि एक उधेड़ उम्र शख़्स ने मुझे इशारे से अपने क़रीब बुलाया। मैं समझा शायद येह कोई मुसाफ़िर (Passenger) है और रास्ता मा'लूम करना चाहता है। जब मैं उस के क़रीब पहुंचा तो उस ने पुर असरार अन्दाज़ में मेरा हाथ पकड़ा और मेरे कान में सरगोशी करते हुए वोह बात कही जिसे सिर्फ़ मैं जानता था या मेरे घर वाले। मैं वोह बात सुन कर चौंका तो वोह मुस्कुरा कर कहने लगा : और क्या जानना चाहता है ? **अल्लाह** वाले दिल की बातें जान लेते हैं, जा तेरी सारी परेशानियां ख़त्म हो जाएंगी, **अल्लाह** वाले की दुआ है, जा चला जा, तेरा सितारा बहुत जल्द चमकने वाला है। येह सुन कर मैं तो उस का गिरवीदा हो गया और बे साख़्ता उस के हाथ चूम लिये और कहने लगा कि आप **अल्लाह** वाले हैं, मुझ पर करम फ़रमा दें। येह सुन कर उस ने कुछ देर के लिये सर झुका लिया और फिर बोला : ला रक़म दे तो मैं "दुगनी" कर दूं। मैं ने फ़ौरन 100 का नोट उस के हाथ में दे दिया। उस ने वोह नोट हाथ में लिया और कुछ

पढ़ने के बा'द उस पर दम कर के मेरी हथेली पर रखा और मुठ्ठी बन्द कर दी। फिर कहा : "मुठ्ठी खोल.....!" जैसे ही मैं ने मुठ्ठी खोली तो हैरान रह गया कि उस में सो सो के दो नोट मौजूद थे। जब वोह शख़्स मुड़ कर जाने लगा तो मैं उस के पीछे लग गया कि बाबा आप मज़ीद करम करें। इस पर उस ने ना राज़गी वाले अन्दाज़ में कहा कि तू लालची हो गया है, दुन्या मुर्दार की मानिन्द है इस के पीछे मत पड़, नुक़्सान उठाएगा। मगर मेरा इस्रार जारी रहा तो उस ने कहा कि "अच्छा 1000 का नोट है तो निकाल।" मैं ने फ़ौरन जेब से 1000 का नोट निकाला और उस के हाथ में दे दिया। उस ने हस्बे साबिक़ दम कर के नोट मेरी मुठ्ठी में दबा दिया। मैं ने मुठ्ठी खोली तो हैरत अंगेज़ तौर पर मेरे हाथ में हज़ार हज़ार के दो नोट थे। मैं ने सोचा कि आज मौक़अ मिला है तो इस से पूरा फ़ाएदा उठाना चाहिये। लिहाज़ा मैं ने उस से कहा आप मेरे साथ मेरे घर चलें ताकि मैं आप की कुछ ख़िदमत वग़ैरा करूं। तो वोह कहने लगा कि ख़िदमत क्या करेगा, तूने घर की रक़म और ज़ेवरात दुगने कराने हैं। येह सुन कर मेरे दिल की कली खिल गई। मैं ने कहा : बाबा ! आप करम फ़रमाएं। वोह कहने लगा : **अल्लाह** वाले दुन्या से सरोकार नहीं रखते, घरों पर नहीं जाते, जा घर जा और रक़म व ज़ेवरात यहीं ले आ, मैं दुगना कर दूंगा मगर किसी को बताना मत वरना मुझे न पा सकेगा। मैं उलटे क़दमों घर पहुंचा और कमो बेश डेढ़ लाख नक़्द रक़म और घर के तमाम सोने के ज़ेवरात थेली में डाले और भागम भाग उस के पास जा पहुंचा तो वोह ख़ामोशी से सर झुकाए बैठा था। मुझे देख कर उस ने थेली हाथ में ले ली और मुझे कहा "आंखें बन्द कर ले, रक़म ज़ियादा है

लिहाज़ा ! पढ़ाई भी ज़ियादा करना होगी ।'' तक़रीबन 5 मिनट मैं आंखें बन्द किये बैठा रहा । फिर उस ने कहा : आंखें खोल, मैं ने ज़ेवरात और रक़म पर दम कर दिया है, जा सीधा घर जा, मुड़ कर देखना न रास्ते में किसी से बात करना, घर जा कर थेला खोलना तो दिल उछल कर ह़ल्क़ में आ जाएगा । मैं ने उस के हाथ चूमे और तेज़ तेज़ क़दमों से चलता हुवा घर पहुंचा । घर पहुंच कर मैं ने दरवाज़े और खिड़कियां वग़ैरा बन्द कीं और धड़क्ते दिल के साथ जैसे ही रक़म और घर के तमाम ज़ेवरात निकालने के लिये थेला खोला तो वाक़ेई उस शख़्स के कहने के मुत़ाबिक़ न सिर्फ़ मेरा दिल उछल कर ह़ल्क़ में आ गया बल्कि सर भी चकरा गया क्यूं कि थेली में से डेढ़ लाख रक़म और ज़ेवरात ग़ाइब थे और उन की जगह अख़्बार की रद्दी भरी हुई थी । मैं बे साख़्ता चीख़ने लगा : ''अरे मैं लुट गया, वोह मुझे धोका दे गया ।'' मेरी चीख़ो पुकार सुन कर घर के तमाम अफ़्राद जम्अ़ हो गए । मैं ने उन्हें तमाम सूरते ह़ाल से आगाह किया । हम ने उस की तलाश में न सिर्फ़ स्टेशन (station) बल्कि शहर का कोना कोना छान मारा मगर उस चालबाज़ का पता न चल सका ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन शो'बदा बाज़ों के वाक़िआ़त से पता चला कि महूज़ किसी की शो'बदे बाज़ी से मु-तअस्सिर हो कर उसे **अल्लाह** का फ़क़ीर या मज्ज़ूब नहीं समझ लेना चाहिये बल्कि हर मुआ़-मले में शरीअ़त को पेशे नज़र रखने में ही आ़फ़िय्यत है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{21} भीड़ में जल्द बाज़ी

भीड़ (Crowd) में फंसने का बहुत सों को इत्तिफ़ाक़ हुवा होगा, ऐसे मवाक़ेअ़ पर बा'ज़ जल्द बाज़ दूसरों को धक्के देते, कन्धे मारते, उलझते, झगड़ते और शोर मचाते हुए भीड़ में तेज़ चलते हुए आगे निकलने की कोशिश करते हैं और दूसरों की परेशानी का सबब बनते हैं ह़ालां कि मुसल्मान को तक्लीफ़ देना मुसल्मान का काम नहीं बल्कि इस का काम तो येह है कि मुसल्मान से ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) देने वाली चीज़ें दूर करे। **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : (कामिल) मुसल्मान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तक्लीफ़ न पहुंचे। (صَحِیحُ البُخارِیّ ج۱ ص ۱۵ حدیث ۱۰)

मुसल्मान को तक्लीफ़ देना कैसा ?

किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर-ई दिल आज़ारी गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 24 सफ़ह़ा 342 में त़-बरानी शरीफ़ के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰہ'' (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।'' (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲، ص۳۸۷، حدیث۳۶۰۷)

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को ईज़ा देने वालों के

बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सू-रतुल अह्ज़ाब आयत 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

भीड़ हो तो रमल न करे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ **311** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "रफ़ीक़ुल ह़-रमैन" के सफ़ह़ा **70** पर है : **मर्द** इब्तिदाई तीन फैरों में **रमल** करते चलें या'नी जल्द जल्द छोटे क़दम रखते, शाने हिलाते चले, बा'ज़ लोग कूदते और दौड़ते हुए जाते हैं येह सुन्नत नहीं है। जहां जहां भीड़ ज़ियादा हो और **रमल** में अपने आप को या दूसरे लोगों को तक्लीफ़ होती हो तो उतनी देर तक **रमल** तर्क कर दें, मगर रमल की ख़ातिर रुकिये नहीं त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहिये। फिर जूं ही मौक़अ़ मिले उतनी देर तक के लिये **रमल** के साथ त़वाफ़ करें। (रफ़ीक़ुल ह़-रमैन, स. 70)

तेज़ दौड़ने में ख़ूबी नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आप अ़-रफ़ा के दिन नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ वापस हुए, सरकार

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने पीछे ऊंटों को सख़्त डांट डपट और मारने की आवाज़ सुनी तो उन्हें अपने कोड़े से इशारा फ़रमाया और हुक्म दिया कि ऐ लोगो इत्मीनान इख़्तियार करो तेज़ दौड़ने में ख़ूबी नहीं। (صحیح البخاری، کتاب الحج، الحدیث:۱۶۷۱، ج۱، ص۵۵۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी इस जगह ऊंट दौड़ाना सवाब नहीं बल्कि ख़त़रा है कि गुनाह बन जाए कि हुजूम ज़ियादा है तेज़ दौड़ाने में हुज्जाज के कुचल जाने, चोट खा जाने का ख़त़रा है, बल्कि सवाब तो इत्मीनान से अरकान अदा करने में है। अब भी हुज्जाज को चाहिये कि वोह भागदौड़ से बचें।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 148)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{22} भगदड़ में जल्द बाज़ी

बा'ज़ अवक़ात पुर हुजूम मक़ाम पर किसी भी वजह से भगदड़ मच जाती है, फिर जिस का जिधर मुंह होता है भाग खड़ा होता है कई लोग ज़ख़्मी हो जाते हैं, भगदड़ अगर शदीद हो तो किसी की जान भी जा सकती है, अगर ऐसे मौक़अ़ पर अपने आ'साब (Nerves) को क़ाबू में रखा जाए और जल्द बाज़ी से बचा जाए तो नुक़्सान से मह़फ़ूज़ (Safe) रहने की सूरत बन सकती है, म-सलन अगर बाहर निकलने की जगह तंग और लोग ज़ियादा हों तो किसी क़रीबी दीवार या खड़ी हुई गाड़ी की ओट में हो जाइये, कुछ ही देर में भीड़ छट जाएगी फिर आप इत्मीनान से बाहर निकल सकते हैं।

ऐसे मौक़अ़ पर अगर कोई चीज़ गिर जाए या पाउं से चप्पल निकल जाए तो हरगिज़ हरगिज़ हरगिज़ उसे उठाने के लिये न झुकिये कि हुजूम आप को कुचल कर रख देगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{23} शो'बा अपनाने में जल्द बाज़ी

अ़-मली ज़िन्दगी में मुख़्तलिफ़ अफ़राद मुख़्तलिफ़ शो'बों (Departments) में ख़िदमात अन्जाम देते हैं, किस भी शो'बे (Departments) को अपनाने का फ़ैसला बहुत अहम है इसे जल्द बाज़ी की नज़्र नहीं करना चाहिये क्यूं कि बार बार शो'बा तब्दील करना नुक़्सान देह भी हो सकता है, इस लिये हर एक को चाहिये कि वोह शो'बा अपनाए जिस में कोई ख़िलाफ़े शर-अ़ काम न करना पड़े और वोह उस काम में शौक़ और दिलचस्पी रखता हो फिर भी अगर त़वील कोशिश के बा वुजूद उस शो'बे में काम्याबी न मिले तो मुनासिब ग़ौरो फ़िक्र और समझदार इस्लामी भाइयों से मुशा-वरत के बा'द नया शो'बा इख़्तियार कर ले। बा'ज़ वालिदैन अपनी औलाद को अपने मन पसन्द शो'बे में जाने के लिये न सिर्फ़ मजबूर करते हैं बल्कि ज़ोर ज़बर दस्ती भी करते हैं फिर जब ह़स्बे तवक़्क़ोअ़ नताइज नहीं निकलते तो अपने ग़लत़ फ़ैसलों पर नादिम होने के बजाए औलाद को कोसने देते हैं, ऐसों को चाहिये कि अपनी औलाद का रुज्ह़ान (Trend) और सलाह़िय्यत देख कर उन्हें किसी शो'बे को अपनाने का मश्वरा दें या फिर ऐसे इक़्दामात करें कि वोह ख़ुद आप के पसन्दीदा शो'बे की त़रफ़ राग़िब हो जाए, इस सिल्सिले में एक सच्ची ह़िकायत मुला-ह़ज़ा हो :

वालिद साह़िब की इन्फ़िरादी कोशिश

मदीनतुल औलिया (मुलतान) के एक इस्लामी भाई का

बयान कुछ यूं है : मैं ने जब होश संभाला घर में **सुन्नतों भरा** माहोल पाया। मेरे वालिदे मोहतरम दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से **वाबस्ता** थे। घर वालों ने बचपन ही से मेरे सर पर सब्ज़ सब्ज़ **इमामा शरीफ़** का ताज सजा दिया और मैं दामने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से वाबस्ता हो कर **अ़त्तारी** भी बन गया। यूं मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल ही में परवान चढ़ा। हमारे ख़ानदान में कई लोग (दुन्यवी ए'तिबार से) आ'ला ता'लीम याफ़्ता और बड़े ओ़हदों पर फ़ाइज़ थे, चुनान्चे मेरा ज़ेहन भी ऐसा ही कुछ बनने का था। जब मैं नवीं क्लास में था मेरे वालिद साहिब ने मुझे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सुन्नतों भरी तालीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** से नेकी की दा'वत के बाब में से इल्म व उ़-लमा के फ़ज़ाइल पढ़ने और याद करने की भरपूर तरग़ीब दी। जब मैं ने इन फ़ज़ाइल को पढ़ा मेरे दिलो दिमाग़ में हलचल मच गई और मैं ने **आ़लिम** (Scholar) बनने का ज़ेहन बना लिया। मेट्रिक के बा'द 1998 ई. में दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करने के लिये **जामिअ़तुल मदीना** (गोधरा कॉलोनी बाबुल मदीना कराची) में दाख़िला ले लिया। पढ़ने के साथ साथ दा'वते इस्लामी के **म-दनी काम** भी करता म-सलन फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देता, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत करता, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करता वग़ैरहा, मैं अपने **ज़ैली ह़ल्क़े** का निगरान भी था। अपने मीठे मीठे मुर्शिद शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ान से मैं ने 2004 ई. में दर्से निज़ामी मुकम्मल किया। फिर तक़रीबन दो साल तक जामिअ़तुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) में श-रफ़े तदरीस ह़ासिल रहा। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ग़ुलामी के

सदक़े (ता दमे तह़रीर) मुझे दा'वते इस्लामी की **मजलिसे म-दनी चेनल** के रुक्न के त़ौर पर सुन्नतों की ख़िदमत करने की सआ़दत ह़ासिल है।

अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल — है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल
अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा — तुम आ जाओ देगा सिखा म-दनी माह़ोल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक उस्ताज़ की इन्फ़िरादी कोशिश

इसी त़रह़ एक जलीलुल क़द्र उस्ताज़ की इन्फ़िरादी कोशिश की ह़िकायत भी मुला-ह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए और फ़िक़्ह़ सीखने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जब उन की त़बीअ़त में इल्मे ह़दीस की त़रफ़ रग़बत देखी तो उन से इर्शाद फ़रमाया : तुम जाओ और इल्मे ह़दीस ह़ासिल करो। चुनान्चे इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने अपने उस्ताज़ का मश्वरा क़बूल किया और इल्मे ह़दीस ह़ासिल करना शुरूअ़ किया तो देखने वालों ने देखा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तमाम **अइम्मए ह़दीस** से सब्क़त ले गए और **इमामुल मुह़द्दिसीन** कहलाए और बुख़ारी शरीफ़ जैसी शोह्रए आफ़ाक़ किताब भी लिखी। (تعلیم المتعلم طریق التعلم، ص ۵۵ ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{24} किराए का मकान लेने में जल्द बाज़ी

ज़ाती घर बहुत कम लोगों के पास होता है चुनान्चे लोगों की बहुत बड़ी ता'दाद किराए के मकानात में रहती है। किराए के मकान का इन्तिख़ाब भी एह़तियात़ से करना चाहिये क्यूं कि जल्द बाज़ी में लिया गया मकान बा'ज़ अवक़ात जल्दी छोड़ना भी पड़ जाता है जिस में नए मकान की तलाश और सामान मुन्तक़िल करने के ह़वाले से शदीद मशक़्क़त उठानी पड़ती है। लिहाज़ा किराए का मकान लेते वक़्त मकान की मज़्बूत़ी और हवादारी ही नहीं पड़ोसी भी देखिये क्यूं कि अगर पड़ोसी नेक और ख़ुश अख़्लाक़ हों तो आप के म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के अख़्लाक़ व किरदार पर भी ख़ुश गवार असर पड़ेगा। नीज़ घर के इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ भी देख लीजिये कि कहीं बैठते वक़्त क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ तो नहीं होती क्यूं कि जब भी पेशाब करने या क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठें तो ज़रूरी है कि मुंह और पीठ दोनों में से कोई भी क़िब्ले की त़रफ़ न हो, लिहाज़ा अगर इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ ग़लत़ है या'नी बैठते वक़्त क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ होती है तो मालिके मकान से मिल कर इस को दुरुस्त करने की फ़ौरन तरकीब कीजिये। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि मा'मूली सा तिरछा करना काफ़ी नहीं। W.C. इस त़रह़ हो कि बैठते वक़्त मुंह या पीठ क़िब्ले से 45 डिग्री के बाहर रहे। आसानी इसी में है कि क़िब्ला से 90 डिग्री पर रुख़ रखिये। या'नी नमाज़ के बा'द दोनों बार सलाम फैरने में जिस त़रफ़ मुंह करते हैं उन दोनों सम्तों में से किसी एक जानिब W.C. का रुख़ रखिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

{25} घर में मुलाज़िम रखने में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई अपने घर में चोकीदार या माली वग़ैरा रखते हैं इसी त़रह़ इस्लामी बहनें घर में सफ़ाई सुथराई वग़ैरा के लिये बा'ज़ अवक़ात मुलाज़िमा रखती हैं, लेकिन मुलाज़िमीन की मुनासिब जांच पड़ताल नहीं की जाती म-सलन येह इस शहर में कहां रिहाइश पज़ीर है ? इस का मुस्तक़िल पता (Adress) क्या है ? वग़ैरा बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो दरवाज़े पर आ कर काम मांगने वालियों को पहली मुलाक़ात ही में मुला-ज़मत पर रख लिया जाता है जिस के बा'ज़ अवक़ात बड़े ख़त़रनाक नताइज (Results) देखने पड़ते हैं, आए दिन येह ख़बरें आ़म होती हैं कि फ़ुलां घर में मुलाज़िमा ने साथी डाकूओं (Docoits) से मिल कर इतना इतना सोना, रुपिया और सामान लूट लिया । इस लिये जल्द बाज़ी से काम लेने के बजाए मुनासिब जांच और शनाख़्त के बा'द ही मुलाज़िम या मुलाज़िमा रखनी चाहिये । एक अख़्बारी ख़बर मुला-ह़ज़ा हो : बाबुल मदीना कराची में घरेलू मुलाज़िमा की मिली भगत से एक घर में घुसने वाले 3 डाकूओं को गिरिफ़्तार कर लिया गया । पोलीस के मुत़ाबिक़ एक मकान में 3 मुसल्लह़ डाकू दाख़िल हुए और अस्लिह़े के ज़ोर पर लूटमार शुरूअ़ कर दी । इसी दौरान मज़्कूरा घर में रिहाइश पज़ीर एक ख़ातून मकान की पहली मन्ज़िल पर पहुंचने में काम्याब हो गईं जिन्हों ने हेल्प लाइन (Help line) पर पोलीस को इत्तिलाअ़ कर दी जिस ने मौक़अ़ पर पहुंच कर 3 डाकूओं को गिरिफ़्तार कर के उन के क़ब्ज़े से 3 पिस्तोल, लूटे गए क़ीमती त़लाई ज़ेवरात, मोबाइल फ़ोन, दस्ती घड़ी, 2 हज़ार अमरीकी डॉलर, 75 केनेडियन डॉलर, 50 दिरहम और एक गाड़ी बरआमद कर ली । तफ़्तीश के दौरान

मुल्ज़मान ने बताया कि वोह मज़्कूरा घर में काम करने वाली एक मुलाज़िमा की **मुख़्बिरी** पर वारिदात के लिये पहुंचे थे। मुल्ज़मान की निशान देही पर पोलीस ने मज़्कूरा घरेलू मुलाज़िमा को भी हिरासत में ले लिया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{26} किसी को गुनहगार क़रार देने में जल्द बाज़ी

मश्हूर है कि दूसरे की आंख का तिन्का दिखाई दे जाता है मगर अपनी आंख का शहतीर नहीं दिखाई देता, शायद इसी वजह से हमारे हां अपना क़ुसूर और ग़-लती मानना बहुत मुश्किल मगर किसी को गुनाहगार क़रार देना आसान है, लिहाज़ा ज़रा से शुब्हे पर झट से सामने वाले को झूटा, ख़ाइन, धोकेबाज़ और चोर क़रार दे दिया जाता है हालां कि शर-ई सुबूत के बिग़ैर किसी की तरफ़ गुनाह की निस्बत करना जाइज़ नहीं है। इस हवाले से एक सबक़ आमोज़ हिकायत मुला-हज़ा कीजिये, चुनान्चे

किसी को मुजरिम साबित करने के लिये सुबूत ज़रूरी है

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز की तरफ़ से मुक़र्रर होने वाले उम्माल (Officers) बा'ज़ अवक़ात ख़ुद इत्तिलाअ़ देते कि हम से पहले जो उम्माल थे, उन्हों ने माल ग़सब किया था, अगर अमीरुल मुअमिनीन का इर्शाद हो तो येह माल उन से ज़ब्त (Seized) कर लिया जाए ? हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز उन को हुक्म लिखवा कर भेजते कि इस मुआ-मले में मुझ से मश्वरे की ज़रूरत नहीं, अगर शहादत (Evidence) हो तो शहादत की रू से और इक़रार हो

तो इक़्रार की रू से माल वापस लो, वरना ह़लफ़ (Oath) ले कर छोड़ दो जैसा कि बसरा के गवर्नर अ़दी बिन अरत़ाह को लिखा : तुम ने ख़त़ के ज़रीए़ बताया था कि तुम्हारे अ़लाक़े में अहल कारों की ख़ियानत (Corruption) का इन्किशाफ़ हुवा है और उन्हें सज़ा देने के लिये मुझ से इजाज़त मांगी थी, गोया तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की गिरिफ़्त से बचने के लिये मुझे ढाल बनाना चाहते थे, जब तुम्हें मेरा येह ख़त़ मिले तो अगर उन के ख़िलाफ़ शहादत मौजूद हो तो उन से मुआ-ख़ज़ा करो और सज़ाएं दो वरना नमाज़े अ़स्र के बा'द उन से येह क़सम ले लो : ''उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, हम ने मुसल्मानों के माल में ज़रा भी ख़ियानत नहीं की।'' अगर वोह येह क़सम खा लें तो उन्हें छोड़ दो क्यूं कि हम येही कुछ कर सकते हैं, **वल्लाह**! उन का अपनी ख़ियानतें ले कर बारगाहे इलाही में पहुंचना मेरे लिये आसान है बजाए इस के कि मैं उन के ख़ून का वबाल अपनी गरदन पर ले कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होउं।

(سیرت ابن عبدالحکم ص ۵۵)

हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठ्ठें
बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 69)

किसी की त़रफ़ गुनाह की निस्बत करने से पहले सोच लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से हमें येह दर्स भी मिला कि बिला सुबूते शर-ई किसी की त़रफ़ गुनाह की निस्बत न की जाए या'नी किसी को उस वक़्त तक ख़ाइन, राशी, सूदख़ोर न

क़रार दिया जाए जब तक हमारे पास शर-ई सुबूत न हो, **हुज्जतुल इस्लाम** इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : "अगर किसी शख़्स के मुंह से शराब की बू आ रही हो तो उस को शर-ई ह़द लगाना जाइज़ नहीं क्यूं कि हो सकता है कि उस ने शराब का घूंट भरते ही कुल्ली कर दी हो या किसी ने इसे ज़बर दस्ती शराब पिला दी हो, जब येह सब एह़्तिमाल मौजूद हैं तो (सुबूते शर-ई के बिग़ैर) मह़्ज़ क़ल्बी ख़यालात की बिना पर तस्दीक़ कर देना और उस मुसल्मान के बारे में **बद गुमानी** करना जाइज़ नहीं है ।"

(احیاء علوم الدین، کتاب آفات اللسان، ج ۳، ص ۲۸۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{27} फ़ैसला करने में जल्द बाज़ी

जब किसी मुआ़-मले में दो या दो से ज़ाइद फ़रीक़ वाबस्ता हों तो किसी एक की सुन कर ह़त्मी राय क़ाइम करने में जल्द बाज़ी नहीं करनी चाहिये बल्कि सब की सुनने के बा'द ही किसी नतीजे पर पहुंचना चाहिये क्यूं कि बसा अवक़ात फ़रीक़े वाह़िद को बोलने का फ़न आता है या झूटमूट के आंसू बहा कर वोह दूसरे फ़रीक़ पर ह़ावी होने की कोशिश करता है ।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : फ़ैसला करने के ह़वाले से तफ़्सीली मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला "फ़ैसला करने के म-दनी फूल" मुला-ह़ज़ा कीजिये ।

{28} ख़रीद व फ़रोख़्त में जल्द बाज़ी

हर ख़ासो आ़म को कुछ न कुछ ख़रीदना या बेचना पड़ता है, इस ह़वाले से भी जल्द बाज़ों की कमी नहीं जो दुकानदार (Shop keeper) की चिकनी चुपड़ी बातों में आ कर ग़ैर मे'यारी अश्या महंगे दामों ख़रीद बैठते हैं या कभी उन्हें अपनी पुरानी चीज़ बेचने की ज़रूरत पड़ती है तो तजरिबा न होने की वजह से नुक़्सान उठाते हैं, फिर अपने किये पर पछताते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

{29} झगड़ा मोल लेने में जल्द बाज़ी

बात बात पर उलझने, झगड़ा मोल लेने वाले जल्द बाज़ ख़ुद तो नफ़्सियाती, मुआ़-श-रती और जिस्मानी नुक़्सान उठाते ही हैं मगर दूसरों का भी सुकून बरबाद कर के रहते हैं। एक तसव्वुराती ह़िकायत मुला-ह़ज़ा हो :

ज़ालिम की मदद

ज़ैद एक जगह से गुज़रा तो देखा कि एक बच्चा खड़ा ज़ारो क़ितार रो रहा है और क़रीब ही एक शख़्स ने अपने से कमज़ोर आदमी को दबोच रखा है और उस की ''ख़ातिर तवाज़ोअ़'' कर रहा है, ज़ैद ने आव देखा न ताव! उस ''मज़्लूम'' की मदद के लिये बीच में कूद पड़ा और दबोचने वाले की धुनाई शुरूअ़ कर दी, उस शख़्स ने ज़ैद से कुछ कहना चाहा मगर इस को सुनने का होश कहां था, उन दोनों के गुथ्थम गुथ्था होने की देर थी वोह कमज़ोर और ''मज़्लूम'' आदमी वहां से भाग निकला, जब ज़ैद को बताया गया कि जिस को जल्द बाज़ी में वोह मज़्लूम समझ बैठा था दर ह़क़ीक़त एक ज़ालिम

लुटेरा था जो बच्चे से पैसे छीन कर भाग रहा था कि धर लिया गया मगर ज़ैद की जल्द बाज़ी की वजह से उसे फ़िरार होने का मौक़अ़ मिल गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{30} शर-ई मस्अला बताने में जल्द बाज़ी

अपनी ला इ़ल्मी का ए'तिराफ़ करने से शरमाने वालों से अगर कोई दीनी मसाइल के बारे में सुवाल कर ले तो जल्दी से कोई न कोई ग़लत़ सलत़ जवाब दे कर अपनी इ़ज़्ज़त बचाने की कोशिश करते हैं ह़ालां कि इस त़रह़ इ़ज़्ज़त बचती नहीं बल्कि रुस्वाई मुक़द्दर बनती है बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो मुआ़-मला बहुत नाज़ुक शक्ल इख़्तियार कर लेता है, चुनान्चे

छोटी सी शीशी

मन्क़ूल है : बा'दे नमाज़े अ़स्र शयात़ीन समुन्दर पर जम्अ़ होते हैं, **इब्लीस** का तख़्त बिछता है, शयात़ीन की कार गुज़ारी पेश होती है, कोई कहता है : इस ने (या'नी मैं ने) इतनी शराबें पिलाईं, कोई कहता है, इस ने (या'नी मैं ने) इतने ज़िना कराए, सब की सुनीं। किसी ने कहा : इस ने (या'नी मैं ने) आज फ़ुलां त़ालिबे इ़ल्मे (दीन) को पढ़ने से बाज़ रखा। (शैत़ान येह) सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा और उस को गले से लगा लिया और कहा : اَنْتَ اَنْتَ (या'नी बस) तूने (ज़ोरदार) काम किया। और शयात़ीन येह कैफ़िय्यत देख कर जल गए कि उन्हों ने इतने बड़े बड़े काम किये उन को कुछ न कहा और इस (शैत़ान के चेले) को (त़ालिबे इ़ल्मे दीन को सिर्फ़ एक छुट्टी करवा देने पर) इतनी शाबाश दी! **इब्लीस** बोला : तुम्हें नहीं मा'लूम जो कुछ

तुम ने किया, सब इसी (इल्मे दीन पढ़ने से रोकने वाले) का सदक़ा है। अगर (दीनी) इल्म होता तो वोह (लोग) गुनाह न करते। बताओ ! वोह कौन सी जगह है जहां सब से बड़ा **आ़बिद** (इबादत गुज़ार) रहता है मगर वोह आ़लिम नहीं और वहां एक **आ़लिम** भी रहता हो। उन्हों ने एक मक़ाम का नाम लिया। सुब्ह़ को क़ब्ले तुलूए़ आफ़्ताब (इब्लीस अपने चेले) शयात़ीन को लिये हुए उस मक़ाम पर पहुंचा। और शयात़ीन मख़्फ़ी (छुपे) रहे और येह (या'नी इब्लीस) इन्सान की शक्ल बन कर रस्ते पर खड़ा हो गया। **आ़बिद** साहिब तहज्जुद की नमाज़ के बा'द, नमाज़े फ़ज्र के वासिते मस्जिद की त़रफ़ तशरीफ़ लाए। रास्ते में **इब्लीस** खड़ा ही था, ह़ज़रत ! मुझे एक मस्अला पूछना है। **आ़बिद** साहिब ने फ़रमाया : जल्द पूछो। मुझे नमाज़ को जाना है। इस (इब्लीस) ने अपनी जेब से एक **शीशी** निकाल कर पूछा : (क्या) **अल्लाह** तआ़ला क़ादिर है कि इन समावात व अर्ज़ (या'नी आस्मानों और ज़मीनों) को इस छोटी सी शीशी में दाख़िल कर दे ? **आ़बिद** साहिब ने सोचा और कहा : ''कहां आस्मान व ज़मीन और कहां येह छोटी सी शीशी !'' (इब्लीस) बोला : बस येही पूछना था तशरीफ़ ले जाइये और (फिर अपने चेले) शयात़ीन से कहा : देखो (मैं ने) इस (आ़बिद) की राह मार दी, इस को **अल्लाह** की क़ुदरत पर ही ईमान नहीं (इस बे ईमान मुरतद की अब) इबादत किस काम की ! तुलूए़ आफ़्ताब के क़रीब **आ़लिम** साहिब जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए उस (इब्लीस) ने कहा : मुझे एक मस्अला पूछना है। उन्हों ने फ़रमाया : जल्दी पूछो नमाज़ का वक़्त कम है। इस ने वोही सुवाल किया। (सुन कर आ़लिम साहिब ने फ़रमाया :) **मल्ऊ़न !** तू इब्लीस मा'लूम होता है, अरे ! वोह क़ादिर है कि येह शीशी

तो बहुत बड़ी है एक सूई के नाके के अन्दर अगर चाहे तो करोड़ों आस्मान व ज़मीन दाख़िल कर दे। اِنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (तर-ज-मए **कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है। پ۱، البقرہ: ۲۰) **आ़लिम** साहिब के तशरीफ़ ले जाने के बा'द शयातीन से (इब्लीस) बोला : देखो ! येह इ़ल्म की ब-र-कत है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए सिवुम, स. 270)

इज़ाले की ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जलील अबुल ह़सन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक औ़रत आई और एक शर-ई मस्अले के बारे में फ़तवा लिया और रुख़्सत हो गई कुछ ही देर गुज़री थी कि शैख़ जलील رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक दम परेशान हो कर उठे और नंगे पाउं उस औ़रत के पीछे गए, उस से फ़तवा वापस लिया और लौट आए। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्दों ने जब इस बारे में दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : मेरे दिल में येह बात खटकी कि मुझे जवाब देने में कुछ वहम हुवा है इस लिये मैं फ़तवा वापस लेने के लिये ख़ुद गया कि वोह औ़रत कहीं दूर न निकल जाए। शागिर्दों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप हमें फ़रमा देते ! फ़रमाया : अव्वल तो येह तुम्हारा काम नहीं था, फिर अगर मैं तुम्हें कह भी देता तो तुम अपने जूते पहन कर आराम आराम से जाते और तुम्हें येह भी पता न चलता कि वोह औ़रत किस त़रफ़ गई है।

(المدخل، اخذ الدرس فی البیت والمدرسۃ، المجلد الاول، جز۲، ص۳۰۵)

ज़बान को क़ैद कर लो

बा'ज़ हु-कमा का कहना है : "ख़ुद को ज़ाएअ़ करने और क़ैद हो जाने से पहले अपनी ज़बान को क़ाबू कर लो क्यूं कि ज़बान से ज़ियादा कोई चीज़ क़ैद की मुस्तहिक़ नहीं कि येह ग़-लतियां ज़ियादा करती और जवाब देने में जल्द बाज़ी से काम लेती है।"

(بحرالدموع، ص۱۷۶)

मेरी ज़बान तर रहे ज़िक्रो दुरूद से
बे जा हंसूं कभी न करूं गुफ़्त-गू फ़ुज़ूल

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمّد

{31} बच्चों के झगड़े में नतीजा क़ाइम करने में जल्द बाज़ी

बच्चों के बाहमी झगड़े उ़मूमन बड़ों को भी मैदान में घसीट लेते हैं, इस मौक़अ़ पर बा'ज़ इस्लामी भाई जल्द बाज़ी में अपने म-दनी मुन्ने की बताई हुई बात को सो फ़ीसद दुरुस्त तस्लीम कर के दूसरों के बच्चों को मारते पीटते या फिर उन के बड़ों से उलझते झगड़ते है, कई बार ऐसा होता है कि बच्चों पर यक़ीन कर के लड़ने वाले लड़ते रह गए और बच्चे लड़ाई भूल कर फिर से बाहम शीरो शकर हो गए। बा'ज़ अवक़ात तो बच्चों के झगड़ों की वजह से क़त्लो ग़ारत तक नौबत पहुंच जाती है, दो अख़्बारी ख़बरें मुला-हज़ा कीजिये :

۞ इतवार 20 मार्च 2011 ई. को मर्कजुल औलिया (लाहोर) में बच्चों के झगड़े पर एक शख़्स ने फ़ायरिंग कर के महल्ले दार को

क़त्ल कर दिया और फ़िरार हो गया। ❁ शाहपूर चाकर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में बच्चों के मा'मूली झगड़े के दौरान दो बरादरियों में झगड़ा हो गया, जिस में कुल्हाड़ियों और लाठियों का आज़ादाना इस्ति'माल किया गया जिस के नतीजे में दोनों त़रफ़ के 10 अफ़राद शदीद ज़ख़्मी हो गए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{32} लज़्ज़ते गुनाह के हुसूल में जल्द बाज़ी

शैत़ान गुनाहों में लज़्ज़त दिखा कर भी इन्सान को शिकार करता है और इसी लज़्ज़त के हुसूल के लिये इन्सान सोचे समझे बिग़ैर मुख़्तलिफ़ गुनाहों म-सलन ज़िना, शराब नोशी, बद निगाही, ना महरम औ़रतों से हंसी मज़ाक़ और फ़िल्म बीनी वग़ैरा की त़रफ़ पेश क़दमी शुरूअ़ कर देता है और अपने हाथों ख़ुद को हलाकत में डालता है।

ना पसन्दीदा लोग

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ियामत के दिन **8** क़िस्म के अफ़राद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा होंगे : (1) झूट बोलने वाले (2) तकब्बुर करने वाले (3) वोह लोग जो अपने सीनों में अपने भाइयों से बुग़्ज़ छुपा कर रखते हैं जब वोह इन के पास आते हैं तो येह उन के साथ ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आते हैं (4) वोह लोग कि जब उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बुलाया जाता है तो टाल मटोल करते

हैं और जब शैत़ानी कामों की त़रफ़ बुलाया जाता है तो उस में जल्दी करते हैं (5) वोह लोग जो किसी दुन्यवी ख़्वाहिश की तक्मील पर क़ुदरत पाते हैं तो क़समें उठा कर उसे जाइज़ समझने लगते हैं अगर्चे वोह उन के लिये जाइज़ न भी हो (6) चुग़ली खाने वाले (7) दोस्तों में जुदाई डालने वाले और (8) नेक लोगों के गुनाह में मुब्तला होने की तमन्ना करने वाले। येही वोह लोग हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ना पसन्द फ़रमाता है।'' (کنزالعمال، کتاب المواعظ، الحدیث: ۷۰۳۴۴، ج۱۶، ص۳۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों में ब ज़ाहिर लज़्ज़त ज़रूर है लेकिन इन का अन्जाम त़वील ग़म का सबब है, जैसा कि एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''कभी लज़्ज़त की वजह से गुनाह न करो कि लज़्ज़त जाती रहेगी लेकिन गुनाह तुम्हारे ज़िम्मे बाक़ी रह जाएगा और कभी मशक़्क़त की वजह से नेकी को तर्क न करो कि मशक़्क़त का असर ख़त्म हो जाएगा लेकिन नेकी तुम्हारे नामए आ'माल में महफ़ूज़ रहेगी।'' लिहाज़ा जो शख़्स नेकियों की चाश्नी का लुत़्फ़ उठा लेता है वोह गुनाहों की लज़्ज़त को भूल जाता है जैसा कि एक शख़्स जिसे दाल बड़ी पसन्द थी और वोह किसी दूसरे खाने ह़त्ता कि गोश्त को भी ख़ात़िर में न लाता था। उस का दोस्त उसे मुर्ग़ी खाने की दा'वत देता लेकिन वोह येह कह कर उस दा'वत को ठुकरा देता कि इस दाल में जो लज़्ज़त है किसी और खाने में कहां ? आख़िर कार एक दिन जब उस के दोस्त ने उसे मुर्ग़ी खाने की दा'वत दी तो उस ने सोचा कि आज मुर्ग़ी भी खा कर देख लेते हैं कि इस का ज़ाएक़ा कैसा है और मुर्ग़ी खाने लगा। जब उस ने पहला लुक़्मा मुंह में रखा तो उसे इतनी लज़्ज़त महसूस हुई कि अपनी

पसन्दीदा दाल को भूल गया और कहने लगा : ''हटाओ इस दाल को, अब मैं मुर्ग़ी ही खाया करूंगा।'' बिला तश्बीह जब तक कोई शख़्स महज़ गुनाहों की लज़्ज़त में मुब्तला और नेकियों के सुकून से ना आश्ना होता है, उसे येह गुनाह ही रौनक़े ज़िन्दगी महसूस होते हैं लेकिन जब उसे नेकियों का नूर हासिल हो जाता है तो वोह गुनाहों की लज़्ज़त को भूल जाता है और नेकियों के ज़रीए सुकूने क़ल्ब का मुतलाशी हो जाता है। **تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस्तिग़्फ़ार करता हूं)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{33} ग़ुस्सा नाफ़िज़ करने में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाइयों को बहुत जल्द ग़ुस्सा आ जाता है और वोह उसे बहुत जल्दी किसी पर ''निकाल'' भी देते हैं, ऐसे में शर-ई हुदूद व क़ुयूद का ख़याल क्यूंकर रखा जा सकता है! कहीं ऐसा न हो कि **ग़ुस्से** के सबब शैतान सारे आ'माल बरबाद करवा डाले। **कीमियाए सआदत** में **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना **इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : **''ग़ुस्से का इलाज** और इस बाब में मेहनत व मशक़्क़त बरदाश्त करना फ़र्ज़ है, क्यूं कि **अक्सर लोग ग़ुस्से ही के बाइस जहन्नम में जाएंगे।''** (کیمیائے سعادت ج۲ص۶۰۱) **सय्यिदुना हसन बसरी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ऐ आदमी! **ग़ुस्से** में तू ख़ूब उछलता है, कहीं अब की उछाल तुझे दोज़ख़ में न डाल दे। (احیاء العلوم ج۳ص۲۰۵)

कौन अच्छा है ?

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''अ़न्क़रीब मैं तुम्हें लोगों के मुआ़-मलात और उन की आ़दतों के बारे में बताऊंगा, एक शख़्स को ग़ुस्सा जल्दी आता है और जल्द ही ख़त्म हो जाता है येह शख़्स न तो किसी को नुक़्सान पहुंचाता है न ही किसी से नुक़्सान उठाता है और एक शख़्स को देर से ग़ुस्सा आता है मगर जल्द रुख़्सत हो जाता है तो येह उस के लिये बेहतर है नुक़्सान देह नहीं, एक शख़्स अपने ह़क़ का तक़ाज़ा करता है तो ग़ैर का ह़क़ अदा भी कर देता है, उस का येह अ़मल न उसे नुक़्सान देता है न किसी दूसरे को। और एक शख़्स अपना ह़क़ तो त़लब करता है लेकिन ग़ैर का ह़क़ अदा नहीं करता तो येह उस के लिये मुज़िर है मुफ़ीद नहीं।'' (کنز العمال، کتاب الاخلاق، الحدیث:۷۶۹۹، ج۳، ص۲۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{34} तह़रीक से रिश्ता तोड़ने में जल्द बाज़ी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी से लाखों लाख मुसल्मान वाबस्ता हैं और ''**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**'' में मस्रूफ़ हैं, आए रोज़ इस ता'दाद में इज़ाफ़ा ही होता जा रहा है मगर बा'ज़ इस्लामी भाई ऐसे भी होते हैं जो ''दा'वते इस्लामी'' से वाबस्ता तो हो जाते हैं मगर शैत़ान की पूरी कोशिश होती है कि उन्हें इस सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इख़्तियार न करने दे चुनान्चे वोह उन इस्लामी भाइयों पर ''घर वालों

की मुख़ा-लफ़त'', ''ज़िम्मादारान की त़रफ़ से हौसला अफ़्ज़ाई न होना'', ''किसी ज़िम्मादार के बारे में बद गुमान कर देना'' जैसे हथियार इस्ति'माल करता है, ऐसी सूरते ह़ाल में जिन इस्लामी भाइयों की त़बीअ़त में जल्द बाज़ी का उ़न्सर (Element) ज़ियादा होता है वोह शैत़ान के जाल में फंस कर सुन्नतों भरी तह़रीक से बहुत जल्द रिश्ता तोड़ देते हैं और फिर से गुनाहों से आलूदा माह़ोल में ज़िन्दगी गुज़ारना शुरूअ़ कर देते हैं। यक़ीनन उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिये क्यूं कि वोह म-दनी तह़रीक जो उन की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी चाहती है, बेशक इन की मोह़सिना है और एह़सान करने वाले से मुंह मोड़ लेना अ़क़्ल मन्दों का शेवा नहीं है लिहाज़ा अपना ज़ेह़न बना लीजिये कि जब एक बार दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए तो हो गए, अब येह दर नहीं छोड़ेंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे

गिर गिर कर संभल गया

पंजाब (पाकिस्तान) के ज़िलअ़ मुज़फ़्फ़र गढ़ के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि जब मैं ने **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से **मु-तअस्सिर** हो कर **दाढ़ी** रखना शुरूअ़ की तो घर में म-दनी माह़ोल न होने की वजह से ऐसी मुख़ा-लफ़त हुई कि मुझे مَعَاذَاللّٰه कटवाते ही बनी मगर मैं ने दा'वते इस्लामी से अपना नाता नहीं तोड़ा। सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में गाहे गाहे ह़ाज़िरी देता रहा, इस से गोया मेरी ''बेटरी'' (Battery) चार्ज होती रही और नमाज़ों की पाबन्दी जारी रही। कुछ अ़र्सा गुज़रने के बा'द फिर जज़्बे

ने उठान ली, ज़ेह्न बना और मैं ने दोबारा **दाढ़ी** बढ़ानी शुरूअ़ की, फिर मुख़ा-लफ़त शुरूअ़ हो गई, इस मर्तबा पहले के मुक़ाबले में ज़ियादा अ़र्सा मुख़ा-लफ़त झेली मगर फिर हिम्मत हार गया और اَسْتَغْفِرُاللّٰه मैं ने दाढ़ी कटवा दी । बिल आख़िर हिम्मत कर के तीसरी बार मैं ने **दाढ़ी** का आग़ाज़ कर दिया, अब की बार घर वालों की त़रफ़ से सिर्फ़ बराए नाम मुख़ा-लफ़त की गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं दाढ़ी बढ़ाने में काम्याब हो गया । यहां तक कि सर पर इ़मामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** में रच बस गया और म-दनी काम भी शुरूअ़ कर दिया । आज (ता दमे तह़रीर) तक़्रीबन 14 साल होने को आए हैं, दाढ़ी शरीफ़ ब दस्तूर मेरे चेहरे पर और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज मौजूद है, **अल्लाह** तआ़ला येह सुन्नतें **क़ब्र** में भी साथ ले जाने की सआ़दत इ़नायत फ़रमाए, आमीन । आज सोचता हूं कि अगर मैं दाढ़ी मुंडाने की ह़ालत में मर जाता तो मेरा क्या बनता ! **अल्लाह** तआ़ला दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए जिस ने मुझे तबाही की तंग गली से निकाल कर जन्नत की शाहराह पर गामज़न कर दिया और मेरे ज़ाहिरो बात़िन पर ऐसा म-दनी रंग चढ़ाया कि अब मेरे घर वाले बल्कि दीगर रिश्तेदार भी **दा'वते इस्लामी** की ब-र-कतों के क़ाइल हो चुके हैं ।

अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा म-दनी माह़ोल
तू दाढ़ी बढ़ा ले इ़मामा सजा ले नहीं है येह हरगिज़ बुरा म-दनी माह़ोल

संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه

तुम अपनाए रख्खो सदा म-दनी माहौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 406)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{35} बातचीत करने में जल्द बाज़ी

कब ? कहां ? किस से ? क्या बोलना है ? इस की आ़दत बनाने के लिये इत्मीनान से ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत होती है जब कि जल्द बाज़ शख़्स जो मुंह में आया बोल देता है और नुक़्सान उठाता है, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अ़क़्ल मन्द की ज़बान उस के दिल के ताबेअ़ होती है, जब वोह गुफ़्त-गू का इरादा करता है तो अपने दिल से मश्वरा करता है, अगर वोह बात उस के ह़क़ में बेहतर हो तो वोह बोलता है और अगर उस के लिये नुक़्सान देह हो तो वोह बात करने से रुक जाता है और बेशक जाहिल का दिल उस की ज़बान के ताबेअ़ होता है इस लिये वोह दिल से मश्वरा नहीं करता बल्कि उस की ज़बान पर जो आता है बोल देता है।

(شعب الایمان، فصل فی فضل السکوت، ج ۴ ص ۲۶۶ حدیث ۵۰۳۴)

जाहिल कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने फ़रमाया : जब भी किसी जाहिल से तुम्हारा वासिता पड़ेगा तुम उस में दो ख़स्लतें ज़रूर पाओगे : كَثْرَةُ الْاِلْتِفَاتِ وَسُرْعَةُ الْجَوَابِ या'नी बहुत ज़ियादा इधर उधर देखना और हर बात का जल्दी जल्दी जवाब दे देना।

(آداب الشرعیۃ، فصل فی حسن الخلق، ج ۲ ص ۳۱۱)

नीज़ इतनी तेज़ रफ़्तारी से गुफ़्त–गू करना कि सामने वाले के पल्ले ही कुछ न पड़े गुफ़्त–गू के आदाब (Manners of conversation) के भी ख़िलाफ़ है, ठहर ठहर कर बातचीत करने से आप अपनी बात दूसरों को अच्छी त़रह़ समझा सकते हैं, इस सिल्सिले में अदाए मुस्त़फ़ा मुला–ह़ज़ा हो :

ठहर ठहर कर कलाम फ़रमाते

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : अपनी हर सिफ़त में बा कमाल, मह़बूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हारी त़रह़ बात जल्दी जल्दी न करते थे, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बातें यूं करते थे कि अगर कोई गिनने वाला गिनना चाहता तो उन्हें गिन लेता।

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، الحدیث: ۳۵۶۷، ۳۵۶۸ ج ۲، ص ۴۹۱، ملتقطاً)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) का कलाम शरीफ़ न तो लगातार होता था न जल्दी जल्दी बल्कि एक जुम्ले पर रुक जाते थे ताकि सुनने वाला ग़ौर कर के समझ ले और हर जुम्ले के कलिमात भी बहुत आहिस्तगी से अदा होते थे कि हर कलिमा दिल में बैठ जाता था क्यूं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का हर कलिमा तब्लीग़ के लिये होता था, अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जल्द या मुसल्सल या बहुत ज़ियादा कलाम फ़रमाते तो लोग भूल जाते। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का कलाम निहायत जामेअ़ मगर मुख़्तसर होता था मगर ह़ज़राते

सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان क़ुरआन की त़रह़ उसे याद कर लेते थे वोह ही ह़दीस की शक्ल में जम्अ़ हो गया उसी कलामे मुबारक से आज दीन क़ाइम है। उसी कलामे मुबारक से क़ुरआन समझ में आ रहा है। (मिरआतुल मनाजीह़ शर्ह़े मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 8, स. 74)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{36} खाना खाने में जल्द बाज़ी

खाना खाने में जल्द बाज़ी कई ह़वाले से नुक़्सान पहुंचाती है, ह़िर्स (Greedness) के मारे इस्लामी भाई खाने को बिग़ैर चबाए जल्दी जल्दी मे'दे में उतारने की कोशिश करते हैं ह़ालां कि खाने को अच्छी त़रह़ चबा कर खाना चाहिये क्यूं कि अगर अच्छी त़रह़ चबाए बिग़ैर निगल जाएंगे तो हज़्म करने के लिये मे'दे को सख़्त ज़ह़मत करनी पड़ेगी लिहाज़ा दांतों का काम आंतों से नहीं लेना चाहिये। इसी त़रह़ गर्म गर्म खाना या चाय बहुत से इस्लामी भाइयों को मरग़ूब होती है, इसी शौक़ की वजह से वोह अपना मुंह भी जला बैठते हैं। खाने को थोड़ा ठन्डा कर के ही खाना चाहिये, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा **280** पर है :

गर्म खाना मन्अ़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रसूले अ़ज़ीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : ''गर्म खाना ठन्डा कर लिया करो क्यूं कि गर्म खाने

में ब-र-कत नहीं होती।''

(المستدرک للحاکم، کتاب الاطعمۃ، الحدیث: ۷۲۰۷، ج۵، ص۱۶۲)

खाना कितना ठन्डा किया जाए !

ह़ज़रते सय्यि-दतुना जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि **नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم खाने की भाप ख़त्म होने से पहले उसे खाने को ना पसन्द फ़रमाते। (المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۱۷۲، ج۲۴، ص۶۶)

गर्म खाने के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खाना ठन्डा कर के खाना चाहिये मगर येह ज़रूरी नहीं कि इतना ठन्डा कर दें कि जम कर बद मज़ा हो जाए बल्कि कुछ ठन्डा हो लेने दें कि भाप (Steam) उठना बन्द हो जाए। **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡمَنَّان फ़रमाते हैं : ''खाने का क़दरे (या'नी कुछ) ठन्डा हो जाना और फूंकों से ठन्डा न करना बाइसे ब-र-कत है और इस त़रह़ खाने में तक्लीफ़ भी नहीं होती।'' (मिरआत, जि. 6, स. 52) तेज़ गर्म खाने या ख़ूब गर्मा गर्म चाय या कॉफ़ी वग़ैरा पीने से मुंह और गले के छाले, मे'दे में वरम वग़ैरा हो जाने का ख़त़रा है। नीज़ इस पर फ़ौरन ठन्डा पानी पीना मसूढ़ों और मे'दे को नुक़्सान पहुंचाता है।

फ़ास्ट फूड खाने वाले जल्द बाज़ होते हैं

फ़ास्ट फूड्ज़ (Fast Foods या'नी पिज़्ज़ा वग़ैरा) न सिर्फ़ सिह़्ह़त के लिये नुक़्सान देह होते हैं बल्कि एक जदीद तह़क़ीक़ के

मुताबिक़ ज़ियादा फ़ास्ट फूड्ज़ खाने वाले लोग बे सब्रे और जल्द बाज़ होते हैं। यूनीवर्सिटी ऑफ़ टोरेन्टो में की जाने वाली इस रीसर्च में माहिरीन ने बा क़ाइदगी से फ़ास्ट फूड्ज़ खाने वाले अफ़राद के मूड पर तहक़ीक़ की जिस के मुताबिक़ ऐसे अफ़राद हर काम में जल्दी करते हैं और मुख़्तलिफ़ फ़ैसलों में टाइम सेविंग (Time saving या'नी वक़्त बचाने वाली) चीज़ों का इन्तिख़ाब करते हैं, ख़्वाह वोह उन के लिये फ़ाएदा मन्द हों या नहीं ? अस्ल में फ़ास्ट फूड्ज़ का मक़्सद कम वक़्त में जल्दी जल्दी खाना है और येही आदत खाने वालों के रवय्ये पर असर डालती है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{37} बद गुमानी करने में जल्द बाज़ी

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "बद गुमानी से बचो बेशक बद गुमानी बद तरीन झूट है।"

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب ما یتخطب علی خطبۃ اخیہ، الحدیث ۵۱۴۳، ج ۳، ص ۴۴۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जल्द बाज़ी में किये जाने वाले गुनाहों में से एक गुनाह बद गुमानी भी है, इस में जल्दी तो क्या ताख़ीर से भी मुब्तला नहीं होना चाहिये मगर अफ़्सोस कि वालिदैन औलाद, भाई बहन, ज़ौज व ज़ौजा, सास बहू, सुसर दामाद, नन्द भावज बल्कि तमाम अहले ख़ाना व ख़ानदान नीज़ उस्ताद शागिर्द, सेठ और नोकर, ताजिर व गाहक, अफ़्सर व मज़दूर, हाकिम व महकूम अल ग़रज़ ऐसा लगता है कि तमाम दीनी व दुन्यवी शो'बों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले मुसल्मानों की अक्सरिय्यत इस वक़्त **बद**

गुमानी की ख़ौफ़नाक आफ़त की लपेट में है। किसी को मोबाइल पर फ़ोन करें और वोह वुसूल (Receive) न करे तो बद गुमानी..... शोहर की तवज्जोह बीवी की त़रफ़ कम हो गई तो फ़ौरन **सास से बद गुमानी**..... बेटे की तवज्जोह कम हो गई तो फ़ौरन **बहू से बद गुमानी**..... किसी फ़ेक्टरी से अच्छी नोकरी से फ़ारिग़ हो गए तो दफ़्तर के **किसी फ़र्द से बद गुमानी**..... कारोबार में नुक़्सान हो गया तो क़रीबी **कारोबारी ह़रीफ़ से बद गुमानी**..... तन्ज़ीमी त़ौर पर ख़िलाफ़े तवक़्क़ोअ़ बात हो गई तो **ज़िम्मादारान से बद गुमानी**..... इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त के इन्तिज़ामात में कमज़ोरी हुई तो फ़ौरन **मुन्तज़िमीन से बद गुमानी**..... इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में कोई शख़्स झूम रहा है या रो रहा है तो **बद गुमानी**..... किसी बुज़ुर्ग या पीर ने अपने मुरीदीन या मु-तअ़ल्लिक़ीन की तरग़ीब के लिये कोई अपना वाक़िआ़ बयान कर दिया तो फ़ौरन उन से **बद गुमानी**..... जिस ने क़र्ज़ लिया और वोह राबित़े में नहीं आ रहा या जिस से माल बुक करवा लिया वोह मिल नहीं रहा तो फ़ौरन **बद गुमानी**..... किसी ने वक़्त दिया और आने में ताख़ीर हो गई तो **बद गुमानी**..... फ़ुलां के पास थोड़े ही अ़र्से में गाड़ी, अच्छा मकान और दीगर सहूलियात आ गईं फ़ौरन बद गुमानी, उसे शोहरत मिल गई तो **बद गुमानी**। आप ग़ौर करते जाएं तो शबो रोज़ न जाने कितनी मर्तबा हम **बद गुमानी** का शिकार होते होंगे। फिर येह इब्तिदाअन पैदा होने वाली बद गुमानी उस शख़्स के ऐ़बों की टोह में लगाती, **ह़सद** पर उभारती, **ग़ीबत** और **बोहतान** पर उक्साती और आख़िरत बरबाद करती है। इसी बद गुमानी की वजह से भाई भाई में **दुश्मनी** हो जाती है, सास बहू में **ठन** जाती है, मियां बीवी में **जुदाई**, भाई बहनों के

दरमियान **क़त्अ़ तअ़ल्लुक़ी** हो जाती है और यूं हंसते बसते घर **उजड़** जाते हैं, और अगर येही बद गुमानी किसी मज़्हबी तह़रीक से वाबस्ता अफ़्राद में आ जाए तो निगरान व मा तह़त के दरमियान **ए'तिमाद की फ़ज़ा** ख़त्म हो जाती है जिस की वजह से ना क़ाबिले बयान नुक़्सान उठाना पड़ता है।

गुमानों से बचो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

(پ۲۶،الحجرٰت:۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो! बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह अबू उ़मर बिन मुह़म्मद शीराज़ी बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی कस्रते गुमान से मुमा-न-अ़त की ह़िक्मत बयान करते हुए तफ़्सीरे बैज़ावी में लिखते हैं : "ताकि मुसल्मान हर गुमान के बारे में **मोह़तात़** हो जाए और ग़ौरो फ़िक्र करे कि येह गुमान किस क़बील से है।" (تفسیر بیضاوی،پ۲۶،الحجرٰت،تحت الآیۃ ۱۲،ج۵،ص۲۱۸) **इस** आयते करीमा में बा'ज़ गुमानों को गुनाह क़रार देने की वजह बयान करते हुए इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی लिखते हैं : "क्यूं कि किसी शख़्स का काम देखने में तो बुरा लगता है मगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता क्यूं कि मुम्किन है कि करने वाला उसे भूल कर कर रहा हो या देखने वाला ही ग़-लत़ी पर हो।"

(التفسیر الکبیر،پ۲۶،الحجرٰت،تحت الآیۃ ۱۲،ج۱۰،ص۱۱۰)

नेक मुसल्मान की बात का बुरा मत़लब लेना भी बद गुमानी है

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुराद आबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : ''मोमिने सालेह़ के साथ बुरा गुमान मम्नूअ़ है इस त़रह़ (कि) उस का कोई कलाम सुन कर फ़ासिद मा'ना मुराद लेना बा वुजूदे कि उस के दूसरे सह़ीह़ मा'ना मौजूद हों और मुसल्मान का ह़ाल उन के मुवाफ़िक़ हो येह भी गुमाने बद में दाख़िल है।''

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 26, अल हुजुरात : 12)

शाही दरबार में सिफ़ारिश

शैख़ फ़रीदुद्दीन अ़त्तार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار (अल मु-तवफ़्फ़ा 606 हि.) लिखते हैं : दो दरवेश त़वील सफ़र के बा'द ह़ज़रते **अबू अ़ब्दुल्लाह** ख़फ़ीफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ اللَّطِيْف से मिलने पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि आप शाही दरबार में जल्वा फ़रमा हैं। येह सुन कर उन लोगों ने सोचा कि येह किस क़िस्म के बुज़ुर्ग हैं जो शाही दरबार में ह़ाज़िरी देते हैं। बहर ह़ाल येह दोनों बाज़ार की त़रफ़ निकल गए और अपने जेब सिलवाने के लिये एक दरज़ी (Tailor) की दुकान पर पहुंचे। इसी दौरान दरज़ी की क़ैंची गुम हो गई और उस ने इन दोनों को चोरी के शुबे में गिरिफ़्तार करवा दिया। जब पोलीस (Police) दोनों को ले कर शाही दरबार में पहुंची तो ह़ज़रते अबू **अ़ब्दुल्लाह** ख़फ़ीफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ اللَّطِيْف ने बादशाह से इन की सिफ़ारिश करते हुए फ़रमाया : ''येह दोनों चोर नहीं हैं, लिहाज़ा इन को छोड़ दिया जाए।'' चुनान्चे आप की सिफ़ारिश पर उन दोनों को रिहा कर दिया गया।

इस के बा'द आप ने उन दोनों से फ़रमाया : ''मैं इसी वजह से दरबारे शाही में मौजूद रहता हूं।'' येह सुन कर वोह दोनों मा'ज़िरत करने लगे और आप के अ़क़ीदत मन्दों में शामिल हो गए।[1]

(تذکرۃ الاولیاء، ذکر ابو عبداللہ خفیف، ص ۱۰۹)

मुझे ग़ीबतो चुग़्लियो बद गुमानी
की आफ़ात से तू बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

{38} गाड़ी चलाने में जल्द बाज़ी

हमारे मुल्क के अक्सरो बेशतर शहरों की सड़कों पर ट्राफ़िक (Traffic) का एक रेला सा नज़र आता है, हमा अक़्साम की गाड़ियों की बढ़ती हुई ता'दाद की वजह से ट्राफ़िक जाम (Traffic jam) जैसे मसाइल से दो चार होने वाला ड्राइवर (Driver) जैसे ही सड़क (Road) को ज़रा सा ख़ाली देखता है अपनी रफ़्तार बढ़ा देता है, इस जल्द बाज़ी में न वोह ट्राफ़िक के इशारों (Traffic signals) की परवाह करता है न दूसरी गाड़ियों से मुनासिब फ़ासिला रखता है और हर एक दूसरे से आगे निकलने के लिये कोशां दिखाई देता है, इस जल्द बाज़ी के नतीजे में वोही होता है जिस का डर होता है या'नी ह़ादिसा (Accident) और फिर कोई ज़ख़्मी होता तो कोई अपनी जान से हाथ धो बैठता है।

---

1 : बद गुमानी के बारे में तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ़ 57 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले ''बद गुमानी'' का ज़रूर मुता-लआ़ कीजिये।

उस ह़ादिसे को देख कर लोग इज़्हारे अफ़्सोस तो करते हैं मगर इ़ब्रत नहीं पकड़ते चुनान्चे कुछ ही देर बा'द तेज़ रफ़्तारी की बिना पर दूसरा ह़ादिसा भी वाक़ेअ़ हो जाता है। ऐ काश ! हम में से हर एक ह़द्दे ए'तिदाल में रहे तो इन ह़ादिसात में ख़ात़िर ख़्वाह कमी हो सकती है। याद रखिये ! "देर से पहुंचना न पहुंचने से बेहतर है।" एक अख़्बारी ख़बर मुला-ह़ज़ा हो : मिठ्ठियां (खारियां, पंजाब) से मन्डी बहाउद्दीन आने वाली मज़्दा (mazda) वेगन तेज़ रफ़्तारी के बाइ़स बे क़ाबू हो कर सामने से आने वाली कार और ट्रेक्टर ट्रॉली से टकरा गई नतीजे में कार में सुवार एक ही ख़ानदान के तीन अफ़्राद जां बह़क़ हो गए जब कि बस में सुवार एक मेह़नत कश भी चल बसा, दीगर ज़ख़्मियों में से बा'ज़ की ह़ालत तश्वीश नाक है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{39} सड़क पार करने में जल्द बाज़ी

सड़क (Road) पार करने में जल्द बाज़ी इन्सान को घर के बजाए क़ब्रिस्तान पहुंचा सकती है। अगर हम इन म-दनी फूलों पर अ़मल करें तो ह़ादिसे (Accident) से बच सकते हैं : ۞ पैदल चलने में जो क़वानीन ख़िलाफ़े शर-अ़ न हों उन की पासदारी कीजिये म-सलन गाड़ियों की आ-मदो रफ़्त के मौक़अ़ पर सड़क पार करने के लिये मुयस्सर हो तो "ज़ेब्रा क्रॉसिंग" या "अवर हेड पुल (Over head bridge)" इस्ति'माल कीजिये ۞ जिस सम्त से गाड़ियां आ रही हों उस त़रफ़ देख कर ही सड़क उ़बूर कीजिये, अगर आप बीच सड़क पर हों और गाड़ी आ रही हो तो भाग पड़ने के बजाए मौक़अ़ की मुना-सबत से वहीं खड़े रह जाइये कि इस में

हिफ़ाज़त ज़ियादा है नीज़ रेलगाड़ी (Train) गुज़रने के अवक़ात में **पटरियां** (Tracks) उ़बूर करना अपनी मौत को दा'वत देना है, रेलगाड़ी को काफ़ी दूर समझ कर गुज़रने वाले को जल्दी या बे ख़याली में किसी तार वग़ैरा में पाउं उलझ जाने की सूरत में गिरने और ऊपर से रेलगाड़ी गुज़र जाने के ख़त़रे को पेशे नज़र रखना चाहिये नीज़ बा'ज़ जगहें ऐसी होती हैं जहां **पटरी** से गुज़रना ही ख़िलाफ़े क़ानून होता है ख़ुसूसन स्टेशनों पर इन क़वानीन पर अ़मल कीजिये। एक अख़्बारी ख़बर मुला-ह़ज़ा हो : 21 जनवरी 2011 ई. को बरोज़ जुमुआ़ तलागंग (ज़िलअ़ अटक पंजाब) के अ़लाक़ा झाटला का जवां साल रिहाइशी ड्राइवर सड़क पार करते हुए तेज़ रफ़्तार कोच (Coach) की ज़द में आ कर हलाक हो गया। तफ़्सीलात के मुत़ाबिक़ 30 सालह ट्रेलर ड्राइवर ट्रेलर ले कर लाहोर से वापस आ रहा था कि रास्ते में एक काम के लिये ट्रेलर खड़ा कर के दुकान पर गया जहां से वापस सड़क पार करते हुए तेज़ रफ़्तार कोच ने उस को कुचल कर हलाक कर दिया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

{40} गाड़ी पर सुवार होने या उतरने में जल्द बाज़ी

ट्रेन (Train) में सुवार होते वक़्त या उतरते वक़्त जिस त़रह़ धक्कम पील होती है इस का तजरिबा व मुशा-हदा बहुत सारों को होगा, बारहा देखा गया कि जूंही ट्रेन किसी स्टेशन (Station) पर रुकती है और उतरने वाले जल्दी से उतरने और सुवार होने वाले तेज़ी से चढ़ने की फ़िक्र में होते हैं यूं दोनों फंस कर रह जाते हैं, ऐसे वक़्त

में अगर ट्रेन चल पड़े तो ह़ादिसा होने का इम्कान बढ़ जाता है। अगर सुवार होने वाले पहले उतरने वालों को उतर लेने दें फिर ख़ुद आराम से सुवार हो जाएं तो येह मरह़ला आ़फ़िय्यत व सुकून से मुकम्मल हो सकता है। इसी त़रह़ बड़े शहरों में अ़वामी सुवारी (Public Transport) भी जब किसी स्टॉप पर पहुंचती है तो हर एक दूसरे से पहले सुवार होने की जल्दी करता है और धक्कम धक्का की इस कैफ़िय्यत में कई मुसल्मानों को तक्लीफ़ पहुंच जाती है, ऐ काश ! ऐसे मवाक़ेअ़ पर क़ित़ार (Row) बना ली जाए तो ब ह़ैसिय्यते क़ौम हमारे बहुत से मसाइल ह़ल हो सकते हैं।

मैं दा'वते इस्लामी से क्यूं मु-तअस्सिर हुवा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जल्द बाज़ी से बचने का ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़् कम तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये और **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहिये। आइये आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं : चुनान्चे दा'वते इस्लामी की मजलिसे राबित़ा बिल उ़-लमा वल मशाइख़ के निगरान इस्लामी भाई का बयान है कि मर्कज़ुल औलिया लाहोर से तअ़ल्लुक़ रखने वाले एक आ़लिमे दीन से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने दा'वते इस्लामी से मु-तअस्सिर होने का सबब कुछ यूं बयान

किया कि मैं एक जगह बैठा हुवा था कि मेरी नज़र बस स्टॉप पर खड़े सब्ज़ इमामे वाले इस्लामी भाई पर पड़ी, जूंही कोई बस वहां पहुंचती वोह सुवार होने के लिये आगे बढ़ते मगर दीगर सुवार होने वालों की धक्कम पील में शामिल होने के बजाए पीछे हट जाते, वहां कई बसें आईं मगर वोह बेचारे भीड़ की वजह से सुवार होने में नाकाम रहे, काफ़ी देर बा'द एक बस आई जिस में रश नहीं था और बस स्टॉप से सुवार होने वाले भी कम थे चुनान्चे वोह इस्लामी भाई किसी को धक्का दिये बिग़ैर उस बस में सुवार हो कर चले गए, मैं उन की शराफ़त देख कर बहुत मु-तअस्सिर हुवा कि दा'वते इस्लामी कैसी प्यारी तहरीक है जो अपने वाबस्तगान की ऐसी शानदार तरबिय्यत करती है ! बस उस दिन से मैं दा'वते इस्लामी से बहुत महब्बत करता हूं ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{41} बिल वग़ैरा जम्अ करवाने में जल्द बाज़ी

बिजली व गेस के बिल (Bill) या दीगर फ़ॉर्म (Form) वग़ैरा जम्अ करवाते वक़्त उ़मूमन क़ितार बना ली जाती है मगर बा'ज़ जल्द बाज़ उसे भी दरहम बरहम करने की कोशिश करते हैं और क़ितार में खड़े होने वालों को नज़र अन्दाज़ करते हुए अपना काम पहले करवाने की कोशिश करते हैं और इस में काम्याब भी हो जाते हैं मगर दूसरों के दिल पर क्या गुज़रती है ? उन्हें इस का एहसास तक नहीं होता ।

{42} ग़मनाक ख़बर सुनाने में जल्द बाज़ी

किसी को वफ़ात या किसी संगीन हादिसे या नुक़्सान की ख़बर देने से पहले उस की कैफ़िय्यत को ज़रूर मद्दे नज़र रखना चाहिये फिर मुनासिब अल्फ़ाज़ में तम्हीद बांधने के बा'द वोह ख़बर उसे सुनानी चाहिये, वरना कई ऐसे वाक़िआ़त हैं कि किसी कमज़ोर दिल वाले को उस के किसी अ़ज़ीज़ के इन्तिक़ाल की ख़बर दी गई तो उस के सदमे से उस को हार्ट अटेक (Heart attack) हो गया और वोह ख़ुद भी मौत से हम-कनार हो गया। ख़बर किस त़रह़ सुनानी चाहिये एक सच्ची ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये :

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्ह़ूम रुक्न मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَنِى के विसाल के वक़्त शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस्लामी किताबों के तह़रीरी काम के सिल्सिले में मुल्क से बाहर थे क्यूं कि पाकिस्तान में मौजूद होने की सूरत में ख़ल्क़त का आप की त़रफ़ इस क़दर रुजूअ़ होता है कि आप यक्सूई से तह़रीरी काम नहीं कर पाते। रात आठ बजे के बा'द अमीरे अहले सुन्नत مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِى को मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के इन्तिक़ाल की इत्तिलाअ़ दी गई। दर अस्ल बाबुल मदीना से जाने वाला फ़ोन आप के साथ मुक़ीम इस्लामी भाई ने वुसूल (Receive) किया और उस ने अमीरे अहले सुन्नत مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِى को फ़ौरन न बताया बल्कि जब इत्मीनान से रात के खाने और चाय से फ़ारिग़ हो चुके तब इस्लामी भाई के लब वा हुए और उन की आंखों से रुके हुए अश्क बह निकले, उन्हों ने मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की रिह्लत की ख़बरे वह्शत असर अमीरे अहले सुन्नत مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی को सुनाई। अपने म-दनी बेटे की दुन्या से रुख़्सती की दर्द अंगेज़ ख़बर मिलने पर बानिये दा'वते इस्लामी مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی भी सदमे से निढाल नज़र आने लगे और रिक़्क़ते क़ल्बी की वजह से आप की चश्माने मुबा-रका में आंसूओं के सितारे झिलमिलाने लगे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{43} समझाने में जल्द बाज़ी

किस को ? किस वक़्त ? किस त़रह़ समझाना चाहिये येह गुर सीखना उन इस्लामी भाइयों के लिये बहुत ज़रूरी है जो अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश का जज़्बा रखते हैं। किसी की इस्लाह़ करना बहुत नाज़ुक (Critical) काम है ज़रा सी जल्द बाज़ी बना बनाया खेल बिगाड़ देती है। बा'ज़ वालिदैन अपनी औलाद को या बड़े भाई छोटे भाइयों को सब के सामने उन की ग़-लतियों पर तम्बीह करना बल्कि झाड़ना शुरूअ़ कर देते हैं जिस से वोह अपनी सुब्की (Insult) महसूस करते हैं और मुनासिब इस्लाह़ नहीं हो पाती। जब तक कोई मस्लह़त न हो तन्हाई में शफ़्क़त के साथ समझाने के ख़ुश गवार नताइज निकलते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जिस ने अपने भाई को सब के सामने नसीह़त की उस ने उस को ज़लील कर दिया और जिस ने तन्हाई में नसीह़त की उस ने उस को मुज़य्यन (आरास्ता) कर दिया।" (تنبیہ الغافلین ص ۹۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{44} शिक्वा करने में जल्द बाज़ी

इन्सानी ज़िन्दगी ख़ुशी और ग़मी से इबारत है लेकिन बा'ज़ इस्लामी भाई परेशानी या मुसीबत आते ही शिक्वा व शिकायत का अम्बार लगा देते हैं, ऐसा नहीं करना चाहिये क्यूं कि हो सकता है कि इस मुसीबत से भी बड़ी मुसीबत हम पर आने वाली हो मगर छोटी मुसीबत दे कर उसे हम से दूर कर दिया गया हो लिहाज़ा जब इन्सान को कोई ग़म मिले तो सब्र करना और रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहना ही अक़्ल मन्दी है।

मैं रिज़ाए इलाही पर राज़ी हूं

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز से पूछा गया : مَا تَشْتَھِیْ या'नी आप की क्या ख़्वाहिश है ? फ़रमाया : مَا یَقْضِی اللّٰہُ या'नी जो **अल्लाह** तआला का हुक्म हो। (احیاء العلوم، ج۱، ص۲۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआला की रिज़ा पर राज़ी रहना सआदत मन्दों का शेवा है, और क्यूं न हो कि हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ मांगा करते थे : **या अल्लाह !** मैं तुझ से तन्दुरुस्ती, पाक दामनी, अमानत दारी और अच्छे अख़्लाक़ और तक़्दीर पर रिज़ा मांगता हूं।

(کتاب الادب للبخاری، ص۸۶، الحدیث۳۰۷)

इस पर मेरी रह़मत है

रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहने वाले को बेश बहा ब-र-कतें मिलती हैं ! चुनान्चे हुज़ूरे अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दा **अल्लाह** तआला की रिज़ा तलाश करता रहता है,

इसी जुस्त–जू में रहता है, **अल्लाह** तआ़ला जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से फ़रमाता है कि फ़ुलां मेरा बन्दा मुझे राज़ी करना चाहता है मुत्तलअ़ रहो कि इस पर मेरी रह़मत है, तब जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) कहते हैं फ़ुलां पर **अल्लाह** की रह़मत है, येही बात ह़ामिलीने अ़र्श फ़िरिश्ते कहते हैं, येही उन के इर्द गिर्द के फ़िरिश्ते कहते हैं ह़त्ता कि सातवें आस्मान वाले येह कहने लगते हैं फिर येह रह़मत उस के लिये ज़मीन पर नाज़िल होती है।

(مسند احمد، الحدیث ۲۲۴۶۲، ج۸، ص ۸۲۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : (बन्दा **अल्लाह** की रिज़ा तलाश करता रहता है) इस त़रह़ कि अपने हर दीनी व दुन्यावी कामों से रब तआ़ला की रिज़ा चाहता है कि खाता पीता, सोता जागता भी है तो रिज़ाए इलाही के लिये, नमाज़ व रोज़ा तो बहुत ही दूर रहे ख़ुदा तआ़ला इस की तौफ़ीक़ नसीब करे। ह़दीसे पाक के इस हिस्से कि "इस पर मेरी रह़मत है" की वज़ाह़त करते हुए लिखते हैं : या'नी इस पर मेरी कामिल रह़मत है इस त़रह़ कि मैं इस से राज़ी हो गया ख़याल रहे कि **अल्लाह** की रिज़ा तमाम ने'मतों से आ'ला ने'मत है, जब रब तआ़ला बन्दे से राज़ी हो गया तो कौनैन (या'नी दोनों जहान) बन्दे के हो गए, आस्मानों में उस के नाम की धूम मच जाती, शोर मच जाता है कि رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه येह कलिमा दुआ़इया है, या'नी **अल्लाह** तआ़ला इस पर रह़मत करे, येह दुआ़ या तो फ़िरिश्तों की मह़ब्बत की वजह से होती है या ख़ुद वोह फ़िरिश्ते अपने क़ुर्बे इलाही बढ़ाने के लिये येह दुआ़एं देते हैं अच्छों

को दुआ़एं देना कुर्बे इलाही का ज़रीआ़ है जैसे हमारा दुरूद शरीफ़ पढ़ना । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 398)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

{45} मौत की त़लब में जल्द बाज़ी (ख़ुदकुशी)

मसाइब से तंग आ कर, ख़्वाहिशात पूरी न होने पर, सहूलियात व आसाइशात से मह़रूम होने के सबब और घरेलू झगड़ों वग़ैरा की वजह से अपने हाथों ख़ुद को मौत के मुंह में धकेल देना ख़ुदकुशी (Suicide) है जो गुनाहे कबीरा ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । पारह 5 **सू-रतुन्निसाअ** आयत नम्बर 29 और 30 में इर्शादे बारी तआ़ला है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۫ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝۲۹ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝۳۰

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! आपस में एक दूसरे के माल नाह़क़ न खाओ, मगर येह कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रिज़ा मन्दी का हो । और अपनी जानें क़त्ल न करो बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुम पर मेहरबान है । और जो ज़ुल्म व ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अ़न्क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को आसान है ।

وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ (या'नी और अपनी जानें क़त्ल न करो) के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन

मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में फ़रमाते हैं : **मस्अला :** इस आयत से **ख़ुदकुशी** की हुरमत (या'नी ह़राम होना) भी साबित है ।

आग में अ़ज़ाब

याद रखिये ! ख़ुदकुशी करने से जान छूटती नहीं बल्कि फंसती है चुनान्चे **ह़दीसे** पाक में है : "जो शख़्स जिस चीज़ के साथ **ख़ुदकुशी** करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ **अ़ज़ाब** दिया जाएगा ।" (صحیح البخاری ج۴ ص۲۸۹ حدیث ۶۶۵۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{46} मुत़ा-लआ़ करने में जल्द बाज़ी

मुत़ा-लआ़ (Study) हुसूले इ़ल्म का बेहतरीन ज़रीआ़ है लेकिन जल्द बाज़ी से मुत़ा-लआ़ करने की वजह से बहुत सी बातें मुकम्मल समझ नहीं आतीं और मक़्सदे मुत़ा-लआ़ फ़ौत हो जाता है, इस लिये बहुत सुकून से नीचे दिये गए म-दनी फूलों के मुत़ाबिक़ मुत़ा-लआ़ करने की आ़दत बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को इस मुत़ा-लए से बहुत कुछ ह़ासिल होगा ।

ह़दीसे पाक "اَلْعِلْمُ اَفْضَلُ مِنَ الْعِبَادَۃِ" के अठ्ठारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से दीनी मुत़ा-लआ़ करने के 18 म-दनी फूल

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और ह़ुसूले सवाब की निय्यत से मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

(2) मुत़ा-लआ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल ह़म्दो सलात पढ़ने की आ़दत बनाइये, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस नेक काम से

क़ब्ल **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द और मुझ पर दुरूद न पढ़ा गया उस में ब-र-कत नहीं होती। (کنزالعمال ج۱،ص۲۷۹، حدیث۲۵۰۷) वरना कम अज़् कम **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ तो पढ़ ही लीजिये कि हर साह़िबे शान काम करने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़नी चाहिये।[1]

(ایضاً،ص۲۷۷حدیث۲۴۸۷)

(3) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, **''जिन्नात का बादशाह''** के **सफ़ह़ा** 23 पर है : क़िब्ला रू बैठिये कि इस की ब-र-कतें बे शुमार हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : दो त़-लबा इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये परदेस गए, दो साल तक दोनों हम सबक़ रहे, जब वत़न लौटे तो उन में एक **फ़क़ीह** (या'नी ज़बर दस्त आ़लिम) बन चुके थे जब कि दूसरा इ़ल्मो कमाल से **ख़ाली** ही रहा था। उस शहर के उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام ने इस अम्र पर ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ किया, दोनों के ह़ुसूले इ़ल्म के त़रीक़ए कार, अन्दाज़े तक्रार और बैठने के अत़्वार वग़ैरा के बारे में तह़क़ीक़ की तो एक बात जो कि नुमायां त़ौर पर सामने आई वोह येह थी कि जो **फ़क़ीह** बन कर पलटे थे उन का मा'मूल येह था कि वोह सबक़ याद करते वक़्त **क़िब्ला रू** बैठा करते थे जब कि दूसरा जो कि कोरे का कोरा पलटा था वोह क़िब्ले की त़रफ़ पीठ कर के बैठने का आ़दी था, चुनान्चे तमाम उ़-लमा व फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام इस बात पर **मुत्तफ़िक़** हुए कि **येह**

1 : इस किताब के शुरूअ़ में दी हुई ह़म्दो सलात पढ़ ली जाए तो اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दोनों ह़दीसों पर अ़मल हो जाएगा।

ख़ुश नसीब इस्तिक़्बाले क़िब्ला (या'नी क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ करने) **के एहतिमाम की ब-र-कत से फ़क़ीह बने हैं क्यूं कि बैठते वक़्त का 'बतुल्लाह शरीफ़ की सम्त मुंह रखना सुन्नत है।**

(تعلیم المتعلم طریق التعلم ص ۶۷)

(4) सुब्ह़ के वक़्त मुत़ा-लआ़ करना बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि उ़मूमन इस वक़्त नींद का ग़-लबा नहीं होता और ज़ेह्न ज़ियादा काम करता है।

(5) शोरो ग़ुल से दूर पुर सुकून जगह पर बैठ कर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(6) अगर जल्द बाज़ी या टेन्शन (Tension या'नी परेशानी) की ह़ालत में पढ़ेंगे म-सलन कोई आप को पुकार रहा है और आप पढ़े जा रहे हैं, या इस्तिन्जा की ह़ाजत है और आप मुसल्सल मुत़ा-लआ़ किये जा रहे हैं, ऐसे वक़्त में आप का ज़ेह्न काम नहीं करेगा और ग़लत़ फ़हमी का इम्कान बढ़ जाएगा।

(7) किसी भी ऐसे अन्दाज़ पर जिस से आंखों पर ज़ोर पड़े म-सलन बहुत मध्धम **या** ज़ियादा तेज़ रोशनी में **या** चलते चलते **या** चलती गाड़ी में **या** लैटे लैटे **या** किताब पर झुक कर मुत़ा-लआ़ करना आंखों के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है। बल्कि किताब पर ख़ूब झुक कर मुत़ा-लआ़ करने या लिखने से आंखों के नुक़्सान के साथ साथ कमर और फेफड़े की बीमारियां भी होती हैं।

(8) कोशिश कीजिये कि रोशनी ऊपर की जानिब से आ रही हो, पिछली त़रफ़ से आने में भी ह़रज नहीं जब कि तह़रीर पर साया न पड़ता हो मगर सामने से आना आंखों के लिये नुक़्सान देह है।

(9) मुत़ा-लआ़ करते वक़्त ज़ेह्न ह़ाज़िर और त़बीअ़त तरो ताज़ा (Fresh) होनी चाहिये।

(10) वक़्ते मुता-लआ़ ज़रूरतन क़लम हाथ में रखना चाहिये कि जहां आप को कोई बात पसन्द आए या कोई ऐसा जुम्ला या मस्अला जिस की आप को बा'द में ज़रूरत पड़ सकती हो, ज़ाती किताब होने की सूरत में उसे अन्डर लाइन (Under line) कर सकें।

(11) किताब के शुरूअ़ में उ़मूमन दो एक ख़ाली काग़ज़ होते हैं, उस पर **याद दाश्त** लिखते रहिये या'नी इशारतन चन्द अल्फ़ाज़ लिख कर उस के सामने सफ़हा नम्बर लिख लीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ अक्सर किताबों के शुरूअ़ में याद दाश्त के सफ़हात लगाए जाते हैं।

(12) मुश्किल अल्फ़ाज़ पर भी निशानात लगा लीजिये और किसी जानने वाले से दरयाफ़्त कर लीजिये।

(13) सिर्फ़ आंखों से नहीं ज़बान से भी पढ़िये कि इस त़रह़ याद रखना ज़ियादा आसान है।

(14) वक़्फ़े वक़्फ़े से आंखों और गरदन की वरज़िश (Exercise) कर लीजिये क्यूं कि काफ़ी देर तक मुसल्सल एक ही जगह देखते रहने से आंखें थक जातीं और बा'ज़ अवक़ात गरदन भी दुख जाती है। इस का त़रीक़ा येह है कि आंखों को दाएं बाएं, ऊपर नीचे घुमाइये। इसी त़रह़ गरदन को भी आहिस्ता आहिस्ता ह़-र-कत दीजिये।

(15) इसी त़रह़ कुछ देर मुता-लआ़ कर के दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ कर दीजिये और जब आंखों वग़ैरा को कुछ आराम मिल जाए तो फिर मुता-लआ़ शुरूअ़ कर दीजिये।

(16) एक बार के मुता-लए़ से सारा मज़्मून याद रह जाना बहुत दुश्वार है कि फ़ी ज़माना हाज़िमे भी कमज़ोर और ह़ाफ़िज़े भी कमज़ोर! लिहाज़ा दीनी कुतुब व रसाइल का बार बार मुता-लआ़ कीजिये।

(17) मक़ूला है : اَلسَّبَقُ حَرْفٌ وَالتَّكْرَارُ اَلْفٌ या'नी सबक़ एक ह़र्फ़ हो और तक्रार (या'नी दोहराई) एक हज़ार बार होनी चाहिये ।

(18) जो भलाई की बातें पढ़ी हैं सवाब की निय्यत से दूसरों को बताते रहिये, इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को याद हो जाएंगी ।

(इल्मो ह़िक्मत के 125 म-दनी फूल, स. 72)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{47} मुलाक़ात में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई जब किसी से मिलने पहुंचते हैं तो रुके बिग़ैर मुसल्सल दरवाज़ा पीटते हैं या बार बार घन्टी (Bell) बजा कर अहले ख़ाना का सुकून बरबाद करते हैं । ह़ालां कि होना येह चाहिये कि दस्तक (knock) दे कर थोड़ा इन्तिज़ार किया जाए ताकि किसी को दरवाज़े पर आने का मौक़अ़ मिल सके, येह भी मुम्किन है कि साह़िबे ख़ाना इस्तिन्जा ख़ाने (Toilet) में हों या फिर नमाज़ पढ़ रहे हों इस लिये अगर थोड़ी देर तक जवाब न मिले तो परेशान हुए बिग़ैर दूसरी दस्तक दीजिये और थोड़े वक़्फ़े के बा'द तीसरी दस्तक दीजिये, फिर भी जवाब न मिले तो नाराज़ हुए बिग़ैर लौट आइये और दस्तक के जवाब में अगर कोई अन्दर से पूछे : कौन है ? बाहर वाले को चाहिये कि अपना नाम बताए : म-सलन कहे : "मुह़म्मद शाहिद ।" नाम बताने के बजाए इस मौक़अ़ पर "मदीना !", "मैं हूं !", "दरवाज़ा खोलो" वग़ैरा कहना सुन्नत नहीं, जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलने के वक़्त घर के अन्दर नज़र न पड़े ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{48} ख़बर देने में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाई हर सुनी सुनाई बात को बिला तह़क़ीक़ जल्दी से आगे बढ़ा देते हैं और अफ़्वाह साज़ी (Rumor making) में कलीदी किरदार (Key role) अदा करते हैं ह़ालां कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : "इन्सान के झूटा होने के लिये येह बात काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात कर दे ।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، رقم الحدیث ۵، ص ۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{49} किसी के बारे में राय क़ाइम कर लेने में जल्द बाज़ी

किसी के ज़ाहिरी ह़ुल्ये को देख कर एक दम किसी के बारे में अच्छी या बुरी राय क़ाइम कर लेना शरमिन्दगी और नुक़्सान से दो चार करवा सकता है, एक सच्ची ह़िकायत मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे

गुदड़ी में ला'ल

एक शख़्स का बयान है कि एक रोज़ मेरे पास एक निहायत ही शिकस्ता ह़ाल इन्सान इन्तिहाई बोसीदा लिबास पहने हुए आया और अचानक मेरी इजाज़त के बिग़ैर मेरी मस्नद पर बिराजमान हो गया । अपना नाम अबू या'क़ूब बसरी बताया और मेरी त़रफ़ मुख़ात़िब हो कर फ़ख़्रिया लहजे में कहा : سَلْ یَا فتٰی عَمَّا بَدَالَکَ या'नी ऐ जवान ! जो तेरे दिल में आए मुझ से पूछ ले । मुझे उस के इस फ़ख़्र आमेज़ लबो लहजे पर बड़ा ग़ुस्सा

आया और मैं ने त़न्ज़ के त़ौर पर कह दिया कि अगर ह़जामत (या'नी पुछना लगाने) के बारे में जनाब को कुछ मा'लूमात हों तो इर्शाद फ़रमाइये ? येह सुन कर एक दम वोह शख़्स संभल कर बैठ गया और ह़दीस ''اَفْطَرَ الْحَاجِمُ وَالْمَحْجُوْم'' की तमाम रिवायात को बयान कर के बताने लगा कि किन किन स-नदों से येह ह़दीस मुस्नद है, और किन किन स-नदों से येह ह़दीस मौक़ूफ़ व मुरसल है, और कौन कौन से फ़ु-क़हा का इस पर अ़मल रहा है ? फिर उस ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पुछना लगाने के मुख़्तलिफ़ मक़ामात, मुख़्तलिफ़ त़रीक़े, पुछना लगाने वालों के नाम, पुछना लगाने की उज्रतों और इन के अह़काम का तफ़्सीली बयान किया, ह़दीस व फ़िक़्ह की तमाम बह़सों के बा'द वोह अति़ब्बा के अक़्वाल की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा तो उन तमाम त़बीबों के अक़्वाल बयान करने लगा जो मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मुख़्तलिफ़ अति़ब्बा कहते रहे, फिर ह़जामत के फ़वाइद इस के मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों, इस के मुख़्तलिफ़ आलात पर सैर ह़ासिल बह़स करने के बा'द तारीख़ का नम्बर आया, तो उस ने बहुत से शवाहिद और दलाइल से येह साबित कर दिया कि ''अ़-मले ह़जामत'' के मूजिद अहले अस्फ़हान हैं। उस शख़्स की मा'लूमात की वुस्अ़त और उस के सैलाबे तक़रीर की जौलानी व रवानी देख कर मैं दरियाए ह़ैरतो इस्ति'जाब में ग़रक़ाब हो गया यहां तक कि मैं ने उस की त़रफ़ मुख़ाति़ब हो कर कह दिया कि ऐ शख़्स ! बस कर मुझे मुआ़फ़ कर दे मैं वा'दा करता हूं कि ख़ुदा की क़सम अब तेरे बा'द मैं किसी शख़्स को भी ह़क़ारत की नज़र से नहीं देखूंगा।

(وفیات الاعیان، حرف الدال، ج۲، ص۲۱۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई किसी को शिकस्ता ह़ाल और बोसीदा लिबास में देख कर हरगिज़ कभी ह़क़ीर नहीं समझना चाहिये, बहुत से बा कमाल फटे पुराने कपड़ों में शिकस्ता ह़ाल हैं, मगर अपने इ़ल्मो फ़ज़्ल की मस्ती में तमाम दुन्या से फ़ारिग़ुल बाल ऐसे ख़ुशह़ाल हैं कि

फटे कपड़ों में ख़न्दां मिस्ले गुल हैं
शराफ़त क्या बहारे बे ख़ज़ां है

बुज़ुर्गों ने ऐसे लोगों को गुदड़ी में ला'ल कहा है और सख़्त ताकीद व तम्बीह की है।

خَاکْسَارَانِ جَہَاں رَا بَحَقَارَتْ مَنَگَرْ
تُو چِہ دَانِیْ کِہ دَرِیْں گَرْدْ سُوَارِے بَاشَدْ

या'नी दुन्या के ख़ाकसारों को ह़क़ारत की नज़र से मत देखो, तुम को क्या मा'लूम ? कि इस गर्द में कोई सुवार छुपा हो और फटे पुराने लिबास में कोई बा कमाल शख़्स हो सिर्फ़ सूरत व लिबास देख कर किसी के ऐ़ब व हुनर का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। (रूह़ानी ह़िकायात, स. 30) इन्सान के फ़ज़्लो कमाल का जौहर तो गुफ़्त-गू के बा'द ही ज़ाहिर होता है, ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने इस फ़ल्सफ़े को अपने एक शे'र में बयान कर दिया है :

تَا مَرْدْ سُخَنْ نَگُفْتَہ بَاشَدْ   عَیْبُ و ہُنَرَشْ نَہُفْتَہ بَاشَدْ

या'नी जब तक आदमी बात नहीं करता, उस वक़्त तक उस का ऐ़ब व हुनर दोनों छुपे रहते हैं। (گلستانِ سعدی ص ۱۵)

इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात इस्लामी भाइयों को किसी शै का तल्ख़ तजरिबा (Experience) होता है तो उ़म्र भर के लिये उस शै

को ब्लेक लिस्ट (Black list) क़रार दे देते हैं ह़ालां कि ज़रूरी नहीं कि जिस शै के बारे में आप को बुरा तजरिबा हुवा वोह शै वाक़ेअ़ में भी बुरी हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{50} फ़ैसला करने में जल्द बाज़ी

इन्सान को अक्सरो बेशतर फ़ैसला साज़ी (Decision) के अ़मल से गुज़रना पड़ता है, इसी त़रह़ बहुत मर्तबा इन्सान को दो चीज़ों में से किसी एक का इन्तिख़ाब (Selection) करना होता है और येह फ़ैसला भरपूर ग़ौरो फ़िक्र का तक़ाज़ा करता है, ऐसे मौक़अ़ पर भी जल्द बाज़ी इन्सान से ऐसे फ़ैसले करवा देती है जो मुस्तक़्बिल में ग़लत़ साबित होते हैं लेकिन उस वक़्त पछताने से कुछ ह़ासिल नहीं होता । इस लिये जब भी कोई अहम फ़ैसला करना पड़े तो ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कीजिये, माज़ी के तजरिबात से फ़ाएदा उठाइये, त़ैश या बहुत ख़ुश हो कर मूड में आ कर फ़ैसला न कीजिये, और ह़त्तल इम्कान तजरिबा कार (Experienced) इस्लामी भाइयों से मश्वरे के बा'द फ़ैसला कीजिये । फिर भी किसी त़रफ़ राय न जमे तो इस्तिख़ारा कर लीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{51} तह़रीर में जल्द बाज़ी

बा'ज़ इस्लामी भाइयों का ख़त़ (या'नी लिखाई) बहुत शिकस्ता (poor) होता है जो आसानी से समझ में नहीं आता, इस बद ख़त़ी

के पीछे भी जल्द बाज़ी कार फ़रमा होती है, इसी त़रह़ जल्द बाज़ी में लिखी गई तह़रीर भी बा'द में शरमिन्दगी का बाइ़स बनती है इस लिये अपनी हर तह़रीर पर ख़्वाह वोह आधी सत़र ही क्यूं न हो **नज़रे सानी** (Review) की आ़दत बना लीजिये कि बा'ज़ अवक़ात आदमी बे ख़याली में ''हां'' का ''ना'' और ''ना'' का ''हां'' नीज़ जाइज़ को ना जाइज़ और ना जाइज़ को जाइज़ लिख देता है। ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन कसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر का क़ौल है : लिखने के बा'द **नज़रे सानी** न करने वाला ऐसा है गोया इस्तिन्जा ख़ाने जा कर बिग़ैर त़हारत के लौट आया। (جامع بيان العلم وفضله ص۱۰۹) लिहाज़ा जल्द बाज़ी मत कीजिये जब अच्छी त़रह़ मुत़्मइन हो जाएं तो येह तह़रीर किसी के ह़वाले कीजिये। ई मेइल (E.mail) या मोबाइल पर मेसेज (sms) करते वक़्त भी इस का ख़याल रखिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

{52} इम्तिह़ान में जल्द बाज़ी

त़-लबा (Students) भी जल्द बाज़ी की वजह से नुक़्सान उठाते हैं म-सलन जल्दी जल्दी सबक़ याद करने से सह़ीह़ सबक़ याद नहीं हो पाता ऐसे त़-लबा को चाहिये कि सुकून के साथ सबक़ याद करें, जल्द बाज़ी मत करें कि सिवाए वक़्त के ज़ियाअ़ के कुछ ह़ासिल न होगा। इसी त़रह़ बा'ज़ इस्लामी भाई इम्तिह़ान (Examination) में आसान सुवालात पूछे जाने पर जल्द बाज़ी का शिकार हो जाते हैं और ग़लत़ जवाबात भी लिख डालते हैं। परचा (paper) जम्अ़ कराने में भी जल्द बाज़ी मत किया करें बल्कि जब आप बिल्कुल मुत़्मइन हो जाएं तो जम्अ़ करवा दीजिये।

आप का मरीज़ 30 सेकन्ड पहले मर चुका है

डॉक्टर बनने के लिये इन्टरव्यू देने वाले नौ जवान से प्रोफ़ेसर ने पूछा कि अगर किसी को दिल का दौरा पड़ जाए तो आप फ़ुलां दवाई उसे कितनी मिक़्दार में देंगे ? नौ जवान ने जल्द बाज़ी में जवाब दिया : ''चार ।'' मगर एक मिनट बा'द उस ने प्रोफ़ेसर से पूछा : क्या मैं अपना जवाब तब्दील कर सकता हूं ? इजाज़त मिलने पर उस ने कहा : मैं उस मरीज़ को एक गोली दूंगा । प्रोफ़ेसर ने घड़ी देखते हुए कहा : अफ़्सोस ! आप का मरीज़ तीस सेकन्ड पहले मर चुका है (या'नी : गोया आप ने जल्द बाज़ी की वजह से उसे ज़रूरत से ज़ियादा दवाई खिला दी जिस से वोह मौत के मुंह में पहुंच गया) ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

{53} पीर बनाने में जल्द बाज़ी

सफ़रे आख़िरत के रास्ते में किसी को अपना रहनुमा (या'नी पीरो मुर्शिद) बनाना इन्सानी ज़िन्दगी के अहम फ़ैसलों में से एक है लेकिन बा'ज़ इस्लामी भाई इस मुआ-मले में इन्तिहाई जल्द बाज़ वाक़ेअ़ होते हैं, ह़ालां कि मुकम्मल मा'रिफ़त ह़ासिल किये बिग़ैर तो किसी को कारोबार में पार्टनर (Partner) भी नहीं बनाया जाता चेजाए कि उख़रवी सफ़र के लिये रहनुमा का इन्तिख़ाब किया जाए । चुनान्चे कभी किसी के बारे में लोगों की सुनी सनाई बातों को बुन्याद बना कर अ़क़ीदत क़ाइम कर ली जाती है ह़ालां कि मह्ज़ किसी की शोहरत व मक़्बूलिय्यत बारगाहे इलाही में हुसूले मक़ाम व मर्तबा की दलील नहीं क्यूं कि बसा अवक़ात फ़ुस्साक़ व बद अ़क़ीदा लोगों को भी दीनी ह़वाले से शोहरत ह़ासिल हो जाती है । कभी किसी के

ज़ाहिरी हुल्ये से मु-तअस्सिर हो कर उस से बैअ़त कर ली जाती है, कभी किसी के दिये हुए ता'वीज़ या उस की दुआ़ के सबब दुन्यवी फ़वाइद ह़ासिल होने पर उसे बारगाहे इलाही में मुक़र्रब समझ लिया जाता है। बहर ह़ाल महूज़ इन बातों की बुन्याद पर किसी शख़्स को **वलिय्युल्लाह** गुमान करने और पीरो मुर्शिद बना लेने के बजाए हमें शरीअ़ते मुत़ह्हरा के बयान कर्दा मे'यार पर नज़र रखनी चाहिये। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 278 पर है : पीरी के लिये चार शर्तें हैं : क़ब्ल अज़ बैअ़त उन का लिह़ाज़ फ़र्ज़ है : **अव्वल**[1] : सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो। **दुवुम**[2] : इतना इ़ल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरिय्यात के मसाइल किताबों से निकाल सके। **सिवुम**[3] : फ़ासिक़े मो'लिन न हो। **चहारुम**[4] : उस का सिल्सिला नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 278)

चुंगल में जा फंसा

एक **20** सालह नौ जवान ने बताया कि मेरी ख़ुश नसीबी कि मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हुवा और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद बन गया, और इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से आने लगा। रोज़ाना दर्स देना और मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) में शिर्कत करना, पाबन्दी के साथ म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर करना मेरे मा'मूलात में शामिल हो गया। र-मज़ानुल मुबारक में सुन्नतों भरा इज्तिमाई ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत भी

पाई मगर हाए मेरी बद नसीबी कि मैं **अल्लाह** के एक वली से मुरीद होने के बा वुजूद त़रीक़त के उसूलों से ना वाक़िफ़ होने के बाइस इधर उधर भटक्ने का आ़दी था। काश कि ''یک دَر گیر مُحکَم گِیر'' या'नी ''एक दरवाज़ा पकड़ मज़्बूत़ी से पकड़'' पर कारबन्द रहता और सिर्फ़ अपने पीरो मुर्शिद की महब्बत और जल्वे दिल में बसाए रखता तो मैं यूं बरबाद न होता, काश ! मेरी अ़क़ीदत का महवर सिर्फ़ मेरे पीरो मुर्शिद होते, काश ! मैं अपनी अ़क़ीदत तक़्सीम न करता। मुआ़-मला कुछ यूं रहा कि मुझे जब भी किसी नाम निहाद आ़मिल या पीर के मु-तअ़ल्लिक़ इत्तिलाअ़ मिलती कि वोह क़ल्ब जारी कर देता है या इस्मे आ'ज़म जानता है तो मैं बिग़ैर सोचे समझे उस के पास पहुंच जाता, मगर हर जगह सिवाए ज़ाहिरी मुआ़-मलात के कुछ न मिलता, लेकिन क्या करता मैं अपनी आ़दत से मजबूर था, जिस का ख़म्याज़ा आख़िर कार मुझे भुगतना पड़ा।

एक दिन मेरी मुलाक़ात एक शख़्स से हुई जिस ने त़रीक़त के नाम पर कुछ बातें ऐसे सेहर अंगेज़ अन्दाज़ में बताईं कि मुझे बहुत अच्छा लगा और मेरी बद क़िस्मती कि मैं ने उस से दोस्ती कर ली। वक़्त गुज़रता रहा, एक दिन उस ने अपने एक उस्ताद से मिलवाया जिसे वोह अपना पीर कहता था। उस के उस्ताद ने मुझे पानी पर कुछ दम कर के पिलाया और अपने पास पाबन्दी से आने की ताकीद की। फिर मेरा दोस्त मुझे अक्सर अपने साथ वहां ले जाता। उस के उस्ताद ने मुझे रोज़ाना पढ़ने के लिये एक वज़ीफ़ा भी दिया और कहा कि इसे पढ़ने की वजह से तुम लोगों के दिल की पोशीदा बातें जान लोगे। मैं ने बिला

सोचे समझे उस वज़ीफ़े को अपना मा'मूल बना लिया। यूं एक अ़र्से तक वज़ाइफ़ किये और पाबन्दी से उस के पास जाता रहा मगर मेरे दिल में रूहानिय्यत बढ़ने के बजाए सख़्ती बढ़ती चली गई जिस के नतीजे में मेरा दिल गुनाहों पर दिलेर हो गया। मैं ने उसे आज तक नमाज़ पढ़ते नहीं देखा था और हैरान कुन बात येह थी कि मैं उस से बद ज़न होने के बा वुजूद उस के पास मुसल्सल जाता रहता था, न जाने मुझे क्या हो गया था ? आहिस्ता आहिस्ता मैं ने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करना छोड़ दी, आह ! फिर सर से इ़मामा शरीफ़ भी उतर गया और दाढ़ी भी मुंडवा दी, नमाज़ें पढ़ना छोड़ दीं और हर उस गुनाह में भी मुलव्वस होता चला गया जो म-दनी माहोल से वाबस्तगी से पहले भी नहीं किया करता था। आह ! मेरी ह़ालत इन्तिहाई इ़ब्रतनाक हो चुकी थी। कुछ अ़र्से तक तो मेरा वहां बहुत दिल लगा मगर फिर दिल वहां से भी उचाट होना शुरूअ़ हो गया और घबराहट त़ारी रहने लगी क्यूं कि अब वोह मुझ से ऐसी बातें करने लगा था जिन्हें सुन कर मैं कांप उठता। वोह कहता कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह**, रसूल और मुर्शिद एक ही हैं। मुर्शिद ही ख़ुदा है, नमाज़ रोज़ा सब की जगह बस तसव्वुरे मुर्शिद ही काफ़ी है। अब मैं वहां जाना नहीं चाहता था मगर मैं मजबूर था क्यूं कि वोह शख़्स मुझे धम्कियां देता कि यहां आने का रास्ता तो है जाने का कोई रास्ता नहीं है, वापसी का सिर्फ़ एक रास्ता है और वोह है मौत। मैं जब भी वहां न जाने का इरादा करता तो मेरी त़बीअ़त ख़राब होने लगती दिल घबराने लगता और मैं न चाहते हुए भी वहां पहुंच जाता। बिल

आख़िर मायूस हो कर मैं ने ख़ुदकुशी का फ़ैसला कर लिया और शायद मैं ख़ुदकुशी कर लेता मगर ख़ुश क़िस्मती से किसी त़रह़ मुझे शहज़ादए अ़त्त़ार अलह़ाज मौलाना अबू उसैद अह़मद उ़बैद रज़ा अ़त्त़ारी म-दनी مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی से मुलाक़ात की सआ़दत मिल गई। मेरी रूदाद सुन कर उन्हों ने बहुत ही शफ़्क़त फ़रमाई और बड़े प्यार से मुझे समझाया और तौबा करवाई। चूंकि शहज़ादए अ़त्त़ार वकीले अ़त्त़ार भी हैं लिहाज़ा मैं ने उन के ज़रीए़ उन के वालिदे मोह़तरम (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) से तज्दीदे बैअ़त भी की। उन्हों ने मुझे कुछ इस तरह़ के म-दनी फूल अ़त़ा फ़रमाए कि श-ज-रए अ़त्त़ारिय्या के अवराद पढ़ने का मा'मूल रखिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ैब से मदद (Help) होगी, घबराइये मत, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप एक वलिय्ये कामिल के मुरीद हैं, बस इरादत मज़्बूत़ रखिये, कोई ख़ौफ़ मत रखिये, कुफ़्रिय्यात बकने वालों के पास किसी सूरत में न जाएं, फ़राइज़ो वाजिबात की सख़्ती से पाबन्दी रखिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हि़फ़ाज़त करने वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ (ता दमे तह़रीर) तीन साल से ज़ाइद अ़र्सा हुवा कि मैं उन लोगों के पास जाना छोड़ चुका हूं और अब मैं बहुत पुर सुकून हूं, अ़र्सए दराज़ के बा'द जब मैं ने बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ की तो मेरे आंसू निकल आए। जब मैं उन ह़ालात के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ौर करता हूं तो कांप उठता हूं कि अगर मुर्शिदे कामिल की निगाह न होती तो न जाने मेरा क्या बनता ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब के ईमान की हि़फ़ाज़त फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़ुद को बा कमाल समझने वाला जल्द बाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی के एक मुरीद को येह सूझी कि अब वोह कामिल (Perfect) हो गया है। उसे हर रात ऐसा दिखाई देता कि फ़िरिश्ते उसे सुवारी पर बिठा कर जन्नत की सैर कराते और त़रह़ त़रह़ के मेवे खिलाते हैं। आप उस के पास गए तो देखा कि वोह बड़े ठाठ से बैठा है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से कैफ़िय्यत पूछी तो उस ने बड़े फ़ख़्र से अपने बुलन्द मक़ाम और जन्नत की सैर का ज़िक्र किया। आप ने फ़रमाया : आज जब "जन्नत" में जाओ तो मेवे खाने से पहले لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ पढ़ना। उस ने कहा : बहुत अच्छा। चुनान्चे ह़स्बे मा'मूल जब वोह "जन्नत" में पहुंचा तो आप का फ़रमान याद आ गया। तो उस ने لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ पढ़ा। येह अभी पढ़ा ही था कि उस ने एक चीख़ सुनी और "जन्नत" को आने वाह़िद में आंखों से ग़ाइब देखा और अपने आप को एक गन्दी जगह पर बैठे हुए पाया जहां मुर्दों की हड्डियां पड़ी हुई थीं। वोह समझ गया कि येह एक शैत़ानी जाल था जिस में वोह गिरिफ़्तार था। वोह रोते हुए अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और तौबा कर के फिर से उन की तरबिय्यत में आ गया। (کشف المحجوب، باب آدابھم فی الصحبۃ، ص ۴۷۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जल्द बाज़ी से कैसे बचें ?

जल्द बाज़ी का बार बार नुक़्सान उठाने के बा वुजूद इस से जान छुड़ाने की कोशिश न करना नादानी है इस लिये जल्द बाज़ों को चाहिये कि जल्द बाज़ी से बचने के लिये आज बल्कि अभी से इन म-दनी फूलों पर अ़मल शुरूअ़ कर दें।

(1) काम करने से पहले सोच लीजिये

जब भी कोई काम करने लगें तो थोड़ा रुक जाइये और सोचिये कि मुझे येह काम करना चाहिये या नहीं ? ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने **नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि मुझे नसीह़त फ़रमाइये, तो ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए महशर, महबूबे दावर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : काम तदबीर से इख़्तियार करो, फिर अगर उस के अन्जाम में भलाई देखो तो कर गुज़रो और अगर गुमराही का ख़ौफ़ करो तो बाज़ रहो। (شرح السنۃ للبغوی، کتاب البر والصلۃ، باب التأنی والعجلۃ، الحدیث: ۳۴۹۴، ج۶، ص۵۴۵)

या'नी जो काम करना हो पहले उस का अन्जाम सोचो फिर काम शुरूअ़ करो, अगर तुम्हें किसी काम के अन्जाम में दीनी या दुन्यावी ख़राबी नज़र आए तो काम शुरूअ़ ही न करो और अगर शुरूअ़ कर चुके हो तो बाज़ रह जाओ उसे पूरा न करो।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 626 मुलख़्ख़सन)

किसी काम का फ़ैसला कैसे करे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز ने फ़रमाया : اَلۡاُمُوۡرُ ثَلَاثَۃٌ اَمۡرٌ اِسۡتَبَانَ رُشۡدُہٗ فَاَتَّبِعۡہُ، وَاَمۡرٌ اِسۡتَبَانَ ضِدُّہٗ فَاجۡتَنِبۡہُ، وَاَمۡرٌ اَشۡکَلَ فَرُدَّہٗ اِلَی اللّٰہِ या'नी

काम तीन क़िस्म के होते हैं : (1) जिस का दुरुस्त होना बिल्कुल वाज़ेह् हो, उस काम को कर डालो (2) जिस का ग़लत़ होना यक़ीनी हो, उस काम से बचो और (3) वोह जिस का दुरुस्त या ग़लत़ होना वाज़ेह् न हो तो ऐसे काम के करने या न करने पर **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिख़ारा करो (या'नी हिदायत चाहो) ।

(بدائع السلک فی طبائع الملک، مشورۃ ذوی رأی، ج ۱ ص ۶۷)

(2) जल्द बाज़ी के नुक़्सानात पर ग़ौर कीजिये

त़बीअ़त में सुकून और ठहराव पैदा होने का एक त़रीक़ा येह भी है कि इन्सान जल्द बाज़ी की आफ़ात और नुक़्सानात पर ग़ौरो फ़िक्र करे और बे सोचे समझे जल्द बाज़ी से काम करने पर जो नदामत व मलामत होगी उसे ज़ेह्न में लाए । इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ त़बीअ़त में तवक़्क़ुफ़ व तह़म्मुल की सिफ़त पैदा होगी और उ़जलत (या'नी जल्द बाज़ी) से नजात मिल जाएगी । एक अ़-रबी शाइ़र कहता है :

قَدْ يُدْرِكُ التَّأَنِّيْ بَعْضَ حَاجَتِهٖ وَقَدْ يَكُوْنُ مَعَ الْمُسْتَعْجِلِ الزَّلَلُ

या'नी बुर्द-बार शख़्स तो अपने मक़ासिद पा लेता है मगर जल्द बाज़ अक्सर अवक़ात फिसल जाता है । (منہاج العابدین، ص ۷۵)

रूहुल बयान में है :

پَیْشِ سَگ چُوْنْ لُقْمَۂ نَانْ اَفْگَنِیْ بُوْکُنَدْ وَانْگَہ خُوْرَدْ اَے مُقْتَنِیْ
اُوْبَبِیْنِیْ بُوْکُنَدْ مَا بَا خِرَدْ ہَمْ بَبُوْئَیْمَشْ بَعَقْلْ مُنْتَقِدْ

या'नी : कुत्ते को लुक़्मा डालो तो वोह पहले उसे सूंघता है फिर खाता है

ह़ालां कि वोह नाक से बू सूंघता है जब कि हम अ़क़्ल से सोचते हैं तो हमें उस पर फ़ौक़िय्यत होनी चाहिये।

(تفسیر روح البیان، سورۃ بنی اسرائیل، تحت الآیۃ: ۱۰، ج ۵، ص ۱۳۷)

बुर्द-बार की ता'रीफ़ फ़रमाई

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए अ़ब्दुल क़ैस के सरदार से फ़रमाया कि तुझ में दो ख़स्लतें हैं जिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है बुर्द-बारी और वक़ार। (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الامر بالایمان... الخ، الحدیث: ۲۵، ص ۲۹)

क़बीले के सरदार का नाम मुन्ज़िर इब्ने आ़इज़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) था। येह लोग अपनी क़ौम के नुमायन्दा बन कर इस्लाम लाने आए थे। दूसरे लोग तो आते ही भागते हुए हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए मगर उन्हों ने अव्वलन ग़ुस्ल किया फिर उ़म्दा लिबास तब्दील किया फिर निहायत वक़ार व सुकून से मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में ह़ाज़िर हो कर नफ़्ल पढ़े फिर दुआ़ मांगी फिर हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उन की येह अदा बहुत पसन्द आई तब येह फ़रमाया : जब हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुन्ज़िर इब्ने आ़इज़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को येह बिशारत दी तो अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी सिफ़तें कस्बी हैं या रब तआ़ला की अ़त़ा की हुई ? फ़रमाया : रब तआ़ला की अ़त़ा कर्दा। तब उन्हों ने सज्दए शुक्र किया और कहा : अगर मेरी सिफ़तें कस्बी

होतीं तो क़ाबिले ज़वाल होतीं रब की अ़ता ज़ाइल नहीं होती, ख़ुदा का शुक्र है जिस ने मुझे वोह ख़स्लतें बख़्शीं हैं जिस से वोह और उस के रसूल राज़ी हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 625 मुलख़्ख़सन)

जब तुम तवक़्क़ुफ़ करोगे तो काम्याबी तुम्हारा मुक़द्दर बनेगी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है :

اِذَا تَاَنَّیْتَ اَصَبْتَ اَوْ کِدْتَّ تُصِیْبُ ،وَاِذَا اسْتَعْجَلْتَ اَخْطَاْتَ اَوْکِدْتَّ تُخْطِئُ

या'नी जब तूने तवक़्क़ुफ़ किया तो पा लिया या क़रीब है कि तू पा ले, और जब तूने जल्दी की तो ख़ता की या क़रीब है कि तू ख़ता खा जाए।

(کنزالعمال ج۲ص۴۴حدیث۵۶۷۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिंगर (गुलूकार) दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी अच्छी म-दनी सोह़बत पाने, जल्द बाज़ी की आ़दत से पीछा छुड़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, इस की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करे और सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र करे। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल आ़क़िबत की

बेहतरी के लिये बेचैन हो जाएगा, जिस के नतीजे में गुनाहों की कसरत पर नदामत होगी और तौबा की सआ़दत मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोहूश कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह लब पर दुरूदे पाक का विर्द होगा और ज़बान तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो ना'त की आ़दी बन जाएगी, ग़ुस्से की जगह नरमी, बे सब्री की जगह सब्रो तह़म्मुल, **तकब्बुर** की जगह आ़जिज़ी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा। दुन्यावी मालो दौलत के लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ। **इस्लामी बहनों** को भी चाहिये कि अपने शहर में होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करें। **आप** की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से मम्लू एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं : मलीर (बाबुल मदीना कराची) के इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 27 साल) का बयान कुछ यूं है कि मुझे बचपन में ना'तें पढ़ने का शौक़ था, आवाज़ चूंकि अच्छी थी इस लिये घरेलू फ़ंक्शन्ज़ (तक़ारीब) में कभी कभार फ़रमाइशी गाना भी गा लेता जिस पर ख़ूब ह़ौसला अफ़्ज़ाई होती। जब थोड़ा बड़ा हुवा तो गिटार (एक आलए मूसीक़ी) सीखने का शौक़ चराया, फिर मैं ने बा क़ाइ़दा गाना सीखने के लिये एकेडमी में दाख़िला लिया, कई साल तक सीखने के बा'द मैं ने गाने के मुक़ाबलों में ह़िस्सा लेना शुरूअ़ कर दिया, कई टीवी चेनल्ज़ पर भी गाया। वक़्त के साथ साथ मुझे शोहरत भी मिलती गई। फिर मुझे दुबई के बहुत बड़े शो (प्रोग्राम) में शिर्कत का

मौक़अ़ मिला, वहां से हिन्द (भारत) चला गया जहां तक़रीबन छ माह तक गाने के मुख़्तलिफ़ मुक़ाबलों में हिस्सा लिया, बड़े बड़े फ़ंक्शन्ज़ और फ़िल्मों में गाना गाया और काफ़ी नाम व माल कमाया। फिर गुलूकारों की टीम के साथ दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में गया। जब कुछ अ़र्से के लिये वत़न आया तो अहले ख़ाना और महल्ले दारों ने बड़ी पज़ीराई की जिस से नफ़्स को बड़ा मज़ा आया मगर दिल की दुन्या बे सुकून सी थी, कुछ कमी महसूस हो रही थी। नमाज़ के लिये मस्जिद में आना जाना हुवा तो वहां पर इशा की नमाज़ के बा'द होने वाले दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत में शिर्कत की सआ़दत मिली। मैं कभी कभार दर्स में बैठने लगा मगर दिलो दिमाग़ पर दूसरी मर्तबा मुल्क से बाहर जाने का ख़याल छाया हुवा था, इसी लिये दर्स में मिलने वाले म-दनी फूल मेरी ज़िन्दगी में ख़ास तब्दीली न ला सके। इस्लामी भाई मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करना शुरूअ़ करते तो मैं टाल मटोल कर के निकल जाता। एक रात सोया तो ख़्वाब में दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ की ज़ियारत हुई जो बुलन्द जगह पर खड़े मुझे अपने पास बुला रहे थे गोया कि मुझे गुनाहों की दलदल से निकलने की तरग़ीब दे रहे हों। जब सुब्ह़ उठा तो अपने अन्दाज़े ज़िन्दगी पर कुछ देर ग़ौरो फ़िक्र किया मगर फिर "वोही चाल बे ढंगी सी।" बहर ह़ाल कुछ अ़र्से बा'द मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं मर चुका हूं और मेरी लाश को ग़ुस्ल दिया जा रहा है फिर मैं ने ख़ुद को आ़लमे बरज़ख़ में पाया, जहां अंधेरा छाया हुवा था, उस वक़्त मैं ने ख़ुद को ऐसा बेबस महसूस किया कि कभी न किया होगा, अब मैं ने ख़ुद से कहा : "तुम बहुत मश्हूर होना चाहते थे, देख ली अपनी औक़ात!" सुब्ह़ जब आंख खुली तो मैं पसीने में नहाया हुवा था और मेरा बदन कांप रहा

था। ऐसा लगा कि मुझे एक मौक़अ़ और देते हुए दोबारा दुन्या में भेज दिया गया है। अब मेरे सर से गाना गाने का भूत उतर चुका था मैं ने फ़ैसला कर लिया कि अब मैं गाना नहीं गाऊंगा और अपने गुनाहों से तौबा कर ली। जब घर वालों को इस बात का पता चला तो उन्हों ने सख़्त मुज़ा-हमत की मगर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم के करम से मेरा म-दनी ज़ेहन बन चुका था लिहाज़ा मैं अपने फ़ैसले पर क़ाइम रहा। मुझे ख़्वाब में दोबारा उसी मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की ज़ियारत हुई, उन्हों ने मेरी हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। **अल्लाह** तआ़ला के इस इर्शादे मुबारक :

" وَ الَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे, और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ है (پ۲۱،العنکبوت:۶۹)" के मिस्दाक़ मुझे दा'वते इस्लामी में इस्तिक़ामत मिलती गई। मैं ने नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, अपने चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली और सब्ज़ सब्ज़ इमामे से सर सब्ज़ कर लिया। पहले मैं गानों के अश्आ़र पढ़ा करता था अब मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ होने वाली कुतुब व रसाइल का मुता-लआ़ करना मेरा मा'मूल था। एक रात कोई किताब पढ़ते पढ़ते मैं सोया तो मेरी ख़ुश नसीबी अपनी मे'राज को पहुंच गई और मुझे ख़्वाब में अपने आक़ा व मौला صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का रुख़े ज़ैबा देखना नसीब हो गया जिस पर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का जितना भी शुक्र करूं कम है। इस से मेरे दिल को बड़ी ढारस मिली। फिर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद

फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی की क़ब्रे मुबारक मुसल्सल बरसात की वजह से खुली तो उन के सह़ीह़ सलामत बदन, ताज़ा कफ़न, सब्ज़ सब्ज़ इमामे और ज़ुल्फ़ों के जल्वे देख कर मैं खुशी से झूम उठा कि दा'वते इस्लामी के वाबस्तगान पर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم का कैसा करम है । म-दनी काम करते करते कल का गुलूकार म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आज का मुबल्लिग़ व ना'त ख़्वान बन गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मुझे दा'वते इस्लामी की ज़ैली मुशा-वरत के ख़ादिम (निगरान) की हैसिय्यत से मस्जिद और बाज़ार में फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स देने, सदाए मदीना लगाने, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत करने की सआ़दत ह़ासिल है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मरते दम तक म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْکَرِیْم صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कौन से काम जल्दी करने चाहिएं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुछ काम ऐसे भी होते हैं जिन को करने में ताख़ीर नहीं करनी चाहिये, मगर जल्दी का मत़लब येह है कि उन को अन्जाम देने के लिये जल्द क़दम बढ़ाए न कि इन कामों को जल्दी जल्दी करने की कोशिश में बिगाड़ बैठे या अधूरा (Incomplete) छोड़ दे ।

आख़िरत के काम में जल्दी करनी चाहिये

ह़दीसे पाक में है : इत्मीनान हर चीज़ में हो, सिवाए आख़िरत के काम के। (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الرفق، الحدیث: ۴۸۱۰، ج ۴، ص ۳۳۵)

या'नी दुन्यावी काम में देर लगाना अच्छा है कि मुम्किन है वोह काम ख़राब और देर लगाने में उस की ख़राबी मा'लूम हो जाए और हम उस से बाज़ रहें मगर आख़िरत का काम तो अच्छा ही अच्छा है इसे मौक़अ़ (Chance) मिलते ही कर लो कि देर लगाने में शायद मौक़अ़ जाता रहे। बहुत देखा गया कि बा'ज़ को (ह़ज का) मौक़अ़ मिला न किया फिर न कर सके। रब तआ़ला फ़रमाता है : فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ भलाइयों में जल्दी करो। (پ۲، البقرۃ: ۱۴۸) शैत़ान कारे ख़ैर में देर लगवा कर आख़िर में उस से रोक देता है।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 627 मुलख़्ख़सन)

6 कामों में जल्दी ज़रूरी है

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का फ़रमान है कि अगर्चे उ़ज्लत शैत़ानी अ़मल है लेकिन छ उमूर में उ़ज्लत ज़रूरी है : (1) नमाज़ की अदाएगी में जब उस का वक़्त हो जाए। (2) मय्यित को दफ़्न करने में जब ह़ाज़िर हो। (3) जब लड़की बालिग़ हो जाए तो उस के बियाह में जल्दी की जाए। (4) क़र्ज़ को भी जल्द अदा किया जाए जब अदाएगी की त़ाक़त ह़ासिल हो। (5) जब मेहमान तशरीफ़ लाए तो उसे खाना जल्द खिलाया जाए। (6) जब गुनाहे सग़ीरा या कबीरा का इरतिकाब हो जाए तो तौबा में उ़ज्लत की जाए। (تفسیر روح البیان ج ۵ ص ۱۳۷)

किन कामों में देर नहीं करनी चाहिये ?

۞ नमाज़ के लिये उठने में देर न कीजिये ۞ नमाज़ का वक़्त आ जाने पर नमाज़ की अदाएगी में ताख़ीर न कीजिये ۞ अदाए क़र्ज़ में जल्दी कीजिये ۞ सलाम में पहल कीजिये ۞ ह़ज्जे फ़र्ज़ के लिये जाने में देर न कीजिये ۞ ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने पर ग़ुस्ल करने में जल्दी कीजिये ۞ गुनाहों से जल्द तौबा कर लीजिये ۞ नेक बनने में जल्दी कीजिये ۞ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने में देर न कीजिये ۞ औलाद जवान हो जाए तो जल्द शादी कर दीजिये ۞ मेहमान को जल्द खाना खिला दीजिये ۞ किसी की इस्लाह़ करने में देर न कीजिये ۞ जनाज़ा ह़ाज़िर हो तो नमाज़े जनाज़ा अदा करने में देर न कीजिये ۞ ह़क़ त-लफ़ी की मुआ़फ़ी मांगने में जल्दी कीजिये ۞ सवाबे जारिया कमाने में जल्दी कीजिये ।

﴾1﴿ नमाज़ के लिये उठने में देर न कीजिये

अफ़्सोस कि आज मुसल्मानों की अक्सरिय्यत नमाज़ की पाबन्दी नहीं करती और जो नमाज़ के आ़दी होते हैं उन में से भी एक ता'दाद के लिये नींद से बेदार हो कर नमाज़े फ़ज्र अदा करना बेह़द दुश्वार होता है येही वजह है कि जब उन्हें नमाज़ के लिये जगाया जाता है या दा'वते इस्लामी के किसी मुबल्लिग़ की "**सदाए मदीना**" उन के कानों तक पहुंचती है तो वोह ऊं आं कर के बिस्तर पर पड़े रहते हैं ह़त्ता कि शैत़ान उन्हें थपक कर फिर से नींद की वादी में पहुंचा देता है और مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! पहले उन की जमाअ़त छूटती है फिर नमाज़ ही क़ज़ा हो जाती है, इस लिये जूंही फ़ज्र के लिये आंख खुले हाथों हाथ

बिस्तर छोड़ देना और नमाज़ की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाना ही दानिश मन्दी है।

शैत़ान नाक पर गिरेह लगा देता है

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : जब तुम में कोई इन्सान सो जाता है तो शैत़ान उस की **गुद्दी** पर तीन गिरहें लगाता है और हर गिरेह पर फूंक मारता है कि रात लम्बी है। जब वोह बेदार हो कर **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करता है तो एक गिरेह खुल जाती है और जब वुज़ू करता है तो उस की दो गिरहें खुल जाती हैं फिर जब नमाज़ पढ़ता है तो तमाम गिरहें खुल जाती हैं। पस वोह सुब्ह़ के वक़्त हश्शाश बश्शाश होता है वरना सुब्ह़ के वक़्त बद बाति़नी और सुस्ती के साथ उठता है।

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، الحدیث:۷۷۶، ص۳۹۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ नमाज़ की अदाएगी में ताख़ीर न कीजिये

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''नमाज़ के अह़काम''** सफ़ह़ा 495 पर **शैख़े त़रीक़त** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : **''ख़बरदार !** जब भी आप के यहां नियाज़ या किसी क़िस्म की तक़्रीब हो जमाअ़त का वक़्त होते ही कोई मानेए़ शर-ई न हो तो इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ तमाम मेहमानों समेत नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद का रुख़ करें। बल्कि ऐसे अवक़ात में दा'वत ही न

रखें कि बीच में नमाज़ आए और सुस्ती के बाइस مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त फ़ौत हो जाए। दो पहर के खाने के लिये बा'द नमाज़े ज़ोहर और शाम के खाने के लिये बा'द नमाज़े इ़शा मेहमानों को बुलाने में ग़ालिबन बा जमाअ़त नमाज़ों के लिये आसानी है। मेज़बान, बावर्ची, खाना तक़्सीम करने वाले वग़ैरा सभी को चाहिये कि वक़्त हो जाए तो सारा काम छोड़ कर बा जमाअ़त नमाज़ का एहतिमाम करें। बुज़ुर्गों की ''नियाज़'' की मस्रूफ़िय्यत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ''नमाज़े बा जमाअ़त'' में कोताही बहुत बड़ी ग़-लती है।''

जमाअ़ते ऊला तर्क न कीजिये

इफ़्तार पार्टियों, दा'वतों, नियाज़ों और ना'त ख़्वानियों वग़ैरा की वजह से फ़र्ज़ नमाज़ों की मस्जिद की जमाअ़ते ऊला (या'नी पहली जमाअ़त) तर्क करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं, यहां तक कि जो लोग घर या हॉल या बंगले के कम्पाउंड वग़ैरा में तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम करते हैं और क़रीब मस्जिद मौजूद है तो उन पर वाजिब है कि पहले फ़र्ज़ रक्अ़तें जमाअ़ते ऊला के साथ मस्जिद में अदा करें। जो लोग बिला उ़ज़्रे शर-ई बा वुजूदे क़ुदरत फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में जमाअ़ते ऊला के साथ अदा नहीं करते उन को डर जाना चाहिये कि सह़ाबिये रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस को येह पसन्द हो कि कल **अल्लाह** तआ़ला से मुसल्मान हो कर मिले तो वोह इन पांच नमाज़ों (की जमाअ़त) पर वहां पाबन्दी करे जहां अज़ान दी जाती है

क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये सु-नने हुदा मश्रूअ़ कीं और येह (बा जमाअ़त नमाज़ें) भी सु-नने हुदा से हैं और अगर तुम अपने नबी की सुन्नत छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे।" (مسلم شریف،کتاب الصلوۃ،ج١،ص٢٣٢،الحدیث٦٥٤) जो लोग ख़्वाह म ख़्वाह सुस्ती की वजह से पूरी जमाअ़त ह़ासिल नहीं करते वोह तवज्जोह फ़रमाएं कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "बह़्रुर्राइक़" में है, क़ुन्निय्या में है, अगर अज़ान सुन कर दुख़ूले मस्जिद (या'नी मस्जिद में दाख़िल होने के लिये) इक़ामत का इन्तिज़ार करता रहा तो गुनहगार होगा।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 102, البحرالرائق ج١ص٤٠٢) फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ के उसी सफ़ह़े पर है "जो शख़्स अज़ान सुन कर घर में इक़ामत का इन्तिज़ार करता है उस की शहादत या'नी गवाही क़बूल नहीं।" (البحرالرائق ج١ص٤٥١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो इक़ामत तक मस्जिद में नहीं आ जाता बा'ज़ फु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلام के नज़्दीक वोह गुनहगार और मरदूदुश्शहादह या'नी गवाही के लिये ना लाइक़ है तो जो बिला उ़ज़्र घर में जमाअ़त क़ाइम करता या बिग़ैर जमाअ़त नमाज़ पढ़ता या مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ ही नहीं पढ़ता उस का क्या ह़ाल होगा !

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें पांचों नमाज़ें मस्जिद की जमाअ़ते ऊला में पहली सफ़ के अन्दर तक्बीरे ऊला के साथ अदा

करने की हमेशा सआ़दत नसीब फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

(नमाज़ के अह़काम, स. 269)

क़ज़ा नमाज़ें जल्दी अदा कर लीजिये

अह़नाफ़ के नज़्दीक अगर्चे नमाज़ की क़ज़ा में जल्दी करना वाजिब है, लेकिन बच्चों के लिये खाने पीने का इन्तिज़ाम करने की ज़िम्मादारी की वजह से इस में ताख़ीर करना जाइज़ है । चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **''बहारे शरीअ़त''** में नक़्ल फ़रमाते हैं : ''जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों अगर्चे उन का पढ़ना जल्द से जल्द वाजिब है मगर बाल बच्चों की ख़ुर्दो नोश और अपनी ज़रूरिय्यात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर भी जाइज़ है तो कारोबार भी करे और जो वक़्त फ़ुरसत का मिले उस में क़ज़ा भी पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं, क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं उ़म्र में जब पढ़ेगा बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाएगा ।'' (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 706)

मदीना : क़ज़ा नमाज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल ह़िस्सा **4** और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तालीफ़ **नमाज़ के अह़काम** के बाब **''क़ज़ा नमाज़ का त़रीक़ा''** का मुत़ा-लआ़ करें ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

3 अदाए क़र्ज़ में जल्दी कीजिये

क़र्ज़ (loan) का लैन दैन बाहमी ख़ैर ख़्वाही का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है लेकिन जब क़र्ज़ लेने वाला वक़्त पर वापस न करे या आज कल करना शुरूअ़ कर दे तो क़र्ज़ देने वाले के दिल पर क्या गुज़रती है ? येह वोही जानता है। बहर ह़ाल याद रखिये ! अगर क़र्ज़दार क़र्ज़ अदा कर सकता हो तो क़र्ज़ ख़्वाह की मरज़ी के बिग़ैर अगर एक घड़ी भर भी ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा और ज़ालिम क़रार पाएगा। ख़्वाह रोज़े की ह़ालत में हो या सो रहा हो उस के ज़िम्मे गुनाह लिखा जाता रहेगा। (गोया हर ह़ाल में गुनाह का मीटर चलता रहेगा) और हर सूरत में उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत पड़ती रहेगी। येह गुनाह तो ऐसा है कि नींद की ह़ालत में भी उस के साथ रहता है। अगर अपना सामान बेच कर क़र्ज़ अदा कर सकता है तब भी करना पड़ेगा, अगर ऐसा नहीं करेगा तो गुनहगार है। अगर क़र्ज़ के बदले ऐसी चीज़ दे जो क़र्ज़ ख़्वाह को ना पसन्द हो तब भी देने वाला गुनहगार होगा और जब तक उसे राज़ी नहीं करेगा इस ज़ुल्म के जुर्म से नजात नहीं पाएगा क्यूं कि उस का येह फे'ल कबीरा गुनाहों में से है मगर लोग इसे मा'मूली ख़याल करते हैं। (کیمیائے سعادت ج۱ ص۳۳۶)

हिम्मते मर्दां मददे ख़ुदा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی कीमियाए सआ़दत में नक़्ल करते हैं : जो शख़्स क़र्ज़ लेता है और येह निय्यत करता है कि मैं अच्छी त़रह़ अदा कर दूंगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ह़िफ़ाज़त के लिये चन्द

फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है और वोह दुआ़ करते हैं कि इस का क़र्ज़ अदा हो जाए। (انظر: اتحاف السادۃ للزبیدی ج ٦ ص ٤٠٩)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾4﴿ सलाम में पहल कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी किसी इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो सलाम में पहल कर के नेकियों की त़रफ़ जल्दी बढ़ जाने की कोशिश किया कीजिये, चन्द म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये : ﴾1﴿ **सलाम** में पहल करना **सुन्नत** है ﴾2﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है ﴾3﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **तकब्बुर** से भी बरी है। जैसा कि मेरे मक्की म-दनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले **सलाम** कहने वाला **तकब्बुर** से बरी है। (شُعَبُ الایمان ج ٦ ص ٤٣٣) ﴾4﴿ **सलाम** (में पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं (الجامع الصغیر، الحدیث ٤٨٧، ص ٣٦) ﴾5﴿ और जब आप को कोई सलाम करे तो जवाब देने में देर न कीजिये, ख़त़ में सलाम लिखा होता है उस का भी जवाब देना वाजिब है इस की दो सूरतें हैं, एक तो येह कि ज़बान से जवाब दे और दूसरा येह कि सलाम का जवाब लिख कर भेज दे लेकिन चूंकि जवाबे सलाम देना फ़ौरन वाजिब है और ख़त़ का जवाब देने में कुछ न कुछ ताख़ीर हो ही जाती है लिहाज़ा फ़ौरन ज़बान से सलाम का जवाब दे दे। आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ जब ख़त़ पढ़ा करते तो ख़त़ में जो اَلسَّلامُ عَلَیْکُم लिखा

होता, उस का जवाब ज़बान से दे कर बा'द का मज़्मून पढ़ते ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हिस्सा : 16, स. 464)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ फ़र्ज़ ह़ज के लिये जाने में देर न कीजिये

शराइत़ पूरी होने पर मुसल्मान पर उ़म्र भर में एक मर्तबा ह़ज करना फ़र्ज़ है लिहाज़ा जिस साल किसी पर ह़ज फ़र्ज़ हो जाए वोह उसी साल अदा कर ले कि उ़म्र का कुछ भरोसा नहीं, ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''ह़ज्जे फ़र्ज़ जल्द अदा करो कि क्या मा'लूम क्या पेश आए ।'' (الترغیب والترھیب ج۲ص۱۰۹ حدیث۲۶) और अबू दावूद व दारिमी की रिवायत में यूं है : ''जिस का ह़ज का इरादा हो तो जल्दी करे ।'' (سنن ابی داود ج۲ص۱۹۷ حدیث۱۷۳۲)

सदरुश्शरीअ़ह, बरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 1036 पर लिखते हैं : जब ह़ज के लिये जाने पर क़ादिर हो ह़ज फ़ौरन फ़र्ज़ हो गया या'नी उसी साल में और अब ताख़ीर गुनाह है और चन्द साल तक न किया तो फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदूद मगर जब करेगा अदा ही है क़ज़ा नहीं ।

(درمختار ج۳ص۵۲۰)

शरफ़ ह़ज का दे दे चले क़ाफ़िला फिर
मेरा काश ! सूए ह़रम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ ग़ुस्ले जनाबत करने में जल्दी कीजिये

जब जब ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जल्दी पाकी ह़ासिल करने की कोशिश करनी चाहिये अगर्चे ग़ुस्ले जनाबत में देर कर देना गुनाह नहीं अलबत्ता इतनी ताख़ीर ह़राम है कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए। चुनान्चे **बहारे शरीअ़त** में है : "जिस पर ग़ुस्ल वाजिब है वोह अगर इतनी देर कर चुका कि नमाज़ का आख़िर वक़्त आ गया तो अब फ़ौरन नहाना फ़र्ज़ है, अब ताख़ीर करेगा गुनहगार होगा।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 2, स. 325)

जनाबत की ह़ालत में सोने के अह़काम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं : **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया : क्या नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जनाबत की ह़ालत में सोते थे ? उन्हों ने बताया : "हां ! और वुज़ू फ़रमा लेते थे।" (صحیح البخاری ج۱،ص۱۱۷،حدیث۲۸۶) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने बयान किया कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **नबिय्ये मुह़तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से तज़्किरा किया : रात में कभी जनाबत हो जाती है (तो क्या किया जाए ?) **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वुज़ू कर के उ़ज़्वे ख़ास को धो कर सो जाया करो। (ایضاً ص۱۱۸ حدیث۲۹۰)

शारेह़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते

हैं : जुनुबी होने (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने) के बा'द अगर सोना चाहे तो **मुस्तहब** है कि वुज़ू करे, फ़ौरन ग़ुस्ल करना वाजिब नहीं अलबत्ता इतनी ताख़ीर न करे कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए। येही इस ह़दीस का महमल है। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से अबू दावूद व नसाई वग़ैरा में मरवी है कि फ़रमाया : उस घर में फ़िरिश्ते नहीं जाते जिस में तस्वीर या कुत्ता या जुनुबी (या'नी बे ग़ुस्ला) हो। (سُنَن اَبِی دَاوٗد، ج۱ص۱۰۹حدیث۲۲۷) इस ह़दीस से मुराद येही है कि इतनी देर तक ग़ुस्ल न करे कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए और वोह जुनुबी (या'नी बे ग़ुस्ला) रहने का आ़दी हो और येही मत़लब बुज़ुर्गों के इस इर्शाद का है कि ह़ालते जनाबत में खाने पीने से रिज़्क़ में तंगी होती है।

(नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 770, 771)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿7﴾ गुनाहों से जल्द तौबा कर लीजिये

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنۡبِ كَمَنۡ لَّا ذَنۡبَ لَهٗ'' या'नी गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जिस के ज़िम्मे कोई गुनाह न हो।'' (السنن الکبری، الحدیث:۲۰۶۱، ج۱۰، ص۲۵۹) मगर तौबा जैसे मुफ़ीद और ज़रूरी काम में भी बा'ज़ इस्लामी भाई देर करते हैं इस का एक सबब येह भी होता है कि नफ़्सो शैत़ान इस त़रह़ इन्सान का ज़ेह्न बनाते हैं कि अभी तो बड़ी उ़म्र पड़ी है बा'द में तौबा कर लेना..... या..... अभी तुम जवान हो बुढ़ापे में तौबा कर लेना..... या..... नोकरी से

रीटायर होने के बा'द तौबा कर लेना। चुनान्चे येह ''नादान'' नफ़्सो शैत़ान के मश्वरे पर अ़मल करते हुए तौबा से महरूम रहता है। ऐसे इस्लामी भाई को इस त़रह़ ग़ौर करना चाहिये कि जब मौत का आना यक़ीनी है और मुझे अपनी मौत के आने का वक़्त भी मा'लूम नहीं तो तौबा जैसी सआ़दत को कल पर मौक़ूफ़ करना नादानी नहीं तो और क्या है ? जिस गुनाह को छोड़ने पर आज मेरा नफ़्स तय्यार नहीं हो रहा कल उस की आ़दत पुख़्ता हो जाने पर मैं इस से अपना दामन किस त़रह़ बचाऊंगा ? और इस बात की भी क्या ज़मानत है कि मैं बुढ़ापे में पहुंच पाऊंगा या नोकरी से रीटायर होने तक मैं ज़िन्दा रहूंगा ? ह़दीसे पाक में है कि ''तौबा में ताख़ीर करने से बचो क्यूं कि मौत अचानक आ जाती है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب الترغیب فی التوبۃ..الخ، رقم ۱۸، ج ۴، ص ۴۸)

फिर मौत तो किसी ख़ास उ़म्र की पाबन्द नहीं है, बच्चा हो या बूढ़ा, जवान हो या उधेड़ उ़म्र येह बिला इम्तियाज़ सब को ज़िन्दगी की रौनक़ों के बीच से उठा कर क़ब्र के गढ़े में पहुंचा देती है, येह वोह है कि जब इस के आने का वक़्त आ जाए तो कोई ख़ुशी या ग़म, कोई मस्रूफ़िय्यत या किसी क़िस्म के अधूरे काम उस की राह में रुकावट नहीं बन सकते, एक दिन मुझे भी मौत आएगी और मुझे ज़ेरे ज़मीन दफ़्न होना पड़ेगा, अगर मैं बिग़ैर तौबा के मर गया तो मुझे कितनी ह़सरत व नदामत का सामना करना पड़ेगा, अभी मोहलत मुयस्सर है लिहाज़ा मुझे फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾8﴿ नेक बनने में जल्दी कीजिये

बा'ज़ इस्लामी भाई बा'दे तौबा नेक बनना चाहते हैं और इस के लिये कोशां भी हो जाते हैं मगर शैत़ान उन का ज़ेह्न बनाने की कोशिश करता है कि आहिस्ता आहिस्ता नेक बनो इतनी जल्दी क्या है ! फिर उन की सुस्त रवी से फ़ाएदा उठा कर उन को दोबारा गुनाहों की अंधेर नगरी में धकेल देता है, इस लिये आहिस्ता आहिस्ता नहीं जल्दी जल्दी नेक बनने की कोशिश करनी चाहिये, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मरने से पहले अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर लो, मश्ग़ूलिय्यत से पहले नेक आ'माल में जल्दी कर लो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कसरत से याद कर के और ज़ाहिर व पोशीदा कसरत से स-दक़ा कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ से नाता़ जोड़ लो कि तुम्हें रिज़्क़ दिया जाएगा, तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम्हारी परेशानियां दूर कर दी जाएंगी और जान लो ! मेरी इस जगह, इस दिन, इस महीने और इस साल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ियामत तक के लिये तुम पर जुमुआ़ फ़र्ज़ फ़रमा दिया है लिहाज़ा जो मेरी ह़याते ज़ाहिरी में या मेरे बा'द ह़ाकिमे इस्लाम की मौजू-दगी में ख़्वाह वोह आ़दिल हो या ज़ालिम, इसे हलका जान कर या बत़ौरे इन्कार छोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के बिखरे हुए काम जम्अ़ न फ़रमाएगा और न ही उस के काम में ब-र-कत देगा, सुन लो ! जब तक वोह तौबा न करेगा उस की कोई नमाज़ है न ज़कात, न ह़ज, न रोज़ा और न ही कोई नेक अ़मल यहां तक कि तौबा करे और जो

तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।"

(سنن ابن ماجۃ، ابواب اقامۃ الصلوات، باب فی فرض الجمعۃ، الحدیث: ۱۰۸۱، ص ۲۵۴۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जल्दी जल्दी नेक बनने की कोशिश के लिये जल्दी जल्दी दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बुरी आदतों से नजात और **अच्छी निय्यतों** की आदात नसीब होंगी, आइये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की एक ज़बर दस्त म-दनी बहार सुनते हैं :

शराबी की तौबा

बाबुल मदीना (कराची) के अलाक़े खारादर के मुक़ीम इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : हमारे अलाक़े में एक इन्तिहाई **बद किरदार शख़्स** रिहाइश पज़ीर था। वोह अपनी ह़-र-कतों की वजह से बहुत **बदनाम** था, लोग उसे बहुत **समझाते** मगर उस के कानों पर जूं तक न रैंगती। दीगर बुराइयों के साथ साथ दिन रात **शराब** के नशे में बद मस्त रहा करता। उस के शबो रोज़ बह़रे गुनाह में ग़ोता ज़नी करते गुज़र रहे थे कि एक दिन किसी इस्लामी भाई ने उसे **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी। उस की ख़ुश नसीबी कि वोह इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया। जूंही इज्तिमाअ़ में शैख़े त़रीक़त, **अमीरे**

अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का **सुन्नतों भरा बयान** शुरूअ़ हुवा वोह सरापा इश्तियाक़ बन गया । जब रिक़्क़त अंगेज़ बयान की तासीर कानों के रास्ते उस के दिल में उतरी तो वहां से **नदामत के चश्मे** फूट निकले जो आंखों के रास्ते आंसूओं की सूरत में बहने लगे। **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के सबब उस पर इतनी रिक़्क़त त़ारी हुई कि बयान के ख़त्म हो जाने के बा'द भी वोह बहुत देर तक सर झुकाए ज़ारो क़ित़ार **रोता** रहा । फिर उस ने शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथ बैअ़त हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया। उस ने अपने साबिक़ा **गुनाहों से तौबा** कर के शराब को हमेशा के लिये तर्क करने का इरादा कर लिया । अचानक शराब छोड़ने की वजह से उस की **त़बीअ़त** शदीद ख़राब हो गई, किसी ने मश्वरा दिया कि शराब यक दम नहीं छोड़ी जा सकती लिहाज़ा फ़िलह़ाल थोड़ी बहुत पी लिया करो, थोड़ा सुकून मिल जाएगा फिर कम करते करते छोड़ देना, लेकिन उस ने येह ग़लत़ मश्वरा न माना शराब पीने से **साफ़ इन्कार** कर दिया और तक्लीफ़ें उठा कर शराब से **छुटकारा** पा ही लिया । पांचों **नमाज़ें** मस्जिद में जमाअ़त के साथ पढ़ने को अपना मा'मूल बना लिया और चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **दाढ़ी शरीफ़** भी सजा ली । **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल ने उस इस्लामी भाई की ज़िन्दगी बदल कर रख दी । वोह सुन्नत के मुत़ाबिक़ **सफ़ेद लिबास** में मल्बूस नज़र आते, हफ़्ते में एक दिन अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शरीक होते । दा'वते इस्लामी का **म-दनी काम** करने की ब-र-कत से उन्हें ऐसी मिलन-सारी नसीब हुई कि जो कोई उन से मिलता, उन का **गिरवीदा** हो जाता ।

एक दिन अचानक उन की त़बीअ़त ख़राब हो गई उन्हें अस्पताल में दाख़िल करवा दिया गया, कस्रते क़ै व इस्हाल (दस्त) की वजह से निढाल हो गए। उन की ह़ालत देख कर येही मह़सूस होता था कि शायद अब **सिह़्ह़त याब** न हो सकें। शाम के वक़्त अचानक बुलन्द आवाज़ से **कलिमए त़य्यिबा** لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ पढ़ा और उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से **परवाज़** कर गई। जब उन के इन्तिक़ाल की ख़बर अ़लाक़े में पहुंची तो उन से मह़ब्बत रखने वाला हर इस्लामी भाई उदास और **मग़्मूम** दिखाई देने लगा। उन के जनाज़े में कसीर इस्लामी भाई शरीक हुए। उन की नमाज़े जनाज़ा उन के पीरो मुर्शिद शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने पढ़ाई। इस्लामी भाई **मुरीद के जनाज़े पर मुर्शिद की आमद** पर फ़र्ते रश्क से अश्कबार हो गए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾9﴿ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने में देर न कीजिये

साल मुकम्मल हो जाने के बा'द एक साथ **ज़कात** दे दीजिये क्यूं कि ब तदरीज या'नी थोड़ी थोड़ी कर के देने में गुनाह लाज़िम आने के इ़लावा दीगर आफ़तें भी मुम्किन हैं। म-सलन हो सकता है कि ऐसा शख़्स ज़कात न देने का **वबाल** अपनी गरदन पर लिये दुन्या से रुख़्सत हो जाए और येह भी मुम्किन है कि आज अदाएगी का जो पुख़्ता **इरादा** है कल न रहे क्यूं कि

शैतान इन्सान में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है ।

निय्यत में फ़र्क़ आ जाता

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक क़बाए नफ़ीस बनवाई । त़हारत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए, वहां ख़याल आया कि इसे राहे ख़ुदा में दे दिया जाए, फ़ौरन ख़ादिम को आवाज़ दी, क़रीबे दीवार ह़ाज़िर हुवा । हुज़ूर ने क़बाए मुअ़ल्ला उतार कर दी कि फुलां मोह़ताज को दे आओ । जब बाहर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो ख़ादिम ने अ़र्ज़ की : "इस द-रजा **ता'जील** (या'नी जल्दी) की वजह क्या थी ?" फ़रमाया : "क्या मा'लूम था बाहर आते आते **निय्यत में फ़र्क़** आ जाता ।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 84) سُبْحٰنَ الله ! येह उन की एह़तियात़ है जो अहले तक़्वा की आग़ोश में पले और त़हारत व पाकीज़गी के दरिया में नहाए धुले हैं । **अल्लाह** तआ़ला हमें उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾10﴿ औलाद जवान हो जाए तो जल्द शादी कर दीजिये

औलाद के जवान हो जाने पर वालिदैन की ज़िम्मादारी है कि वोह उन की नेक और सालेह़ ख़ानदान में शादी कर दें । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अपने बेटों और बेटियों का

निकाह़ करो, बेटियों को सोने और चांदी से आरास्ता करो और उन्हें उ़म्दा लिबास पहनाओ और माल के ज़रीए़ उन पर एह़सान करो ताकि उन में रग़बत की जाए (या'नी उन के लिये निकाह़ के पैग़ाम आएं) ।

(کنزالعمال، کتاب النکاح، الحدیث ۴۵۴۲۴، ج۱۶، ص۱۹۱)

निकाह़ में बिला वजह ताख़ीर न की जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के हां लड़के की विलादत हो उसे चाहिये कि उस का अच्छा नाम रखे और उसे आदाब सिखाए, जब वोह बालिग़ हो जाए तो उस की शादी कर दे, अगर बालिग़ होने के बा'द निकाह़ न किया और लड़का मुब्तलाए गुनाह हुवा तो इस का गुनाह वालिद के सर होगा।"

(شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد، الحدیث ۸۶۶۶، ج۶، ص۴۰۱)

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान अपनी औलाद के निकाह़ में बिला उ़ज़्र ताख़ीर करने वालों के लिये ताज़ियानए इ़ब्रत है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम्हें कुफ़्व मिल जाए तो तुम अपनी बच्चियों का निकाह़ उन से कर दो और बच्चियों के मुआ़-मले में टाल मटोल (या'नी आज कल) मत करो।" (کنزالعمال، کتاب النکاح، الحدیث ۴۴۶۸۶، ج۱۶، ص۱۳۵)

मदीना : कुफ़्व का मा'ना येह है कि मर्द औ़रत से नसब वग़ैरा में इतना कम न हो कि उस से निकाह़ औ़रत के औलिया के लिये बाइ़से नंगो आ़र हो। किफ़ाअत सिर्फ़ मर्द की जानिब से मो'तबर है औ़रत अगर्चे कम

द-रजे की हो इस का ए'तिबार नहीं। किफ़ाअत में छ चीज़ों का ए'तिबार है : नसब, इस्लाम, पेशा, हुर्रिय्यत, दियानत, माल।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب النکاح، ج۱، ص۲۹۰،۲۹۱, व फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 11, स. 131)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾11﴿ मेहमान को जल्द खाना खिला दीजिये

मेहमान (guest) को खाना खिलाना मेज़बानी का अहम हिस्सा समझा जाता है लेकिन बा'ज़ नादान पुर तकल्लुफ़ खाना तय्यार करवाने की कोशिश में इतनी ताख़ीर कर देते हैं कि भूक से मेहमान का बुरा हाल हो जाता है, येही हाल शादियों में खाना खिलाने का है, मेहमानों को दिये गए वक़्त से तीन या चार घन्टे बा'द खाना फ़राहम करना बहुत तक्लीफ़ देह है क्यूं कि शादी में खाने की दा'वत की वजह से मेहमान अपने घर से भी खाना खा कर नहीं आ सकता, इस लिये शादी हो या घरेलू दा'वत या फिर घर आए मेहमान को खाना पेश करने का मुआ-मला ! बिला वजह ताख़ीर नहीं करनी चाहिये।

मुझे सालन की ख़ुश्बू पसन्द है

एक इत्र फ़रोश के घर दो पहर के वक़्त दो मेहमान आ गए। वोह काफ़ी देर उन से इधर उधर की बातें करता रहा मगर खाना पेश करने की त़रफ़ कोई तवज्जोह नहीं की। भूक के मारे मेहमानों का बुरा हाल था। आख़िरश बातों बातों में इत्र फ़रोश ने जब एक मेहमान से पूछा कि आप को कौन सी ख़ुश्बू पसन्द है ? तो उस ने जवाब में कहा : सालन की ख़ुश्बू। येह सुन कर इत्र फ़रोश की हंसी छूट गई, चुनान्चे उस ने जल्दी से उन को खाना पेश कर दिया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾12﴿ किसी की इस्लाह़ करने में देर न कीजिये

किसी को बुराई में मुब्तला देख कर अह़सन अन्दाज़ में नरमी और शफ़्क़त के साथ उस की इस्लाह़ में देर न कीजिये क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात इस्लाह़ न करने के नताइज बड़े भयानक होते हैं, एक ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये :

कान नोच डाला

एक मर्तबा एक मुजरिम को तख़्तए दार पर लटकाया जाने वाला था। जब उस से उस की आख़िरी ख़्वाहिश पूछी गई तो उस ने कहा कि मैं अपनी मां से मिलना चाहता हूं। उस की येह ख़्वाहिश पूरी कर दी गई। जब मां उस के सामने आई तो वोह अपनी मां के क़रीब गया और देखते ही देखते उस का कान नोच डाला। वहां पर मौजूद लोगों ने उसे सर-ज़निश (या'नी तम्बीह) की, कि ना मा'क़ूल अभी जब कि तू फांसी की सज़ा पाने वाला है तूने येह क्या ह़-र-कत की है ? उस ने जवाब दिया कि मुझे फांसी के इस तख़्ते तक पहुंचाने वाली येही मेरी मां है क्यूं कि मैं बचपन में किसी के कुछ पैसे चुरा कर लाया था तो इस ने मुझे डांटने के बजाए मेरी ह़ौसला अफ़्ज़ाई की तो मैं समझा कि येह अच्छा काम है और यूं मैं जराइम की दुन्या में आगे बढ़ता चला गया और अन्जामे कार आज मुझे फांसी दे दी जाएगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿ नमाज़े जनाज़ा अदा करने में देर न कीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना **हुसैन बिन वह़्वह़** अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **बेचैन** दिलों के चैन, रह़मते

दारैन, ताजदारे ह़-रमैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''عَجِّلُوْا فَاِنَّهٗ لَا يَنْبَغِيْ لِجِيْفَةِ مُسْلِمٍ اَنْ تُحْبَسَ بَيْنَ ظَهْرَانَيْ اَهْلِهٖ'' जल्दी करो कि मुसल्मान के जनाज़े को रोकना न चाहिये कि मुसल्मान की लाश उस के घर में पड़ी रहे।''

(سنن ابی داود، کتاب الجنائز، ج ۳ ص ۲۶۸، حدیث ۳۱۵۹)

जल्दी दफ़्न कर दो

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रिवायत करते हैं कि मैं ने राह़ते क़ल्बे नाशाद, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : ''اِذَا مَاتَ اَحَدُكُمْ فَلَا تَحْبِسُوْهُ وَاَسْرِعُوْا بِهٖ اِلٰى قَبْرِهٖ'' या'नी जब तुम में से कोई मर जाए तो उसे न रोको और जल्दी दफ़्न को ले जाओ।''

(المعجم الکبیر، ج ۱۲ ص ۳۴۰ حدیث ۱۳۶۱۳)

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''अगर रोज़े जुमुआ़ पेश अज़ जुमुआ़ (या'नी जुमुआ़ की नमाज़ से पहले) जनाज़ा तय्यार हो गया जमाअ़ते कसीरा के इन्तिज़ार में देर न करें पहले ही दफ़्न कर दें। इस मस्अले का बहुत लिह़ाज़ रखना चाहिये कि आज कल अ़वाम में इस के ख़िलाफ़ राइज है, जिन्हें कुछ समझ है वोह तो इसी जमाअ़ते कसीर के इन्तिज़ार में रोके रखे हैं और निरे जुह्हाल ने अपने जी से और बातें तराशी हैं, कोई कहता है : मय्यित भी जुमुआ़ की नमाज़ में शरीक हो जाए, कोई कहता है : नमाज़ के बा'द दफ़्न करेंगे तो मय्यित को हमेशा जुमुआ़ मिलता रहेगा। येह सब बे अस्ल व ख़िलाफ़े मक़्सदे शर-अ़ हैं।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 310)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾14﴿ ह़क़ त-लफ़ी की मुआ़फ़ी मांगने में जल्दी कीजिये

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 62 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले ''ज़ुल्म का अन्जाम'' के सफ़ह़ा 7 पर है : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो **मुफ़्लिस कौन है ?** सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से जिस के पास दराहिम व सामान न हों वोह मुफ़्लिस है। फ़रमाया : ''मेरी उम्मत में **मुफ़्लिस** वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आया और यूं आया कि इसे गाली दी, उस पर तोहमत लगाई, इस का माल खाया, उस का ख़ून बहाया, उसे मारा तो उस की नेकियों में से कुछ इस मज़्लूम को दे दी जाएं और कुछ उस मज़्लूम को फिर अगर इस के ज़िम्मे जो हुक़ूक़ थे उन की अदाएगी से पहले इस की नेकियां ख़त्म हो जाएं तो उन मज़्लूमों की ख़त़ाएं ले कर उस ज़ालिम पर डाल दी जाएं फिर उसे आग में फेंक दिया जाए।'' (صحیح مسلم ص ۱۳۹۴ حدیث ۲۵۸۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सब घबरा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ कर लीजिये, सच्ची तौबा कर लीजिये और ठहरिये ! बन्दों की ह़क़ त-लफ़ी के मुआ़-मले में बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सिर्फ़ तौबा करना काफ़ी नहीं, बन्दों के जो जो हुक़ूक़ पामाल किये हों वोह भी अदा करने होंगे, म-सलन माली ह़क़ है

तो उस का माल लौटाना होगा, दिल दुखाया है तो मुआ़फ़ करवाना होगा । आज तक जिस जिस का मज़ाक़ उड़ाया, बुरे अल्क़ाब से पुकारा, ता'ना ज़नी और तन्ज़ बाज़ी की, दिल आज़ार नक़्लें उतारीं, दिल दुखाने वाले अन्दाज़ में आंखें दिखाईं, घूरा, डराया, गाली दी, ग़ीबत की और उस को पता चल गया । झाड़ा, मारा, ज़लील किया, **अल ग़रज़** किसी त़रह भी बे इजाज़ते शर–ई ईज़ा का बाइ़स बने उन सब से फ़र्दन फ़र्दन मुआ़फ़ करवा लीजिये, अगर किसी फ़र्द के बारे में येह सोच कर बाज़ रहे कि मुआ़फ़ी मांगने से उस के सामने मेरी "पोज़ीशन डाउन" हो जाएगी तो ख़ुदारा ग़ौर फ़रमा लीजिये ! क़ियामत के रोज़ अगर येही फ़र्द आप की नेकियां ह़ासिल कर के अपने गुनाह आप के सर डाल देगा उस वक़्त क्या होगा ! ख़ुदा की क़सम ! सह़ीह़ मा'नों में आप की "पोज़ीशन (Position)" की धज्जियां तो उस वक़्त उड़ेंगी और आह ! कोई दोस्त बिरादर या अ़ज़ीज़ हमदर्दी करने वाला भी न मिलेगा । जल्दी कीजिये ! जल्दी कीजिये ! अपने वालिदैन के क़दमों में गिर कर, अपने अ़ज़ीज़ों के आगे हाथ जोड़ कर, अपने मा तह़तों के पाउं पकड़ कर अपने इस्लामी भाइयों और दोस्तों से गिड़गिड़ा कर, उन के आगे ख़ुद को ज़लील कर के आज दुन्या में मुआ़फ़ी मांग कर आख़िरत की इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने की सअ़्य फ़रमा लीजिये । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰہِ رَفَعَہُ اللہ** या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है । **(شُعَبُ الایمان ج۶ ص۲۷۶ حدیث۸۱۴۰)**

(ज़ुल्म का अन्जाम, स. 5 ता 25)

हमेशा हाथ भलाई के वासिते उठें
बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾15﴿ सवाबे जारिया कमाने में जल्दी कीजिये

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी में नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत, ताजदारे नुबुव्वत, शहन्शाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दो मर्तबा **जन्नत** ख़रीदी, एक मर्तबा "बीरे रूमा" (एक कूंएं का नाम) यहूदी से ख़रीद कर मुसल्मानों के पानी पीने के लिये वक़्फ़ कर के और दूसरी बार "जैशे उ़स्रत (ग़ज़्वए तबूक)" के मौक़अ़ पर। चुनान्चे सु-ननेतिरमिज़ी में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन **ख़ब्बाब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : कि मैं बारगाहे न-बवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर था और **हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम**, रसूले मोह़तरम, रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम, **नबिय्ये मुह़्तशम**, सरापा जूदो करम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को "जैशे उ़स्रत" (या'नी ग़ज़्वए तबूक) की तय्यारी के लिये तरग़ीब इर्शाद फ़रमा रहे थे। ह़ज़रते **सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उठ कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! पालान और दीगर **मु-तअ़ल्लिक़ा** सामान समेत **सो ऊंट** मेरे ज़िम्मे हैं। हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फिर तरग़ीबन फ़रमाया। तो **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

दोबारा खड़े हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं तमाम सामान समेत **दो सो ऊंट** ह़ाज़िर करने की ज़िम्मादारी लेता हूं । दो[2] जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان से फिर तरग़ीबन इर्शाद फ़रमाया तो **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं मअ़ सामान **तीन सो ऊंट** अपने ज़िम्मे क़बूल करता हूं ।

रावी फ़रमाते हैं : मैं ने देखा कि हुज़ूरे अन्वर, मदीने के ताजवर, **शाफ़ेए मह़शर, बि इज़्ने** रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर मिम्बरे मुनव्वर से नीचे तशरीफ़ ला कर दो मर्तबा फ़रमाया : "आज से **उ़स्मान** (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ) जो कुछ करे उस पर मुवा–ख़ज़ा (या'नी पूछगछ) नहीं ।"

(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۵ ص۳۹۱ حدیث ۳۷۲۰)

इमामुल अस्ख़िया ! कर दो अ़त़ा जज़्बा सख़ावत का
निकल जाए हमारे दिल से हुब्बे दौलते फ़ानी

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

950 ऊंट और 50 घोड़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल देखा गया है बा'ज़ ह़ज़रात दूसरों की देखा देखी जज़्बात में आ कर चन्दा लिखवा देते हैं मगर जब देने की बारी आती है तो उन पर भारी पड़ जाता है ह़त्ता कि बा'ज़ तो देते भी नहीं ! मगर क़ुरबान जाइये मह़बूबे मुस्त़फ़ा, **सय्यिदुल अस्ख़िया**, उ़स्माने बा ह़या رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ के जूदो सख़ा

पर कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ए'लान से बहुत ज़ियादा चन्दा पेश किया चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह तो उन का ए'लान था मगर ह़ाज़िर करने के वक़्त आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने 950 ऊंट, 50 घोड़े और 1000 अश्रफ़ियां पेश कीं। फिर बा'द में 10 हज़ार अश्रफ़ियां और पेश कीं। (मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं) ख़याल रहे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पहली बार में 100 का ए'लान किया, दूसरी बार 100 ऊंट के इ़लावा और 200 का, तीसरी बार और 300 का, (यूं) कुल 600 ऊंट (पेश करने) का ए'लान फ़रमाया। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 395)

मुझे गर मिल गया बह्रे सख़ा का एक भी क़त़रा
मेरे आगे ज़माने भर की होगी हेच सुल्त़ानी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बदतर से अ़ज़ीज़ तर बन गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी के कामों का शौक़ बढ़ाने के लिये, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **''फ़िक्रे मदीना''** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर

अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस म-दनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के हुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** सुनते हैं : **बाबुल मदीना** (कराची) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 22 साल) के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है कि मैं कम उ़म्री ही से **बुरे दोस्तों** की सोह़बत में पड़ गया। उन्हों ने मुझे अपने रंग में रंग लिया, यूं वक़्त गुज़रने के साथ साथ मेरा किरदार **बिगड़ता** चला गया। मैं अब **शराब** पीने लगा था, हेरोईन का **नशा** भी करता था। महल्ले के चन्द नौ जवान भी मेरे पास उठने बैठने की वजह से **नशे की आ़दत** में मुब्तला हो गए। चुनान्चे सारे महल्ले वाले मुझ से **बेज़ार** थे। अगर महल्ले का कोई लड़का मेरे साथ होता तो उस के घर वाले आ कर मुझे **मारते,** गालियां भी देते और कहते : "**ख़बरदार !** अब मेरे बेटे या मेरे भाई को अपने साथ न रखना।" घर वाले भी मुझे बुरा भला कहते, समझाते, मगर मैं टस से मस नहीं होता था। तंग आ कर उन्हों ने मुझे घर से **निकाल** दिया कि इस को कुछ तो अपनी **ग़-लती** का एह़सास हो मगर मुझे अपनी ग़-लती का एह़सास क्यूंकर हो सकता था ? मेरे दिलो दिमाग़ पर तो **नशे का सुरूर** छाया हुवा था। आख़िर कार मेरी ह़ालत ऐसी हो गई कि मैं ठीक से चल भी नहीं सकता था। **फ़िक्रे आख़िरत** तो दूर की बात, मुझे तो दुन्या की फ़िक्र भी नहीं रही थी। अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ की ना

फ़रमानी करते करते शायद मैं नशे की हालत में इस दुन्या से रुख़्सत हो जाता मगर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और **दा'वते इस्लामी** पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों का नुज़ूल हो कि इन्हों ने मुझे **तबाही के गढ़े** से निकाल कर **जन्नत में ले जाने वाले** रास्ते पर गामज़न कर दिया। **हुवा** यूं कि एक रोज़ मैं लड़-खड़ाता हुवा कहीं जा रहा था कि किसी ने बड़ी **नरमी** से मेरा हाथ पकड़ कर मुझे रोका। मैं ने ब मुश्किल निगाह उठा कर देखा तो येह बड़ी उ़म्र के एक **बा रीश** इस्लामी भाई थे जिन्हों ने **सफ़ेद लिबास** पहना हुवा था और उन के सर पर **सब्ज़ इमामा** भी था। उन्हों ने इन्तिहाई **शफ़्क़त** से मेरी ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की। मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार ऐसी **अपनाइयत** पाई तो बड़ा अच्छा लगा। मुख़्तसर सी गुफ़्त-गू के बा'द येह इस्लामी भाई मुझे अपने साथ ले गए और नाश्ता कराया। ऐसा **महब्बत** भरा बरताव तो मेरे साथ कभी घर वालों ने भी नहीं किया था। उन की शफ़्क़तें देख कर सब्ज़ इमामे वालों की **महब्बत** मेरे दिल में घर करने लगी। उस इस्लामी भाई ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतों के बारे में बताया और मुझे **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने की तरग़ीब दिलाई। मैं पहले ही मु-तअस्सिर हो चुका था लिहाज़ा मैं ने हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की निय्यत की। फिर मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र भी किया। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान **शु-रकाए क़ाफ़िला** के हुस्ने अख़्लाक़ और शफ़्क़तों की बारिश ने मेरे दिल की गन्दगी को धो कर उजला उजला कर दिया। उन की महब्बतें देख कर मेरी आंखें भीग जातीं

कि मैं वोह **बुरा बन्दा** हूं जिसे अपने घर वाले भी क़बूल करने को तय्यार नहीं। मैं ने इन ख़यालात का इज़्हार जब एक इस्लामी भाई से किया तो उन्हों ने येह कहते हुए मुझे अपने सीने से लगा लिया कि जिस को दुन्या बुरा भला कहती है **दा'वते इस्लामी** वाले اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी अपने सीने से लगा लेते हैं। महब्बत के मज़ीद जाम पीने के लिये मैं वहीं से 12 दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गया। जब मैं म-दनी क़ाफ़िले से वापस आया तो मेरे सर पर **सब्ज़ इमामा** था और जिस्म पर साफ़ सुथरा सुन्नत के मुताबिक़ **सफ़ेद लिबास** था और चेहरे पर **दाढ़ी शरीफ़** नुमूदार हो चुकी थी। महल्ले वाले मुझे इस **म-दनी हुल्ये** में देख कर हैरान रह गई कि येह वोही लड़का है जिस से पूरा महल्ला बेज़ार था। मैं अपने गुनाहों से **तौबा** कर के वापस आया था लिहाज़ा अहले महल्ला और घर वालों ने भी मुझे **क़बूल** कर लिया। म-दनी माहोल की मुझे ऐसी **ब-र-कतें** नसीब हुईं कि कल जो मुझे **मुंह लगाने** को तय्यार न थे और अपने बच्चों को मेरे पास बैठने से रोकते थे आज वोही लोग अपनी औलाद को मेरी (या'नी एक दा'वते इस्लामी वाले की) सोहबत में रहने की **ताकीद** करते हैं। **दा'वते इस्लामी** ने मुझे गोया नई ज़िन्दगी अ़ता की है चुनान्चे मैं ने दा'वते इस्लामी के **म-दनी कामों** को अपना ओढ़ना बिछोना बना लिया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मरते दम तक **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इसी माहोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
अंधेरा ही अंधेरा था उजाला कर दिया देखो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ماٰخذ و مراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	کنزالایمان ترجمۂ قرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
2	التفسیر الکبیر	امام محمد بن عمر فخر الدین رازی	داراحیاء التراث العربی بیروت
3	تفسیر بیضاوی	امام عبد اللّٰہ ابو عمر بن محمد الشیرازی	دار الفکر بیروت
4	تفسیر مدارک التنزیل	امام عبد اللّٰہ بن احمد النسفی	دار المعرفۃ بیروت
5	تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی	کوئٹہ
6	تفسیر الکمالین	الشیخ سلام اللّٰہ الدھلوی	لکھنوٴ، ھند
7	تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل سید محمد نعیم الدین مراد آبادی	مکتبۃ المدینۃ باب المدینہ
8	صحیح البخاری	امام ابوعبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
9	صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن الحجاج القشیری	دار ابن حزم بیروت
10	سنن الترمذی	امام ابو عیسٰی محمد بن عیسٰی ترمذی	دار الفکر بیروت
11	سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمن بن احمد شعیب نسائی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
12	سنن ابی داوٗد	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی	دار احیاء التراث العربی بیروت
13	سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن یزید ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت
14	الموطأ	امام مالک بن انس	دار المعرفۃ بیروت
15	الادب المفرد	امام ابوعبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری	طشقند
16	المستدرک	امام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم النیشاپوری	دار المعرفۃ بیروت
17	السنن الکبریٰ	امام ابو بکر احمد بن حسین البیھقی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
18	المسند	امام احمد بن حنبل	دار الفکر بیروت
19	المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد الطبرانی	داراحیاء التراث العربی بیروت
20	المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد الطبرانی	دار الفکر بیروت
21	الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر السیوطی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
22	الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
23	شرح السنۃ	امام ابو محمد حسین بن مسعود البغوی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
24	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیھقی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
25	کنز العمال	امام علی بن حسام الدین الھندی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
26	نزھۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی	برکاتی پبلشرز کراچی
27	مرقاۃ المفاتیح	علامہ علی بن سلطان القاری	دار الفکر بیروت
28	مراۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاھور

30	رد المحتار	علامه سید محمد امین ابن عابدین شامی	دار المعرفة بیروت
31	البحرالرائق	علامه محمد بن حسین القادری الحنفی	کوئٹه
32	الفتاوی الهندیة	ملا نظام الدین وعلمائے هند	دار الفکر بیروت
33	الفتاوی الحدیثیة	علامه احمد بن علی الهیتمی الشافعی	داراحیاء التراث العربی بیروت
34	حاشية الطحطاوي	علامه سید احمد الطحطاوی الحنفی	کوئٹه
35	فتاویٰ رضویة(مخرجه)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان	رضا فاؤنڈیشن لاهور
36	فتاوی افریقه	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان	نوری کتب خانه لاهور
37	بہارِ شریعت	علامه مفتی محمد امجد علی اعظمی	مکتبة المدینه باب المدینه
38	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	شهزادهٔ اعلیٰ حضرت محمد مصطفی رضا خان	مکتبة المدینه باب المدینه
39	نماز کے احکام	امیر اهلسنت حضرت علامه محمد الیاس عطارقادری مدظله العالی	مکتبة المدینه باب المدینه
40	رفیق الحرمین	امیر اهلسنت حضرت علامه محمد الیاس عطارقادری مدظله العالی	مکتبة المدینه باب المدینه
41	نماز میں لقمه دینے کے مسائل	مولانا علی اصغر العطاری المدنی	مکتبة المدینه باب المدینه
42	فضل الصلاة علی النبی	القاضی الجهضمی	المکتبة الشاملة
43	کشف المحجوب	علامه علی بن عثمان(المعرووف داتا گنج بخش)	مرکز الاولیاء لاهور
44	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی	دار صادر بیروت
45	اتحاف السادة المتقین	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی	دارالکتب العلمیة بیروت
46	کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی	تهران ،ایران
47	منهاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد الشافعی الغزالی	دارالکتب العلمیة بیروت
48	آداب الشرعیة	محمد بن مفلح حنبلی	المکتبة الشاملة
49	الزواجرعن اقتراف الکبائر	علامه احمد بن محمد المکی الهیتمی	دار المعرفة بیروت
50	تنبیه الغافلین	امام ابو اللیث نصر بن محمد السمرقندی	پشاور
51	بحر الدموع	علامه ابو الفرج عبد الرحمٰن علی الجوزی	دار الفجر دمشق
52	گلستان سعدی	مصلح الدین سعدی شیرازی	ایران
53	تعلیم المتعلم	امام برهان الاسلام زرنوجی	مکتبة المدینه باب المدینه
54	فضائلِ دعا	مصنف:رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان شارح:اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان	مکتبة المدینه باب المدینه
55	فیضان سنت(جلد اول)	امیر اهلسنت حضرت علامه محمد الیاس عطارقادری مدظله العالی	مکتبة المدینه باب المدینه
56	ابلق گھوڑے سوار	امیر اهلسنت حضرت علامه محمد الیاس عطارقادری مدظله العالی	مکتبة المدینه باب المدینه
57	ظلم کا انجام	امیر اهلسنت حضرت علامه محمد الیاس عطارقادری مدظله العالی	مکتبة المدینه باب المدینه
58	علم وحکمت کے 125مدنی پھول	المدینة العلمیة	مکتبة المدینه باب المدینه

59	جامع بیان العلم وفضله	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللّٰہ القرطبی	دارالکتب العلمیة بیروت
60	نصاب التجوید	المدینة العلمیة	مکتبة المدینه باب المدینه
61	تدریب الراوی فی شرح تقریب النووی	امام جلال الدین عبدالرحمٰن بن ابی بکر سیوطی	دار الفکر بیروت
62	الطبقات الکبری	علامه عبد الوهاب بن احمد الشعرانی	دار الفکر بیروت
63	المدخل	علامه ابوعبدالله محمد بن محمدالعبدری المالکی	المکتبة العصریة
64	وفیات الاعیان	علامه احمد بن محمد	دارالکتب العلمیة بیروت
65	سیرت عمر بن العزیز	علامه عبدالرحمٰن بن جوزی	دارالکتب العلمیة بیروت
66	سیرت ابن عبدالحکم	علامه عبداللّٰہ بن عبدالحکم	المکتبة الوهبه
67	بدائع السلک فی طبائع الملک	ابن الازرق	المکتبة الشاملة
68	تذکرة الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار نیشاپوری	انتشارات گنجینه تهران
69	روحانی حکایات	علامه عبد المصطفٰی اعظمی	رومی پبلیکیشنز لاهور
70	حیاتِ اعلی حضرت	ملک العلماء مولانا محمد ظفر الدین بهاری	مکتبة المدینه باب المدینه
71	وسائلِ بخشش	امیر اهلسنت حضرت علامه محمد الیاس عطار قادری مدظله العالی	مکتبة المدینه باب المدینه

म-दनी फूलों का गुलदस्ता

❁ हमारी सारी तवज्जोह दुन्या बेहतर बनाने के लिये हुसूले माल पर मरकूज़ होती है मगर हमारी सारी तरजीहात उस वक़्त धरी की धरी रह जाती हैं जब हम तंगो तारीक क़ब्र में जा सोते हैं।

❁ हम माल ख़र्च करने से पहले कम अज़ कम एक बार ज़रूर सोचते हैं हालां कि माल दोबारा मिल जाता है लेकिन वक़्त सर्फ़ करते हुए एक बार भी नहीं सोचते हालां कि येह दोबारा नहीं मिलता।

❁ अमल की इमारत इल्म की बुन्याद पर ता'मीर होती है, इल्म जितना मज़्बूत होगा अमल की इमारत भी उतनी ही पाऐदार बनेगी।